અમારે આંગણે થયેલ

ભવ્ય પ્રભાવના તેમજ સાધના

વિ. સં. ૨૦૧૪ ના અષાડ સુદ ૧૧ ના શ્રી ચંદ્રપ્રભુ દહેરાસરજીના ટ્રસ્ટીઓની તેમ અમારા શ્રી સંઘની વિનંતીથી પરમપૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રી વિજયવિજ્ઞાનસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબની આજ્ઞાથી પરમપૂજ્ય આચાર્ય શ્રી વિજયકસ્તુરસૂરીશ્વરજી મહારાજના શિષ્યરત્ન શ્રી ચંદ્રોદયવિજયજી ગણી આદિ ઠાણાનો ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયા બાદ શ્રી સંઘે પૂ. ગુરુવર્યોની અમોઘ પ્રેરણાથી અભૂતપૂર્વ શાસનપ્રભાવના તેમ અભ્યંતર સાધના અત્યંત ઉત્સાહથી કરી હતી કે જેની નોંધ લેતાં અમો આજે ઘણું આનંદ અનુભવીએ છીએ.

૧ ચાતુર્માસ પ્રવેશબાદ ચાતુર્માસિક વ્યાખ્યાનનો પ્રારંભ થતાં શ્રોતાજનોથી ઉપાશ્રય ચીકાર ભરાયેલ રહેતો.

૨ વ્યાખ્યાનમાં તપ ધર્મની પ્રેરણાઓ મળતાં ચાતુર્માસિક લાભ નવકારના તપની શ્રી સિદ્ધચક્રની આરાધના ચતુર્ગતિ નિવારણ તપ, શ્રી ૪૫ આગમ તપ, શ્રી ધર્મનિધિ તપ, તેમ પ્રભુ પ્રતિષ્ઠા નિમિત્ત મહામંગલકારી અઠ્ઠમનો તપ આબાલ વૃદ્ધોએ તપની સાધના કરી હતી.

૩ ભાદરવામાં પધારેલ શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામિ ભગવંતની યાત્રા નિમિત્તે શ્રી ચંદ્રપ્રભ જીન સ્તવ મંડળના ઉપક્રમે સેંકડોની સંખ્યામાં શ્રી સંઘના ભક્તો ગયા હતા.

શ્રી ચંદ્રપ્રભુ દહેરાસરજીના બીજે માળે ગભારામાં પ્રતિષ્ઠિત કરવા નિર્ણયાનુસાર તે શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામિ આદિ પાંચ જીનબિંબોનો દિ. શ્રાવણ સુદ ૬ ના પ્રવેશ મહોત્સવ તેમ દિ. શ્રાવણ સુદ ૧૩ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ અભૂતપૂર્વરીતે

ઉજવાયો હતો આ પ્રસંગ, નિમાયેલ મહોત્સવ સમિતિ તેમ શ્રી સંઘ, શ્રી ચંદ્રદીપક સ્નાત્ર મંડળ, શ્રી ચંદ્રપ્રભુ જૈન ભક્તિમંડળ તેમજ અમારા સંઘના રાજસ્થાનવાસી ભાઈઓ તેમ કચ્છી ભાઈઓના અથાગ પરિશ્રમ અનુમોદનીય બની રહ્યો હતો

પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ નિમિત્તે દેવદ્રવ્યની રૂા ૮૦,૦૦૦ એસી હજાર જેવી વૃદ્ધિ સદર મુંબઈ માટે કેટલાએ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવમા અગ્રગણ્ય કહી શકાય

ઉપરોક્ત સારોએ પ્રસંગ પરમપૂજ્ય શાન્તમૂર્તિ આચાર્યદેવ શ્રી વિજયવિજ્ઞાનસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબ તથા પરમપૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રી વિજયકસ્તુરસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબની પરમપવિત્ર છત્રછાયામા ઉજવાયો હતો

૪ પર્વાધિરાજની આરાધના પણ ચિરસ્મરણીય રીતે થઇ હતી. ૪૫ ઉપવાસ જેવી ઉગ્ર તપશ્ચર્યાથી લઈ ૩૦-૧૬-૧૦-૮ ૭-૫-૪-૩-૨ ઉપવાસની તપશ્ચર્યા વિપુલ સંખ્યામા થઇ હતી કલ્પસૂત્ર વ્યાખ્યાનના શ્રવણ અમારા શ્રી સંઘ માટે તો પ્રથમવારના ન હોય તેવી સુંદર શૈલીથી થયા હતા

૫ શાશ્વતી ઓળીનુ આરાધન પણ ઉત્સાહ પૂર્વક થયુ હતુ ટુંકમા સારૂએ ચોમાસુ પૂ ગણિવરશ્રીના આગમનથી પ્રેરણાથી આબાલ વૃદ્ધોમા આરાધનાનો શાસન પ્રભાવનાનો કોઈ અનેરો ઉછરંગ આવ્યો હતો અને તે ઉપકારીના આવા પદપ્રધાન જેવા શાસન માન્ય ભવ્ય પ્રસંગને અમારા આગણે ઉજવવા પૂ આચાર્યદેવને વિનતી કરવા છતા અમોને એ લાભ ન મળતા પ્રસ્તુત "શ્રી પાર્શ્વવિજ્ઞાણ કહા" ની પુસ્તિકા અભ્યાસીઓને સમર્પણ કરી ઉપકારીના ઉપકારનુ યત્કિંચિત સ્મરણ બની રહે તે નિમિત્તે અમો શ્રી સંઘના ભાવુકોએ આ શ્રુત ભક્તિનો લાભ લીધો છે

ग्रन्थान्तर्गतकथाक्रमसूचि

विषय	पृष्ठ
१ ग्रन्थान्तर्गतक्रमसूचि	
२ उर्मि और अभिप्राय	
३ मगल सिलागा	२
४ फलमालस्स कहा पढमा	३
५ मुक्खस्स कहा बीआ	४
६ बुद्ध मतिणो कहा तइआ	५
७ वुड्ढाण कहा चउथी	६
८ जिणदासस्स कहा पचमी	७
९ अवियारिआएस नरिंदस्स कहा छट्ठी	२६
१० सीलवईसमत्ती कहा	२७
११ दाणमि थेर थेरीण कहा अट्ठमी	३०
१२ दाणविलबोवरि जहुट्ठिल भीमसेणाण कहा नवमी	३२
१३ किनम नेहावरि वुड्ढाण कहा दसमी	३४
१४ जोगाण सजोगे चोरस्स कहा एगारसमी	३५
१५ सयस्सअमग्घाग्नागदत्तसेट्ठिणो कहा दुवालसमी	३६
१६ गेहसूर-सुवण्णयारस्स कहा तेरसमी	३८
१७ निद्धणवणिअस्स कहा चउदसी	४४
१८ चउजामायराण कहा पण्णरसमी	४६
१९ पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा सोलसमी	५०
२० निम्मग्गनिद्धणस्स कहा सत्तरसमी	५२
२१ अमगलियपुरिसस्स कहा अट्ठारसमी	५३
२२ बुद्धीए मल्लक्दसणे कहा एगूणवीसमी	५५
२३ वम्मसवणे मिलिच्छस्स कहा वीसइमी	५५
२४ अज्जमालगस्स कहा एगवीसइमी	५६
२५ सट्टियधणदाणमि दाणसीलसेट्ठिस्स कहा	५७
२६ किवणसेट्ठिस्स कहा तेवीसइमी	५९
२७ सिप्पकलाबुद्धीए सिप्पिपुत्तस्स कहा	६०
२८ परिणाम सुहासुहकज्जम्मि वणियपुत्तस्स कहा	६२

विषय	पृष्ठ

अभिधान चिंतामणि कोश



• उर्मि और अभिप्राय •



प. पूज्य शासन-सम्राट् आचार्यदेव श्रीमद् विजय नेमिसूरीश्वरजी महाराजश्रीके पट्टधर प. पू. समयज्ञ मद परिणामि धर्ममूर्ति आचार्यदेव श्री विजय विज्ञानसूरीश्वरजी महाराजश्रीकी असीम कृपासे ही प्रस्तुत ग्रन्थ का संपादन-कार्य सरलतासे पूर्ण हुआ है।



भारत दिवाकर प. पूज्य आचार्य श्रीमद्विजय कस्तूरसूरीश्वरजी महाराजश्री, जिन्होंने सद्गुरुके अपार वात्सल्यके प्रभाव प्रोत्साहन समान गुम्फ गुर्जर टीका तैयार कर प्रस्तुत ग्रन्थको लोकभोग्य बनाकर कलिकाल सर्व हेमचन्द्राचार्यजीकी अलौकिक प्रतिभा सेवा-का अनुपम प्रतीक रूप यह ग्रन्थ जनता-जनार्दनके समक्ष प्रस्तुत किया है।



भारत सरकारके आकाशवाणी और सूचना विभागके मंत्री माननीय श्री

डॉ बी व्हीं केसकर

जिनके हाथोंसे इस ग्रंथका प्रकाशन समारोह

शुक्रवार ता ११-१०-५७ को सपन्न हुआ।



MINISTER FOR PUBLIC WORKS, BOMBAY

Sachivalaya Bombay

Camp Poona,
Gokulastami, Aug 19th.1957

That even after renouncing the world; one can serve the world that too in a commendable way is an example set by Jain-Acharya Vijay Kastoor Soorijee by compiling the book ABHIDHAN CHINTAMANI KOSH

It is not only an Unique book but Master Piece by which the Indian Literature is further enriched; and Our Great Indian Nation is greatly benefited There is no doubt that this Kosh" compiledby Shri Acharya Maharaj will go a long way and the readers will benefit by it.

We all owe so much to the Jain-Acharya for this great service he has rendered to Lit rature and the Nation.

19/8/57

(D S Desai)



MINISTER FOR EDUCATION
GOVERNMENT OF BOMBAY
Sachivalaya Bombay 1
3rd September, 1957.

I am glad that Jain-Acharya Shri Vijaya Kastoor Sooriji Maharaj as compiled two books , "SHRI PRAKRAM VIJYAN PATHMALA" and " ABHIDHAN HINTAMANI KOSH".

India is proud for its cultural heritage which has always been enriched by selfless scholars like him. The Jain Acharya has done a good thing in taking out these two books which will serve the purpose for which they are meant.

(Hitendra Desai)
Minister for Education.

(अंग्रेजीसे अनुवादित)

इस संसारमें कोष आनेके बाद भी कोई उसकी सेवा इतनी अच्छी तरहसे कर सकता है इस तथ्यको जैन-आचार्य विजयकस्तूरसूरिजी द्वारा लिखित अभिधान चिंतामणि कोष प्रमाण सिद्ध करता है।

यह केवल एक कोष ग्रंथ ही नहीं बल्कि अन्य कोटिका ग्रंथरत्न है जो भारतीय साहित्यमें अनमोल बना है और जिससे हमारे भारतको बहुमूल्य लाभ हुआ है। आचार्य महाराजका यह कोष चिरस्थायी चिरकाल जनताको लाभ पहुँचाता रहेगा।

साहित्य और देशकी आचार्यश्रीने यह जो सेवा की है उसके लिए, उनके हम कृतज्ञ हैं।

बी. एस. देसाई
उर्फ बाबासाहेब देसाई
शिक्षण विभागके मंत्री बम्बई राज्य

(अंग्रेजीसे अनुवादित)

मुझे इस बातकी खुशी है कि जैनाचार्य श्रीविजयकस्तूरसूरीश्वरजी महाराजश्रीने दो ग्रंथ श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला और अभिधान चिंतामणि कोष प्रकाशित किये हैं।

इसके समान निःस्वार्थी अध्ययनशील सज्जनोंके कारण ही भारतकी संस्कृति महान् बनी है और इसपर भारतको गर्व है। जैन आचार्योंने इन ग्रंथोंका संपादन करके इसकी उपयोगिता बढ़ाई है। इनका यह प्रयत्न बहुत ही प्रशंसनीय है।

हितेन्द्र देसाई
शिक्षा-मंत्री बम्बई राज्य

श्रीमद् हेमचंद्राचार्य विरचित महान् ग्रंथ 'अभिधान चिंतामणि कोश' के प्रति आदर व्यक्त करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। यह ग्रंथ गत आठ सौ वर्षोंका परिपाक है। शेषनाममाला लिखकर उपरोक्त ग्रंथको पूर्ण बनानेका सम्मान श्रीमद् हेमचंद्राचार्यको मिल चुका है। अभिधान चिंतामणि कोश अमरकोशकी तरह एक अमर ग्रंथ है। केवल जैन ही नहीं, बल्कि अन्य धर्मी भी इस ग्रंथका अध्ययन कर सकते हैं। ज्ञानदीपक जैसे इस कोश तथा इसके रचयिताकी विद्वत्ताके सामने हमें अपना सिर आदरसे नँवाना चाहिए। मैं इस कोशके प्रकाशनके लिये प्रकाशकका अभिनन्दन करता हूँ।

यद्यपि ऐसे उच्च साहित्यक ग्रन्थोंका प्रकाशन हमारी सरकारको ही करना चाहिये था, परंतु ऐसे दिन अभी दूर हैं, और मुझे आशा है कि वे दिन बहुत ही जल्द आयेंगे। इस बीचके समयमें हम प्रकाशकोंके ऋणी हैं, जिन्होंने इस अमूल्य कोशका पुनर्मुद्रण किया।

यह कोश सिर्फ गुजराती या जैनोंके लिये ही नहीं, बल्कि सारे देशके लिये एक अमूल्य देन है। अपनी उच्च हृदयशील संस्कृत भाषाका रक्षण हमारा परम कर्तव्य है। ऐसे ग्रंथ हमें सुवर्ण भूतकालकी याद दिलाते हैं, और सद्ग्रंथोंके पठन और मनन करनेकी प्रेरणा देते हैं।

प्रकाशकोंसे मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि वे इस विवेचनको देवनागरीमें छापें, जिससे भारतकी सारी जनता उसे समझ सके।

टी आर देवगिरीकर
एम् पी
प्रदेशाध्यक्ष, महाराष्ट्र कॉंग्रेस

४।१०।५७

श्रीहेमचन्द्राचार्य एक उत्तम भारत वर्षमें सुप्रसिद्ध पंडित थे। उनकी कीर्ति संसारमें आज दिन तक गूंजती है। अभिधान चिंतामणि कोश आपका रचा हुआ एक बहुउपयोगी कोश है। यह तो पहिले कई बार मुद्रित होकर भी अलभ्य हुआसा है। श्री विजयकस्तूरसूरिजीने इस कोश पर गुजराती भाषामें एक व्युत्पत्ति सहित सुगम टीका लिखी है। उस टीकापर यह कोश प्रकाशित किया है। साथ-साथ शेषनाममाला शिलोंछ देश्यर्थ परिहार नामवाला एकार्थ प्रकाश एकाक्षर नाममाला और एकाक्षर कोश रचना पूर्वक शामिल भी जोड़ दिया है। यह पाठकोंके बड़ा काम है। इसे प्रकाशनकी उपयुक्तता और भी बढ़ाई गई है। क्योंकि कोशके शिलोंछ शौरसेनके [illegible] दिया हुआ श्री विजयकस्तूरसूरिजी महाराज साहबने टीका गुजरातीमें जोडा है और एक संस्कृत शब्दानुक्रमणिका और गुजराती शब्दानुक्रमणिका (श्लोकस्थ शब्दोंकी अकारादि गुजराती सूची) परिशिष्टके साथ सिद्ध कर प्रकाशित की है। इतनी सामग्री देकर कोशमें बहुत सुंदर परिष्कार किया है। [illegible] सम्पादकीय प्रस्तावना भी संपादकोंके अथाह परिश्रमकी साक्षी है। मुद्रण तो निर्दोषताप्रधान सर्वमान्य और आकर्षक है। यह कोश न केवल जैनियोंके लिये बल्कि संस्कृत जाननेवाले सर्व अभ्यासियोंके लिये एक महत्त्वपूर्ण साधन है। इस सर्व प्रसिद्ध कोशमें सुगम व्युत्पत्ति जोडने और टीकाकारके साथ सुंदर संपादन और मुद्रण करके एक अपूर्व सामग्री पेश की गई है। इस सेवाके कारण आचार्य श्री विजयकस्तूरसूरि प्रभृति सज्जन धन्यवादके पात्र हैं।

कार्तिक चतुर्दशी १८०९ } महामहोपाध्याय दत्तो वामन पोतदार
[illegible] पुणे.

(मराठीमें अनुवादित)

कलिकालसर्वज्ञ श्रीमद् हेमचद्राचार्य द्वारा विरचित अभिधानचिंतामणि कोश आचार्य श्री विजयकस्तुरसूरिजीने अनुवादित कर सपादित किया है। कोशका उचित ढगसे सपादन करते हुए गुजराती भाषामें 'चद्रोदया' नामक टीका भी दी है।

कोशका संपादन करनेमें कडी मेहनत उठाई है, जिससे कोशका उपयोग करनेवालोंको बडी सुविधा होगी। किस अर्थके कितने शब्द हैं यह अनुक्रमणिका देखकर बताया है। रेखा, विरामचिह्न, श्लोकोंकी संख्या आदि दी जानेके कारण बहुत आसानीसे कोशके अतरगका पता चल सकता है। ग्रथ लिखनेकी पद्धति शास्त्रीय तथा प्रवाहमयी है।

अभिधानचिंतामणि कोश लोकोपयोगार्थ लिखा गया है और इसके लिये सख्त परिश्रम उठाये गये हैं।

महामहोपाध्याय सिद्धेश्वरशास्त्री चित्राव

कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद् हेमचन्द्राचार्य विरचित 'अभिधान चिन्तामणिकोश' का अनुवाद तथा सपादन करके आचार्य श्री विजयकस्तुरसूरिजीने गुजराती भाषी सस्कृत जिज्ञासुओंका बडा ही उपकार किया है। सस्कृत कोशोंकी महनीय परपरामें यह कोश अपना खास स्थान रखता है। इसे सस्कृतके बन्धनसे मुक्त करके गुजराती भाषामें इसका अवतार आपने किया इसलिये आप धन्यवादके पात्र हैं। इसकी और भी एक विशेषता हैं। अमर कोशादि कोश ग्रन्थोंमें खास करके जैन धर्मावलबियोंके लिए उपयुक्त सामग्री नहीं मिलती। उस कमीकी पूर्ति आपने इस संस्करणमें करके जैन धर्मका भी बडा उपकार किया है।

गो प नेने

मन्त्री, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना २

(मराठीका अनुवादित)

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य सुविख्यात जैन पंडित और जैनाचार्य उनका संस्कृत साहित्यमें अमूल्य उनके शब्द-शास्त्रमें एकमेवाद्वितीय अभिधान चिन्तामणि कोश " जैनाचार्य श्री विजयकस्तूरसूरिजीने अपनी चन्द्रोदया नामक गुजराती टीकाके साथ प्रकाशित करनेसे उन दिन पर जैसे उपकारसे सभी साहित्यिकों और अभ्यासियोंसे उनके उपकार लेने चाहिये ।

विद्वान संस्कृतज्ञोंने अपनी गुजराती भाषामें भी हुई चन्द्रोदया टीका (भाष्य) सामान्य पाठकके लिये कोशके शब्दोंका अर्थ जाननेमें समझनेके लिये बहुत लाभकारी सिद्ध होगी। ऐसी मातृभाषामें महत्त्वपूर्ण संस्कृत, प्राकृत ग्रंथोंकी ऐसी टीका लिखी जानी चाहिये जिससे सामान्य ज्ञानवाले समझकर आसानीसे पहुँच सके ।

कोशकार चितामण गणेश कर्वे
सदस्य पूना विद्यापीठ बोर्ड

(गुजरातीका अनुवादित)

पूज्य आचार्य श्री विजयकस्तूरसूरिजीने द्वारा भाषान्तर तथा संपादन किया गया श्रीमद् हेमचन्द्राचार्यजी कृत अभिधान चिन्तामणि कोश जब तक किसीके द्वारा प्रकाशित न किये गये विशिष्टताओंसे युक्त एवं बिल्कुल आधुनिक शैलीसे तैयार किया हुआ होनेपर भी गुजराती अभ्यासी वर्ग के लिये अत्यन्त उपयोगी सुन्दर एवं सरल संपादित हुआ है । गुजरातीमें भाषा टीकाके अर्थमें दिये गये विविध शब्दार्थ एवं व्युत्पत्त्यनुसारिणी पाठक वर्ग का अत्यन्त ध्यान खींचे ऐसी होनेसे गुजराती भाषा-भाषियोंपर आचार्य महाराज द्वारा किया गया महद् उपकार ही माना जायगा । आरंभमें ही अभिधान बीजक भी कर दिये जानेसे ग्रन्थ अत्यधिक उपयोगिता एवं उपादेयतामें और भी वृद्धि हो गई है ।

सेठ देवचंद लालभाई जैन
पुस्तकोद्धार, सूरत

जीवनचंद साकरचंद झवेरी
भूतपूर्व प्रबंधक ट्रस्टी

आचार्य श्री विजय कस्तूरसूरिजी द्वारा संपादित 'अभिधान चिंतामणि कोश' अभ्यास वर्ग तथा विद्वत वर्गके लिए एक परमोपयोगी एव अनुपम प्रकाशन है। उसमें गुजराती भाषाम दिया गया विस्तृत विषय-पृथक्करण, अनुवाद तथा सपूर्ण शब्दानुक्रमणिका सपादकके श्रम एव सशोधन-वृतिकी साक्षी है। व्यवहारिक जीवनोपयोगी अनेक वस्तुओंके गुजराती अर्थ भाषाभ्यासके दृष्टिकोणसे महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करते है। ठीक वैसे ही गुजराती, हिन्दी आदि उत्तर भारतीय भाषा भगिनियोंकी शब्द निधिके ऐतिहासिक अध्ययनके लिये भी कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचद्राचार्य कृत 'कोश' अत्यत उपयोगी साधन है। नक्र (नाक), द्योतन (जोबु), अवटु (ओंड), चुलुक तदुपरात चलु (चळु), वप्ता (बाप), गल्ल (गाल), बोहित्थ वेडा (वहाण होडी), नि श्रेणी (निसरणी), बहुकरी (हिं-बुहारी), वर्धनी (बढनी), नीम (नेबु) आदि अनेकविध शब्द व्युत्पत्तिकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण है। ऐसे सदुपयोगी ग्रन्थको सुन्दर एव सरस बनाकर विद्वत् सपादकने वाकई अभ्यासियों पर अनत उपकार किये है। साथ ही गुजरातके प्राचीन ज्ञान-दान निधिसे गुजराती भाषियोंको लाभ उठानेकी अनुकूलता प्रदान की है।

डॉ हरिवल्लभ भायाणी
एम ए, पीएच डी
नियामक, गुजराती विभाग—भारतीय विद्या भवन

(अंग्रेजीसे अनुवादित)

आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरिजी द्वारा संपादित अभिधान चिंतामणि कोश एक चिरस्मरणीय ग्रंथ है। यह सोना या हीरोंसे भी कीमती समझा है और चिंतामणिकी भाँति सभीकी मनोकामनायें पूरी कर सकता है। संस्कृत तथा प्राकृतके विद्वान उनके इस कार्यके लिये हमेशा के लिये ऋणी रहेंगे। आपने इसमें शेष नाममाला, देश्यनाममाला निघंटु और महत्वकी बात है कि संस्कृत शब्दोंकी सूची देकर और भी उपकृत किया है। हेमचंद्राचार्यके समयके प्रचलित शब्दोंका संकलित इस प्रकारका दूसरा कोश हो ही नहीं सकता। इस ग्रंथका प्रकाशन डेक्कन कॉलेज पूनाके विद्वानोंको संस्कृत कोश बनानेमें ही सहायक होगा ही, साथ मराठी गुजराती हिन्दी आदि भाषाओंके लिये जो भविष्यमें रचानेके कार्यमें अंग्रेजीका स्थान लेनेवाली है उनको वर्णनात्मक शब्द बनानेके लिए सहायक होगा।

जब मैं इस ग्रंथको देखनेको उत्सुक था तब मैं संपादक महोदयके प्रयत्नोंसे अत्यन्त ही प्रभावित हुआ क्योंकि इसमें गुजराती भाषामें बड़े सुन्दर ढंगसे आलोचना की हुई है। संस्कृत साहित्यको अपनी अमूल्य कृतिसे अधिक परिपूर्ण करनेमें आपने जो श्रम उठाया है इसके लिए मैं अपना सिर झुकाता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्यमें भी आपसे इस प्रकार कार्य होता रहेगा।

एस. एम. कत्रे
प्रिन्सिपल डक्कन कॉलेज पूना
डीन फॅकल्टी ऑफ आर्ट्स पूना विद्यापीठ

(अंग्रेजीसे अनुवादित)

महापंडित श्रीमद् हेमचंद्र द्वारा लिखित 'अभिधान चिंतामणि कोश' का सुंदर ढंगसे छपा हुआ प्रकाशन देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। इससे पहले इसका प्रकाशन सन् १९४६ में देवचंद लालभाई पुस्तकोधार फंडस हुआ था। इस नूतन प्रकाशन की विशेषता यह है कि उसमें मूलके साथ गुजराती भाषामें उसका स्पष्टीकरण भी दिया गया है। इससे संस्कृत न जाननेवाले भी उसका लाभ उठा सकते हैं।

प्रस्तावनाके १ से २४ पन्नोंमें अभिधान बीजक भी दिया गया है, जिनसे ग्रंथके अंतरंगका पता आसानीसे चल सकता है। अंतमें दी हुई संस्कृत तथा गुजराती अनुसूचीसे इसकी उपयुक्तता और भी बढ गयी है।

मुझे विश्वास है कि आचार्य विजयकस्तुरसूरिजी भविष्यमें ऐसा ही कार्य करके संस्कृतका अनमोल ज्ञान सामान्य जनता तक पहुँचानेमें समर्थ होंगे।

प्रो. एच. वेलणकर
डायरेक्टर
भारतीय विद्या भवन

(गुजरातीसे अनुवादित)

प्राकृत विज्ञान पाठमाला प्राकृत भाषाके परिपूर्ण ज्ञानके अभिलाषियोंके हस्तामलकवत् सुलभ, आधुनिक शैलीसे तैयार की गई कृति मैं रही अद्भुत शक्तिकी प्रतीति-सम अनन्य कृति वह ऐसी थी इसीसे आचार्य महाराज श्री विजयकस्तूरसूरिजीकी प्रकाण्ड विद्वत्ता एवं आयोजन शक्तिके लिये मनमें अत्यंत श्रद्धा पैदा हुई थी। (यह पुस्तिका गुजरात विद्यापीठमें पाठ्य-पुस्तक होनेसे सर्वथा योग्य है।) लेकिन जब उन्हीं समर्थ विद्वान् सेवकद्वारा अनन्य ग्रन्थ अभिधान चिंतामणि कोष हैरतेद्वारा अवतरण किया गया तो उनके प्रति हृदयमें रही श्रद्धा एवं भक्ति और भी बढ़ गई। आचार्य श्री हेमचन्द्राचार्य जैसे कर्ता, कोष जैसा विषय, संस्कृत जैसी भाषा किसी सामान्य मनुष्यकी बात तो छोड़िये लेकिन सामान्य कोटिके विद्वानके लिए भी इन तीनोंका सामना करना कठिन हो जाता। लेकिन आचार्य श्री कस्तूरसूरिजीने इस कोषको उत्तम कोटिके प्रकाशन गुरु एवं सर्वांग सुंदर स्वरूप पर सजा दिया है कि सांसारिक व्याधि-उपाधियोंसे सर्वथा मुक्त जैन श्रमण भी कैसी एकाग्रतासे ज्ञानोपासना कर सकते हैं। साथ ही इस ग्रन्थको गुजराती भाषान्तरने तो सोनेमें सुगन्ध मिला दिया है।

बहाउद्दीन कॉलेज
जूनागढ

डा. विपीन झवेरी
एम. ए. पीएच. डी

आचार्यहेमचंद्रः शब्द-काव्य-नाम-लिङ्गमनुशासत् ।
न स केवल मुमुक्षु र्लोकहितेच्छुश्च सूरीश ॥ १ ॥
विजयविज्ञानसूरेः पट्टाभरण प्रशान्तसन्मूर्ते ।
सस्कृतप्राकृतज्ञ क कस्तूर न वर्णयतु ? ॥ २ ॥
चन्द्रोदयाऽभिधां योऽभिधानचिन्तामणे र्ऋजु विवृतिम् ।
हेमस्य गुर्जरोक्त्या व्यधात्सुबोधाय शब्दलिङ्गानाम् ॥३॥
स्वयमेवोपादेयोऽवश्य कोषेष्वसौ वरो ग्रन्थ ।
शब्दा य त्वाऽनुक्तास्तेऽपि गृहीता' कतीह यत्ख्याता ॥४॥
हेमे सौरभयोगो मूलाऽनुक्तनाम-लिङ्गोजितया ।
विहितोऽनया विवृत्या, किमसाध्य श्राम्यतां लोके ? ॥५॥
अत्युपयोगी तदय विनियोक्तव्यो विविक्तिभि कोष ।
राज्ये शिक्षाऽधिकृतै पठन-पाठनयो पाठशालासु ॥६॥
ददेऽभिप्रायमुक्त कृतश्रम शब्द-तर्क-काव्येषु ।
चन्द्रशेखराऽभिख्यो झोपाख्यो मैथिल सोऽहम् ॥७॥

पडित प्रवर श्री चन्द्रशेखर झा
व्याकरण- न्याय और साहित्याचार्य

अर्हँ नमः ।

नमो अब्बुयगिरिमंडण-सिरिउसह-नेमि-पास-
महावीर-जिणीसराणं ॥

नमो परमगुरुवरायरिअ–सिरि–
विजयनेमिसूरीसर–सिरिविजय-
विन्नाणसूरिवराणं ॥

पाइअविन्नाणकहा ।

*मंगल-सिलोगा—

जयउ सो महावीरो, केवलन्नाणरस्सिणा ।
मोहतमं विणासित्ता, मोक्खमग्गपयंसगो ॥१ ॥

दिंतु गोयम-सोहम्म-प्पमुहा गणिणो वरा ।
सुयसमिद्धिवरा धीरा, मज्झायं सययं सुयं ॥ २ ॥

सम्मे जिणिंदु गच्छेसा, सासणे अणुमइदीवगा ।
मज्झ सरणमेयेव, होउ नाणं पयासियं ॥ ३ ॥

विसुद्धा निम्मया वाणी, सम्पयसाविरोहिणी ।
विरायज्ज मणे निच्चं, मच्चाणं इट्ठदायणी ॥ ४ ॥

जयउज्ज नेमिसूरिंदा, आगमज्झाणपारगो ।
कम्मंकाइसुविक्खाय-सुयारविणय-सज्जसा ॥ ५ ॥

पसीएज्ज सया मज्झ, विन्नाणो सूरिणो गुरू ।
पओसरमओ जेउ सूरिणो ह मणमीओ ॥ ६ ॥

नीइ-सत्थप्पबोहट्ठं, एयज्ज पयए सुहं ।
विन्नाणस्सासेयं हं, किण्ण-अणोग-पस्सिमो ॥ ७ ॥

फलसालस्स कहा पढमा– ॥ १ ॥

पहाणो सव्वया होइ, गुणेसु विणओ जओ ।
अणेण,–फलसालेण, लद्धं चारित्तमुत्तमं ॥१॥

मगहाविसए सालिग्गामो नाम गामो । तत्थ पुप्फसालगिहवइणो पुत्तो फलसालो नाम आसि । सो पयइभद्दओ पयइविणीओ परलो-गभीरू य । एगया तेण धम्मसत्थपाढयाओ सुय 'जो उत्तमेसु विणय पउंजेइ सो जम्मंतरे उत्तमुत्तमो होइ' । तओ सो एस मम जणओ उत्तमो त्ति सव्वायरेण जणगस्स विणए पउत्तो । अन्नया गामसामिस्स विणय पउंजतो जणओ दिट्ठो । तओ जणगाओवि इमो उत्तमो त्ति जणयमापुच्छिऊण गामसामिं ओलग्गिउ पवत्तो । कयाइ तेण सद्धिं रायगिहं गओ । तत्थ गामाहिव महंतयस्स पणामाइ कुणमाण आलो-इऊण इमाओ वि एस पहाणो त्ति महंतय सेविउ पउत्तो । त पि सेणिय-नरिंदस्स विणयपरायणमवलोइऊण सेणियमोलग्गिउ आरद्धो ।

अन्नया तत्थ भगव वद्धमाणसामी समोसढो । सेणिओ सबलवाहणो वंदिउ निग्गओ । तओ फलसालो भगवत समोसरणलच्छीए सोहमाणं पासतो अइविम्हिओ जाओ । नूणमेस सव्वुत्तमो, जो एव नरिंदविंद-देविंद-दाणविंदेहिं वंदिज्जइ, ता अलमन्नेहिं । एयस्स च्चिय विणय करोमि । तओ अवसर पाविऊण खग्गखेडगकरो चलणेसु निवडिअ विन्नविउ पवत्तो— 'भयव ! अणुजाणह, अह भे ओलग्गामि' । भगवया भणिय— 'भद्द ! नाह खग्गफलगहत्थेहिं ओलग्गिज्जामि, किंतु रओहरणमुहपोत्तियाहिं, जहा एए अन्ने ओलग्गंति' । तेण भणिय —'जहा तुम्भे आणवेह, तहेवोलग्गामि' । तओ जोग्गो त्ति भगवया पव्वाविओ, सुगइ च पाविओ त्ति ॥ उवएसो—

मउडं विणयस्सेवं, नच्चा फलपरंपरं ।
कल्लाणसुहकामओ, कुणिज्ज सो पयत्तओ ॥ १ ॥
विणओवरिं एकसालस्स पढमा कहा समत्ता



मुक्खस्स कहा बीआ — ॥ २ ॥

अविमारियबीआए विणट्ठो मुक्खमाणसो ।
बाणरो, जह बालाओ, पडिओ सुविमो ठिओ ॥ २ ॥

एगो मुक्खो पविसिअ घेरम्मि मित्तं गओ तं कहेइ मम सिप्पचरिअं दंसिअव्व एसु । सा सिक्खाए दंसिउं बालाणं दीय मित्ते सद्दूणमुक्खीसि सद्दूण पुच्छइ — हे मुद्धे ! जइ एसा महिसी मरेज्जा तया अणुराओ सा कहं निमज्जेज्जा ? सा वयइ — 'जयसंपया न घेत्तव्वं ॥ सो मक्खो ठिओ । मुक्खवि पुच्छइ — आय ! तव पुत्तो अत्थि न वा ? सा कहेइ — 'ईसरे आणियस्स गओ' । सो पुच्छेइ — जइ सा तस्स मरेज्जा तया कहं निज्जाओ होज्जा ? । तया सा तस्स अवहीरिया सिप्पचरिआ तस्स वयणंमि सिसिरस्स गेहाओ निक्कासिआ । कोवि मग्गंमि तं पीडिअं पुच्छइ — 'किं हरइ ?' । सो कहए — 'बीआए रसो त्ति' । एवं बीआए अमयं विसं च पसइ । विसमईए बीआए सम्मत्त आवमाणमिओ हुज्ज ॥ उवएसो —

'सुवइं मणवत्तामं, बीआ य वसवट्टिणी ।
दुई वरा सि पायंसि तपस्सिमइमे बमा ॥ २ ॥'

बीआए अविमाणे मुक्खपडियस्स बीआ कहा समत्ता ॥ २ ॥



बुद्धमंतिणो कहा तइआ— ॥ ३ ॥

सच्चनायस्स दाउणो, मंतिणो मंति थोवया ।
जह अब्भुयनायंमि, बुद्धमंतिनिदंसण ॥ ३ ॥

एगम्म सेट्ठिवरस्स खत्तियपुत्तो लेहवाहगो अत्थि । सो दुब्बलो वि अईव निब्भओ अत्थि । एगया सिट्ठिणो लेहं गहिऊण गामंतरे गओ । अडवीए एगो सिंघो मिलिओ । तेण सह जुद्धं काऊण असिणा हणूण अग्गओ गओ । तत्थ कोवि रायसुहडो समागओ । मय सीहं दट्ठूण, मए एसो हओ त्ति जपंतो निवस्स पुरओ गओ । नरिंदो संतुट्ठो सिंघवहाओ । पारितोसिअं तस्स दिण्णं । सव्वलोएहिं सो पसंसिओ । सो खत्तियपुत्तो कज्जं काऊण पच्छा नियग्गामे आगओ । सीहवहवुत्तंतो सेट्ठिणो कहिओ । सेट्ठी वेइ—' तु असच्चपलावी असि । कहं किसंभूएण तए सिंघो हओ ' ? । तेण वुत्तं—' मए च्चिअ हओ ' इअ सच्चं कहिअ । तहा सेट्ठिणा नरिंदस्स तं पण्णविअं—' एएण खत्तियपुत्तेण सीहो हओ, न तुम्ह सुहडेण ' । निवेण सुहडो बोल्लाविओ पुच्छिअ य । सो कहेइ ' मए हओ ' । निवेण निण्णयत्थं ते दुण्णि पुरिसा बुद्धमतिस्स समप्पिआ । सो मंती निण्णयत्थं भिण्ण-भिण्णावरगे दुण्णि ठविआ । सो मंती नियदाढिआए दीहं तणं धरिऊण पुत्थयं पढंतो आसि । तंमि समए पढमं सुहडो आहूओ । सो आगओ मंतिं पढंतं दट्ठूण दाढिगाए तिणं दट्ठूण तिणस्स अवणयणत्थं हत्थं उप्पाडेइ । तया सो मंतिणा हुं हुं बोत्तूण भयं पाविओ, भयाउलो सो भग्गो । पच्छा सो खत्तियपुत्तो आहूओ । सो वि दाढिगाथिअ-तिणावणयणत्थं हत्थो उप्पाडिओ, तया सो मंती हुंकारं मुचइ । सो निब्भओ दाढिअं मुट्ठीए गिण्हइ, न मुचइ । तया मंतिणा जाणिओ एसो खत्तियउत्तो सिंघवहगो अत्थि । तं निवपुरओ ... कहिअ—' एस च्चिअ सिंघवहगो जाणियव्वो '

मं ! तेण सम्मं बुद्धं कहियं । एसो किसो वि निम्मलो बुद्धो एवं पि समयो भगवओ एवं सीलं इच्छिस्स त्ति ?। निवेण सो बुद्धो मिच्छत्तिओ मिच्छदंसिओ य। कहियव्वा सम्मत्तिओ पाउणं तस्स दिण्णं ॥

उवएसो—

सम्म-मग्गरयग्गंमि, बुद्धधम्मंसिसमस्सियं ।
सोच्चा वयणमम्मं रम्मं, अप्पह तह निव्वए ॥ १ ॥

सम्मनायपयासे बुद्धधम्मंसिओ तइयकहा समत्ता ॥ ३ ॥



बुद्धए कहा चउत्थी— ॥ ४ ॥

परिणामे समिच्छिया जहा सम्माणमणुरागा ।
अप्पा संति जए लोगा, बुद्धए एत्थ नायगे ॥ ५ ॥

एगम्मि पुर-चम्मणायरिम्मि धणयम्मसहूलं निवसमाणो सिम्मया । कम्मि गामे एगाए थेरीए गिहे सोमसम्मं धवा । सा थेरी मालवी चेस्समाइ, सोमसम्मस्स धणपालिं गिहम्मंतरे चम्मपाला-रिवं मिहाओ बाहिरं मोयावेइ, सोहूण गामओ पयह । अन्ना पुणो धण-चम्माइं सिविगम्मि जामया ते कुम्भि थेरीए पेते । सोमप्पवहरे चम्मपालाणि गिहम्मंतरे पवणाणि य मिहाओ बाहिरं य मोयावेइ। सोमभो तेहिं कम्मभेयकारणं पुच्छा पुच्छा । सा कहेइ–"पुव्वं तुम्हे धणा जम्मया तया धणपालिणो चिरं भिक्खुयं इमीए तेण अणुरूव पहुवणं मए धेर तया सोहणं, तयं पुण्णं अप्पमुत्तेण मए कम्माइ,

एव भावविसुद्धीए गेहब्भतरे सो मोयाविओ । तया चम्मधावारिणो असुद्ध चित्त, तओ सो एव चिंतइ–जइ पसुधणस्स सहारो भवेज्जा तया चम्माइ सुलहाइ, विणा मुल्लेण लब्भते । एव भावस्स अविसुद्धीए वाहिर मोयाविओ । पच्छा पुणो आगया, तया घयवाणियस्स पसुधणविणासवियारणाए सो वाहिर ठविओ, चम्मवाणियस्स पसुधणवुड्ढिवियारणाए गिहब्भतर ठविओ "। एव भावस्स विसुद्धीए अविसुद्धीए सम्माण असम्माण च नायव्व ।

उवएसो--

घयचम्मकिणंताणं, सम्माण चावमाणणं ।
जाणित्ता 'भावसुद्धीए, जत्तं कुणेज्ज सव्वया' ॥ ४ ॥
परिणाममणुलक्खिअ सम्माणाऽवमाणणोवरिं वुड्ढाए

चउत्थी कहा समत्ता ॥ ४ ॥

जिणदासस्स कहा पंचमी— ॥ ५ ॥

पावोदएण नस्सति, सपयाओ सुरक्खिआ ।
पुण्णोदएण जायति, जिणदासो नियसणं ॥ ५ ॥

अत्थि विविहजिणवराणेगचेइअवरालकिए धम्मपुरीए जिणदासो दाणसीलो सेट्ठिवरो आसि । तस्स सीलालकारविहूसिआ जिणमई धम्मपत्ती, ताण दुण्णि पुत्ता, एगो जिणदत्तो अवरो अ जिणरक्खिओ। अहिगदाणगुणरजिएण निवेण नयरसेट्ठिपय दिण्ण, तेण लोगमाणणीओ सो सजाओ । [illegible] एगया दाणगुणरजिआ लच्छी

देवी मज्झरत्तीए तस्स रसवईघरे आगम्म दोहलं कुणेइ दोहलं सोच्चा सही चिंतेइ मज्झरत्तीए को दुल्लहो दोहलो !! किंचमज्झ सङ्काविज सीसं परिसिज्झं तत्थ आगच्छइ, दोहलसरूवं पुच्छइ । सा कहइ—" तुज्झ रायमग्गंमि जम्म जाव तत्थ मेघे पुण्णउपुण्णहा सुद्देव ठिआ । जइप्पं ते पच्चं सीधे हसो इ तस गेहाओ पविसिस्सामि त्ति पेमवसा पुव्विड्ढं आगया । सेट्ठिणा वुत्तं—" पमसरिसी गयस्सा कस्स होइ ? तत्थ किं चोज्जं ! सुहेण गच्छसु तुं । तम्मीसेवी तक्खणपसत्ता पण्णइ—'इओ जम्मे पिये परिचत्तसं, तय तुं मज्झ सिणेहए सत्तेण्हं सिणेहस त्ति वीरुत्तं सुरत्तणं गया।

पच्चूसे सेट्ठी चिंतेइ— जइ कक्की सिय-इच्छाए गच्छइ तथा सिणहसत्तमेण परंपि चिंतियं, परसारयासूवि गेहाओ बाहिरं सिणहसिज्ज दोणमाइसुरिसमाणं काणं दारं पच्छो । एवं सव्वमिणं जाव जम्मे पिये निरुवो बाला तत्थ ठाणं सायंतो नयराओ बहिं संताव मईस्सापिए विवरसारे सपरिवारो गओ । तत्थ एतीय सुरसरूपमाणपमाणी भेओ कुइ । कमपुरेण मई पायमिक्खा पसाय- पसत्तरसत्तसप्पोसलेण सिणपसत्तो परिमो । सम्माउं परसूपि बके णमाइसाणि । सेट्ठी सीयरसणत्तं समाय-पुत्तसुमसेसुओ सरवमासणे णइयवि नई पासइ । तत्थ सपरसायगमसाओ सिग्घयं सुवण्णमाल- गमसमाणे मईए तरंतं देक्खइ, देसिक्खणा सिणाइस्सत्तं कोसलस्स जालिसेणे करिसइ । दिव्वपसिक्खणपाए जालिगमए कंठलंम लग्गे आगओ । कोसलगो पायडिओ बके । सो बके सिवसिरपेहरो सिसओ । नई-पवाहे अप्पोसूए सत्तसत्ता अणवरिसत्थ ते सत्त गामे- हरं सिणावय, पविक्खणा पुत्ता । तथा एवं पुत्ते सेट्ठी तेत्थ जाएवेइ, जाले य सेट्ठीणी । मणहरे सुरसीणिसाणं पुत्ताणं संपच्छामइ मसक- सिया सेट्ठीणीसहिओ जम्मओ चहिआ । एवं अंतरे अंतरे गमणा सिवसिसयाओ पुण्णूरं सिणाय त्ति ।

'वुहुक्खा-दुक्खदिया भमता विमलपुरीए वाहिर समागया। तत्थ पुरवरीए एगो धम्मदासो सत्थवाहो परिवसइ । सो कयाणगाइ गहिऊण समुद्दमग्गे वाणिज्जत्थ गओ। रयणदीव वव्वरकूलाइ भमतो वहुधणमुवज्जत्तो पच्छा सविसयसमुह समागच्छमाणो अत्थि, तया अस्स जिणदाससेट्ठिवरस्स ज धण नइप्पवाहेण पवाहिअ, त सव्व समुद्दब्भतरे समागय, त सव्वधण गुत्तरयणभरिअपट्टगसणाह तह य सो सुवण्णथालगकोत्थलगो तस्स सत्थवाहस्स सपत्त । तीए समि-द्धीए महारिद्धिवतो नियनगरे समागओ, जमि दिणे सो जिणदासो सकुडुबो नयरवाहिरे थिओ अत्थि। तद्दिणे च्चिअ तेण सत्थवाहेण सव्व गाम जेमाविउमारद्ध।

भोयणावसरे सो जिणदासो दुण्ह पुत्ताण कत्थवि चणगे लद्धूण भोयणाए अप्पेइ। तया गामवासिणीओ इत्थीओ जलत्थ गच्छतीओ त दट्ठूण कहिंति- "भो लोगा! किमत्थ चणगे खाएह?, अज्ज नयरसि सत्थवाहो सव्व गाम भुजावेइ, तुम्हे वि तत्थ चलह, साउरस च भोयण भुजह"। तेण जिणदासेण उत्त—'अम्हारिसाण पारद्धे त नत्थि, तेण इणमेव सेट्ठ'। ताओ गामे गच्चा सत्थवाह कहिंति—"तु सव्व गाम भुजावेसि, किंतु गामवाहिरे केवि परदेसवासिणो आगया, ते भोयण करिउ नागच्छति, वुभुक्खिआ एव चिट्ठति, त न वर"। त सोच्चा सत्थवाहो ताण वोल्लवणत्थ पुरिसे पेसेइ। ताणमईव अग्गहयसेण जिणदासो सकुडुवो तत्थ गओ। सत्थवाहो वि आगय त जिणदास सम्माणिअ अप्पणा सद्धि भुजावेइ।

एत्थ किं जाय तमाह-सो सत्थवाहो नियकुडुववग्गस्स परविसय-वासिणो य जिणदासस्स नियरिद्धिवित्थारदसणत्थ ताओ सुवण्णथा-लीओ भोयणत्थ कड्ढावेइ। सकुडुचजिणदासस्स भोयणत्थ थालीओ दिण्णाओ। भवियव्वयानिओगेण सा चिय खडियथाली भोयणाय

सेट्ठिस्स समागया । स दट्ठूणं चिंतियं—'एसा दासी मम न य पियं जणस्स सिणेहगाओ तयाओ निक्कासिय दासीकीरियस्सं चिंतयं । तया सोमसस्स वईयरवसपाए कम्मवसत्तस्स एगीभूय से मओ तस्स सगो । तेण वियारियं— एसा सच्चिरट्ठी महिला कयावि वइ गया तया कहेण किं ! तावि गच्छउ, तओ तेण सो न गहिओ । सोमपत्तणंतर सच्चे सड्डिया । सोवि विलासो मोत्तूण चलिओ । पच्छा धम्मसारसेट्ठिणा निमंतिओ तओ सम्मुओ दासीओ गहेह' । तेण गच्छमाए सा कंचिणवासी न दिट्ठा । सेट्ठिस्स पुत्तं सा कंचिणवासी न दीसइ । तेण वुत्तं— कस्स मोक्खाय दिन्ना ? । दासेण वुत्तं— सा निरूवस्स जम्म समागयस्स पाहुण्णस्स दिन्ना । सेट्ठिणा चिंतियं जयस्स तेण गहिया संमचेवया । तओ किंकरे पेसिऊण सव्वट्ठं ता विलासो आहूओ । आगयं विलासं भणइ— तं निरूवं मज्झं नाणगं मए मोक्खाय निमंतिओ तुमं गुणी सो आसि तं मयणांतरं सुवण्णवासी वि गहिया हेहि मम वारिं" । तेण कहियं— मए न गहिया ' सेट्ठिणा वुत्तं— तं गुणोऽसि तम्माए दिन्ना सव्वं न देवेसि गामम्मज्झे करित्ता कयाए पहरइ विलासो चिंतइ — एयपरंमुहयाए मए पच्चस्स सम्मोयणं सुत्तं तेण वि मम तम्माए संजाया । जइ सच्चं कहेमि तो गु भणइ असंमयचिय तेण सच्चमेव वरं' । तओ स मोणमेव चिट्ठइ । कंचिगवेसणेण नयणकोसो कसुमि मग्गंति । तं दट्ठूण स सेट्ठी भणइ— किं रोसकारणं ? ' । स विलासो सेट्ठी पयइ— सच्चओ कहणं चिय वरं । तं सोऊण वाई पसाविओ वईयरमाहेण पुच्छइ— सच्चं कहेसु पच्चस्स कारणं ' । तया तेण वुत्तं— दासी मए न गहिया तुम्ह पासिया गच्छइ पच्छा न पुच्छइ । चिंतियं आहूय पुट्ठं— किं दासीओ गहियाओ न वा ? । तेण वुत्तं— मए न गहिया किंतु कंचिणवासी दीसइ तेण मए कहियं एस दासी गहिया' । तओ किंकरेण

सव्वाओ गणिआओ। पत्तीमा ताओ सवायाओ परिपुण्णाओ। सेट्ठिणा चिंतिअं- निरत्थअं एसो ताडिओ। जिणदास कहइ--' सत्तव्वो मे अवराहो ?, सहसा अविआरिअं कज्जं कयं ' जिणदासेण उत्तं—' नत्थि ते दोसो, मम एव, जेण पुण्णं विणा तव गेहे भोयणाय समागओ। जइ पारद्धे मिट्ठन्नं न सिया, तया तस्स भोयणे विवरीयमेव सिया '। तओ तेण सेट्ठिणा खटिचक्कठथालीविसओ पण्हो पुट्ठो। तेण उत्तं —' खडियथाली भोयणाए मम समागया। तं दट्ठूण किं इमा मम न वा ? इअ जाणणत्थं मम समीवट्ठिओ थालीए कठखडो तत्थ दिन्नो, निभग्गययाए तत्थ च्चिअ थिरो जाओ, मए न गहिओ ' इअ सव्ववुत्ततकहणपुव्वं वएइ-'एसो रिद्धिनित्थरो मम एव' जइ तव मया होज्जा, तया सद्दावणत्थं कहेमि--' जत्थ थालीओ लद्धाओ तत्थ तव ताहिं सह अन्नं किमवि पत्तं न वा ? ' तेण सेट्ठिणा वुत्तं-- ' पभूआणि वत्थूणि ताहिं सह पत्ताइं, अन्नं च भारपट्ट-पल्लाइवहुकट्ठ-वत्थूइं च '। जिणदासेण वुत्तं 'जत्थ ताइं संति, मं तत्थ नएइ।' सो सेट्ठी तत्थ तं नएइ। तत्थ गन्तूण एगं थूलपट्टं फाडेइ। तत्थ वहूणि रयणाइं लक्खमुल्लाइं दिट्ठाणि। तया धम्मदासेण नायं ' एयाओ सव्विड्ढीओ अस्स एव'। तं वोल्लइ—' जइ तव एआओ, तया ताओ गिण्ह'। जिणदासेण उत्तं—'खीणपुण्णस्स मम सव्वा नट्ठा इड्ढी तुम्ह पासे समागया, जइ पुण्णं न सिया तया गहणेण किं ?, तीए नत्थि मे पयोजणं '। एवं वोत्तूण अग्गओ चलइ, गच्छंतं तं वएइ—'कइ रयणाइं गिण्हेहि '। सो न गिण्हेइ। तया उवगारकरणत्थं दुण्हं वालगाण भोयणाय एगगरयणभरियवरमोयगचउक्कं देइ। जिणदासो निसेहेइ, जेण भोयणे भुत्ते समाणे ताडणया सजाया, तया मोयगगहणं किं सिया ? अओ अगहणमेव वरं। सो जिणदासो न गिण्हेइ। सो वेइ अहं तुम्ह न देमि, किंतु वालगाणं भोयणाए देमि। इअ वलक्कारेण लड्डुए देइ। अणिच्छन्तो वि जिणदासो उवरोहवसेण गिण्हित्ता गामाओ-

सरीरं निव्वहइ । मम्मण-पुत्तगुणसंजुओ जिणदासो धम्मंमि निरओ । कीयदिणे जणाओ पयट्टो मम्मणपत्तसमए पगाए नईए पवाह तत्थ किं जायं तं सुणेह—

रिसहपुरीओ सेट्ठ कट्ठियारा कट्ठनिमित्तं रण्णे गया । तत्थ सेवणपुण्णेण कट्ठाइं गहणमाणा ते कट्ठियारा चिंतिंति अम्हे किं साहिस्सामो कुडुंबमवि कहं पोसिस्सामो ? इअ विचारिअ अम्ह कुडुंबपोसणेण जीवणनिव्वाहं करिस्सामो एवं चिंतयंताण तेसिं मम्म

जिणदासो मिलिओ पुट्ठं-रे तुम्ह पासे किं अत्थि ? सव्वे बोल्लेति ? अम्हे तं पयरिस्सामो । केण चिंतिअ-निम्मणस्स मम मोक्खमग्गस्स पयारा केरिसो ? तम्हा अप्पणमेव सेयं । तओ तेण सव्वे कट्ठियाराण वुत्तं-मम पासे मोक्खपत्ताणं अत्थि अन्नं किंपि न । तेहिं सव्वे मोक्खा गहीआ । जिणदासो धम्मो गच्छइ । सम्मो पच्चेइ निम्माहिओ धम्मं ठक्कुरगामे आगच्छइ । तत्थ जिणदासमोक्खाणं दट्ठूण पामठक्कुरस्साएण कहिआ तत्थ पासं करेसु पत्ता न एगम्मि कहिआ धम्म-हिंसा-चोरियाइविरुद्धववहारेण ववहरइ । अम्ह समीव गामेसु जिणधम्मं गच्छइ तया इह मम्मा पयट्टेइ । ते दुण्णि ताणम तत्थ गामे पासमए पावरस गच्छंति । एवं तम्मि कप्पयाणीयाइं निम्मियव्व गच्छंति ।

ते य कट्ठियारा सेट्ठिस्स पासाओ मोक्खपत्ताणं ववहरित्ता नयरे पत्ता । निययापाए विचारिअ पयहिं मोक्खपत्ती कहं निम्माहो बोल्लइ ? वाइ चिन्तेमि तया साहेमि । अओ बहुरयं होस्सइ तं पेच्च ह रिप्पत्ति जाव कुडुंबनिम्माओ भविस्सइ । एवं विचारिअ कट्ठविभागस्स हट्टे विक्केउं गया । कट्ठाविरन्न सारस्सुपुण्णगुणे मोक्खो दट्ठूण कप्पदुम राया मोक्खा गहिआ । कीयदिणे धम्मवासन्नेहियरे सन्नूहे कासमा पुमुक्खिया सेमया । मोक्खमयं सारसे मोक्खे गयं य, तओ

सेट्ठी कम्मकरं कन्दविअहट्टे पक्कन्नत्थं पेसेइ। सो वि तस्स च्चिय हट्टे गच्चा सरसं पक्कन्नं मग्गेइ। सो कन्दविओ रुप्पयदुगेण दुण्णि मोयगे अप्पेइ। सो किंकरो गहिऊण सेट्ठिस्स अप्पेइ। नियमोयगे दट्ठूण एगो खंडीकओ, मज्झम्मि रयणमेगं दिट्ठं। बीयं पि भग्गं, तत्थ वि एगं रयणं लद्धं। रयणदुगं पासित्ता सेट्ठिणा वियारिअं–ते च्चिय मोयगा, जे रयणजुय-मोयगा चउरो जिणदासस्स अप्पिआ, कह कन्दवियपासे समागया ?, कह दुण्णि ?, किं वा सेट्ठिणा विक्किया ?, तओ निण्णयत्थं पुणरवि किंकरं कहेइ–जावंता मोयगा कन्दविअस्स हट्टे संति, तावंते मोयगे गहिऊण समागतव्वं। किंकरो तत्थ गन्तूण कन्दवियस्स पासम्मि मग्गेइ- 'जावंता लड्डुआ सिया, तावंते सव्वे देहि, जओ सेट्ठिणो रुइया। कंदविओ कहेइ 'दुण्णि च्चिय मम पासे संति ?'। तेण गहिऊण सेट्ठिणो अप्पिआ। तम्मज्झे-हिंतो वि दुण्णि रयणाइं निग्गयाइं। सेट्ठिणा चिंतिअं– 'कंदविअस्स पासे कह एए समागया ?'। तन्निण्णयत्थं कंदविओ वोल्लाविओ पुट्ठं च। कहियं– 'मए निम्मविया'। सक्कोह पुट्ठं– 'सच्चं निवेएसु, अन्नहा दंडिस्सं'। तया सच्चमुत्तं कट्ठिहाराहिंतो गहिया। तओ सेट्ठिणा किंकरमहत्तमं पेसिअ ते कट्ठिहारा आहूया। किंचि भयं दंसिऊण पुट्ठं। तेहिं सच्चं कहिअं– 'कंपि वाणिअं लुंटिऊण गहिय'त्ति। सेट्ठिणा चिंतिअं 'तेण जिणदासेण मोयगग्गहणे निसिद्धे वि मए वलाओ दिण्णा, तेण तस्स महप्पस्स दुहट्ठाणनिमित्तगो हं जाओ'। किं करोमि ?। तम्मि विहाया रुट्ठो अत्थि, तेण दइवविवरीए अणुकूलं पि विवरीयं जायइ। अलं चिंताए। जं भावि तं सव्वस्स होही, इअ चिंतयंतो निच्चिंतो जाओ।

तस्स ठक्कुरगामे वसंतो सेट्ठी जिणदासो एगया वासासु गामंतरे गओ। सज्झाए पच्छा वलंतो मग्गे नई आगच्छइ, जलपूरभरिअन्नई

क्खरिं नयरओ राईए महुत्तरियं समागओ। तत्थ मायंद-उज्जाणे निवसंति। ते केरिसा ?

एगोमरा सिद्धमिहा, विरया मच्छमासिओ।
मायंदपरिवारो, वेंति मिर्ं भिक्खलेवकमे॥

तत्थ एगो चक्कमरओ निप्पवियरं पुच्छइ ‘हे पिय ! तस्स किंचि सपुण्णं कयं भविस्सइ ?’। गुरुमायंदेण वुत्तं–हे पुत्त ! पावरिसाओ पुव्वं एत्थ केई मुणिणो समागया। इमस्स नयरस्स उज्जाणम्मि राईए पियाए दोसि सिविहक्खमणपच्चक्खाणाओ आयाओ। पीवरमुणिणा भणियं– “अयंमि रयणभविलोवसाइ पसाओ कईय दीसइ। तत्थ भासरिए मायंदसमस्स वयं–एयस्स तरुस्स हेट्ठम्मि वा मुणिणा कयाओ सिमाप्पगा सब्बे भवियप्पमाणो अस्थि। एगस्स पच्चक्खाणेण अप्पीहिंसो जया भसुमि पसंति, तया सव्वे मुणिवराइ आवसि। पीवर-पच्चक्खाणवसेण सत्तरिप्पमाणो तस्स रक्खा संभवगया। एए इमाओ कयाओ पहावसरिपा दसंति। एयाइयं पुरिसकयं मायंदपरिवाराओ सुराओ विन्नाणेण वि बहु एगा मया। तओ भाय पभाए तरुणो क्खरिं खासि समायं पच्चारं वेसूणं भण्णीसूरवयं पइ सामुचरिअम्म मेरे समागओ। एगया विन्नासेण चिंतियं “पुण्णवराज्जयवसेण सरिसिं मम महा पुण्णमय दंसणेण एत्थ दिण्णं, तेण पय संजमं पाविउं किं करोमि ? अत्थ गमण सिविविहमाविरं पि नत्थि गुरुणो समागमणे वि सत्ति तहा मम सम्मं धम्मायरणं संभवइ ?। तुम्हं इमो गामो सप्पुरिसाणं सायगो वि न सम्मइ इच्चाइ चिंतओ सेट्ठी भाउसिंय दीणवयओ भवया हियंयमि पेच्छइ पेच्छिऊण भावेओ नियमाइवत्थाणि धम्मसुचरिमेण धम्मं गमेइ।

एगया सेट्ठी चिंतइ–“ सच्चकारायं तवं समायच्चयं किं निम्मइ? किं पुच्छणं देमि ? महया पुण्णपीडीयाण भवदाणं देमि किं ? एयस्स

त्थ कस्स वि दिज्जइ तया सोहण। अहुणा मज्झोवरि गामठक्कुरस्स महोवयारो अत्थि, तेण वासाय घर पि दिण्ण, तस्स किवाए हट्ट मंडिय कयविक्कय कुणतो हू धण पि किंचि लहीअ, तम्हा गामठक्कुरस्स देमि त्ति" वियारिअ भज्ज कहेइ--" अज्ज दुण्णि लड्डुए सुगधजुत्ते निम्मवेहि। तेसु लड्डुएसु इमेसिं दुण्ह लयापण्णाण चुण्ण भिन्न भिन्न पक्खिवेज्जाहि, जेण ठक्कुरस्स पुत्तदुगस्स दिज्जइ", एव कहिऊण लयापण्णाण चुण्णदुग दाऊण कज्जत्थ निग्गओ।

जिणमईए चिंतिअ--' मम पुत्तेहिं कयावि मोयगा न भक्खिया, तेण पुत्ताण भक्खणत्थ अहिग करोमि ' त्ति चिंतिऊण चउरो लड्डुआ निम्मविआ। दुण्णि ओसहिसजुत्ता, दोण्णि य ओसहिविहीणा कया। ओसहिजुत्ता मोयगा नीसरणीए उवरि ठविआ, ओसहिहीणा नीसरणीए अहमि रक्खिआ, मज्झण्हकाले दुण्णि पुत्ता जया पाढसालाओ समागया, तया ताण माया हट्टे कयविक्कय कुणती थिआ अत्थि। बुहुक्खिआ ते पुत्ता नीसरणीए उवरिं गया, दिट्ठा ते लड्डुआ। तेहिं ओसहिसहिया मोयगा एगमेग पुण्णप्पहावेण भक्खिऊण गया पाढसाल। तयणंतर सेट्ठी वि घरे समागओ, कंचि काल ठिच्चा नीसरणीए अहंमि ठविए दुण्णि मोयगे गहिऊण ठक्कुरस्स अप्पणत्थ गओ। ठक्कुरस्स समीवे गच्चा कहेइ--" सिरिमतस्स अप्पणत्थ लड्डुअदुग गहिऊण समागओ म्हि। इमा लड्डुआ सप्पहावा सति, न उ सामन्ना। एगस्स भक्खणे सत्तदिणते रज्ज होइ, अवरस्स भक्खणे जया सो रोवेइ, तया तस्स नेत्ताहिंतो मोत्तिआइ झरति, जओ ओसहिमिस्सिया मोयगा एरिसा पहावसहिया सति, नन्नहा मम वयण सिया"। तओ ठक्करेण ते दुण्णि मोयगा पुत्ताण भक्खणट्ठ दिण्णा, भक्खणाणतर दुण्णि पुत्ता ताडिया, कस्स वि अच्छीहिंतो मोत्तिआइ न निग्गयाइं। रुट्ठो ठक्कुरो जिणदास कहेइ-" तए मम पुत्ताण ताडणाय एव कय;

तव पुत्तं पुत्तत्तं दंसिस्सामि', एवं कहिऊण पाडसालाओ जिणदा-
सस्स दुवे पुत्ते घोसम्म मिश गहट्ठं चेडगमप अप्पिसा। कहिअ च-
'हे चेडग! इमे रक्खिज्जसु अहं तुमंपि दंसिस्सामि'। कालक्के
जिणदासस्स दुण्णि, पुत्ते घेत्तूण धणद् गओ। जिणदासो वि चिंतेइ-
"किं रिसीए दण्णं असच्चं कयं? अहवा निम्मणाए मम च
कयं? किं करोमि?, मम निमित्तो पुत्ताणं कहे जाओ? कं सरणं
गच्छामि? दुज्जिणस्स मज्झ कम्मो एव सरणं जइ सरणप्पवित्तस्स
मम पुत्ताणं पुण्णं होस्सइ तया खेमयं होही' इच्चाइविचारेण सम्मत्ते
थिरीभूओ पच्चक्खिमितिमंतं झायंतो निद्दं गओ मज्झाए वि सम्मं
धरिअं। तया पुत्तविओगेण दुक्खिआ, पुत्तवि चेडगं पत्ता रोइआ
सम्मद्दिट्ठिगुणेण आसासिआ। तया य-" जं भाविअमो भावा सम्मा
इंति, तम्हा खेयण अलं, धम्मपहावं सपब सच्चं होइ" एवं कहिऊण
दुण्णि धम्माराहणतप्परा जाया। सो चेडगो जिणदासस्स दुण्णि
पुत्ते गहिऊण पइट्ठाणे समागओ। पुत्तेहिं जे घोसगा भणिआ तेसु
गविणयणमोहेण रस्साकम्मासम्मत्तो विवेगं जिणदासेण मारिआओ
करंते लहुओ अप्पण जिणदासिआण अप्पिओ। मज्झे गच्छंता
ते निअपिअ-पिअ पियामहाणेण समं ठक्कुरेण गहट्ठं चेडगमप अप्पिआ।
एवं दुण्णि मज्झंमि तया अहुस्स जिणदासिआस्स कण्हुसि
मोत्तिआइगव्वंमि। मोत्तिआइयणाइं घरउत्तं सव्वोहरणो को निअघत्ते
ताइ निम्मइ। सो य चेडगो ताणं पुत्ताणं कहेइ-" तुम्हाणं गहट्ठं
ठक्कुरेण इं मारिहो, तुम्हे निअघरेणं गमह"। विओ कहेइ-
निरवराहाणं मारणेण किं पओयणं ठक्कुरस्स?, अम्ह कोवि अवराहो
न अत्थि किं अओ? एवं निरवराहिणो ते इत्तूण चेडगस्स वि हिअयंमि
दया जाया सो एव चिंतेइ-" इं पराहीणो अपरिहरिज्जकरो किं
करेमि? वाणप्पाणपरायणो दुम्हाणं रक्खिस्सामि जइ इं न करिस्सामि
तया ठक्कुरो मं पि दंसिस्सइ। अहवा पाणप्पपरायणो वि अन्नपाणं

पुण्णप्पहावेण तस्स असी न चलेइ तया पाउब्भुयदयापरि णामो ताण कहेइ– ' तुम्हे जइ मम वयण अगीकारिस्सह, तया तुज्झे न हणिस्सामि ' । तेहिं उत्त ' किं त ? ' । चडालो कहेइ– ' इओ सिग्घ जइ गच्छिज्जाह, कियावि अस्सि गामे न आगच्छिस्सह तया तुम्हे न हणिस्सामि ' । तस्स वयण अगीकरिअ उवयारत्थ कइ मोत्तियाइ दाऊण ते जिणदत्त-जिणरक्खिया तओ सिग्घ निग्गया अडविं पत्ता । तया जिणदत्तो सोलसवासिओ, जिणरक्खिओ तेरह-वासिओ अहेसि । अडविं गच्छता ते दोण्णि तओ गामाओ बहुदूर जाव निग्गयन्ति । तत्थ सझाए अणेगसावयगणभीसणाए अडवीए कासइ महारुक्खस्स अहमि थिआ वियारति–' एयमि रण्णे रत्तिं कह नेस्सामो ?, समीवत्थो कोवि गामो न दीसइ । तओ एत्थ तरुस्स अहे वसण वर । जिणदत्तेण जिणरक्खिओ उत्तो–" अम्हाण सह सुवण न जुत्त, जओ अणेगकूरपाणिगणभीसणा एसा अडवी अत्थि । तओ अह जग्गिस्सामि, तु अईव गिलाणो सि, तेण पुव्व सुविज्जाहि, पच्छाह सुविस्सामि " । जिणरक्खिओ वएइ ' ह तुम्ह लहू बधु म्हि, तु मम जिट्ठयरो बधवो सि, जेट्ठो बधू पिउ– तुल्लदिट्ठीए दसणीओ, तओ पुव्व तुम्हे सुवेह, मज्झरत्तीए तुम उत्थाविअ अह सुविस्स ' । तत्तो अईव निब्बधेण जेट्ठो सुत्तो । लहुबधू जागरमाणो जिट्ठबधव रक्खतो चिट्ठइ । एगमि पहरे गए रुक्खस्स विलाओ एगो भीसणो सप्पो निग्गओ । तत्थ सुत्त जिणदत्त डसिऊण बिलमि पविट्ठो । मज्झरत्तीए जिणरक्खिओ जिणदत्त जग्गावेइ, सो न उट्ठेइ । तेण चिंतिअ–" गाढनिद्दाए पडिओ एसो, तओ पच्छा जग्गाविस्सामि " एव तइअपहरे गए पुणरवि उट्ठावेइ, सो नोट्ठेइ, ताव पभाय पि जाय । जाए पच्चूसे नियबधव निच्चेट्ठ विसमइअदेह दट्ठूण—किं मम बधुस्स जाय ? ' अहवा सप्पदट्ठो दीसइ ।

पायवग्गिवं मंजुं पासित्ता सई रायइ वएइ—"अइदेव्व पुत्त मायपिउणा सह विओगो कओ अहुणा बंधुणा वि सह हा ! हा ! किं करेमि ? कत्थ जामि ? कं सरणं गच्छामि ?" एवं सा रायमाणा विलवन्ती तत्थ ठिआ । आसासयन्तागओ कोऽवि तस्स नत्थि । पच्छा चिरं कालं चिंतइ— नियबंधुं मसाणम्मि ठवेमि पच्छा अग्गिदाहं करिस्सामि । समीवे कोऽवि गामो अत्थि न वा इअ जाणणत्थं रुक्खम्मारुहिअ पासेइ पएसं । नाइदूरम्मि समीवत्थं गामं पासइ । नियबंधुस्स देहं तम्मो साडाए वत्थेण बंधिऊण सा नाइपरिसरम्मि चलिआ । एगम्मि आवणे गया तया एगं महानयरमागयं । तम्मि सा पविट्ठा । मज्झंतो एगस्स धणवंतस्स सिट्ठिस्स परगम्मि पत्ता । सा सेट्ठि सिणेहणिदाणं पासित्ता पुच्छइ एव कुओ विसण्णा तुं आगया सि ?। सा रोवंती वेइ— "मम बंधू अरण्णे सप्पेण दट्ठो मओ वाससे तस्स मयकिच्चकरणत्थं सामग्गिं गहिउं आगया म्हि हे दयालु ! ममुवरिं किवं किच्चा मयबंधुमोयणट्ठं मज्झ देहि" ति कहंतो रुवेइ । तया तस्स सेट्ठिणीआ मोयगाइं पक्काइं रसवंत मोयगाणं पारसंबरीओ ते सिंच गिण्हिउं नेइ । नियसिहरं करसपणाए कहेइ 'एवं उवरिसबंधिम गयाई' सो सिट्ठी ते चत्तारि गया, सिट्ठिणीहिं पच्छा चत्तारि गया ते विसपरिवहिं कओ मसाणभूमिस्स बेज्ज एगाए मंजूसाए पक्खिवेइ । सो तत्थ मिओ चिंतेइ—

अहुणा किं कायं ? कुओ सेट्ठी दीसइ, मोयगाभिलासेण ? एत्थ पक्खित्तो अत्थो पीसरणं कहं संभवेज्जा ? । मम बंधुस्स मरणाविसयं कहं करामि ? एवं चिंतंतो मंजूसाए ठिओ अत्थि । विप्पसेट्ठी वि पएसाणं ते वाहिर निग्गमसीलत्तं कसायवारेण तालित्ता गब्भिणीओ पक्काइं मोयगाइं गहेइ, तया अवसरं पाविऊण मुंजामित्ता पुण्णा मंजूसाए पूरेइ । एवं तस्स दिणाइं दुक्खेण गच्छंति ।

एत्थ ।जिणदत्तस्स किं जाय, त कहिज्जइ–तमि रण्णे मज्झण्हकाले गारुलविज्जाधारिणो कइ गारुलिया तत्थ समागया । मग्गपरिस्समा-वणयणत्थ तस्स तरुस्स अहमि थिआ । परुप्पर सलाव कुणतेहिं तेहिं गारुलिएहिं रुक्खस्स साहाए बधिओ जिणदत्तो पेक्खिओ । तओ उवरिं चडिअ त जिणदत्त अहे अवयारिऊण त निच्चेट्ठ पासेइरे । नीलवण्णसजुयदेह दट्ठूण निण्णिअ, सप्प दट्ठो एसो । सप्पदट्ठपुरिसो छम्मास जाव जीवइ । तेण इमस्स गारुलियमतेण जीवदाण दाउ जुत्त, परोवयारेण अम्हाण जीवणपि सहल होउ त्ति वियारिअ गारुडमतेण सो निव्विसो कओ । खणतरेण सुत्तो इव जागरिओ सतो समीवत्थिए गारुलिए पासइ, नियवधु न पासेइ । ते पुच्छिआ मज्झ वधू कत्थ गओ ?। तेहिं उत्त-'अम्हे अहुणा एत्थ समागया, रुक्खवधिअ सप्पदट्ठ त दट्ठूण गारुलमतेण तु निव्विसो कओ । एत्थ तव वधू अम्हेहिं न दिट्ठो'। त सोऊण जिणदत्तेण चिंतिअ–'नूण मम वधू म सप्पदट्ठ दट्ठूण रुक्खपसाहाए वधिऊण कत्थवि गओ होज्जा । कत्थ त परिमग्गेमि'त्ति ? वियारमग्ग त गारुलिया पुच्छति–किं चिंतेसि ?। तेण सव्वो वुत्ततो कहिओ । तुम्हाण पच्चुवकरणे हु असमत्थो, किं करोमि ? । तेहिं उत्त अम्हाण कावि इच्छा नत्थि । तवोवरिं कओ उवयारो भवतरे कल्लाणाय होउ त्ति कहित्ता ते गारुलिया इच्छिअमग्गे चलिआ । सो जिणदत्तो लहुवधुणो मग्गणत्थ अग्गे चलिओ । कत्थवि सुद्धि अपावतो सत्तमदिणे जमि नयरे सो जिणरक्खिओ किवणस्स घरे थिओ अत्थि, तस्स नयराओ वाहिर आगओ । तया तस्स नयराहिवो अपुत्तो अकाले मच्चु पत्तो । तेण पहाणेहिं रज्जजोग्गपुरिसमग्गणाय छत्तचामराइविहूसाजुओ गओ अलकिओ । सो गयदो नयरे भमतो कमेण नयराओ वाहिं जत्थ सो जिणदत्तो तरुस्स साहाए ... अत्थि, तत्थ समागओ । सो गयदो त...

विसइणं कयम्म अभिमिसेइ सव्वं चिय धणं वरिसाइ कमए सयमव वीइक्कमंति । एगया वरस्स उ गाहिणम्म तस्स कुंभपरुम्मि ठवइ । मणिसुवण्णपउरमम्मा महिलवं गरिहं इरिसेव्वं नमंति । समूसवे नववं वहेमंति । रयणसहाए रयणामिमणस्स अइसिसवि । एवं रयणाइ-आसीइणाणत्त म इमि नयरे महप्पया [illegible] । पियमणुणाससरं सम्मत्त वरपुरिमा पसिअगवि करावि तम्म पावी न तवस्स । अओ समय अणुकूलम्म पुरिसा कड्ढण दिवसे नेइ ।

एत्थ जिणयत्तेहिणा विविहसाहण्णाइं सव्वेहिं सयरिपमभूमिभवो जिणा कहिंपि कड्ढण विघाई गमइ । तस्स सेट्ठिस्स एगो कामियपुत्तो अत्थि, सो अम्भाओ रोगी अत्थि । तेण सो जिणयसेट्ठी तं भूमिघरं रक्खइ । चिंतेइ य— मम पुत्तो अईव रयणकंखी अत्थि । तस्सुवरि एस भि विट्ठिराया न करणया तस्स भूमिघरे ठविआ अत्थि । तस्स रयणस्स सान्निया एगरयणा सव्व पसंसंति । एवं तस्स पुत्तस्स अववर्ढं सेउं समीवनयरनिवासी रयणसेट्ठी निययकन्ना–सीलवइनामाए तं जिणयत्तं पत्थेइ । कोवणमइत्त कयावि, पासमसुयस्स दीवाए विवाहं निम्मवेइ । सो जिणयत्तसेट्ठी विचारेइ— अहुणा किं करामि ? कामियपुत्तम्म सुइं कहं अप्पाण दंसेमि ? जइ सीलवइ एस मणिभासरंगा बाला अत्थि एस चिय मम पुत्तस्स अग्गे विवाहिस्स पच्छा सव्वं मोरणं हवि । एवं चिंतिऊण मञ्जूसाए विवं तमाणिऊणं कहेइ— तुमं मम पुत्तं सीलवईवत्तं परिणाम करिस्ससि, तया ते तुम्हे इच्छियं दाहामि । तम कहिअं नीर कस्सए चीय अई [illegible] मरिअं न धरिस्सामि । पमाणेस-[illegible] मम मोक्खं [illegible] अत्थि । तया जिणयत्तसेट्ठी कहेइ— जइ एवं न करिस्ससि तया इओ कुरूपत्ता तुमए न कायव्वा, निययं जाणिअ किं करसि ? मरणप्पवजं एत्थ मंजूसाए ठविस्सामि कयाइवि देवयं करिस्सामि

एव सोऊण मरणभएण तेण मोत्तिअज्झरेण चिंतिअ-" किं करोमि ? ज भावि त अन्नहा न होइ, तीए कन्नाए एरिसा भवियव्वया, तेण एरिसो पसगो उवट्ठिओ, अओ अहुणा एअस्स वयणस्स अंगीकरण चिय वर, पच्छा जहोइय करिस्सामि "। एव विआरिऊण किवणसेट्ठिस्स उत्त-' अह परिणेऊण तव पुत्तस्स कन्न दाहामि, तुम्हे वि नियवयण सम्म पालिस्सह, ' एव सोऊण किवणसेट्ठी परितुट्ठो। घरंमि विवाहमहूसवो वि पारंभिओ। नरिंदग्गे गच्चा नियपुत्तविवाह-करणत्थ पाहुड दाऊण अलकारजुत्तहत्थि-तुरग-रहाइ-सव्वविवाहु-वक्खर गिण्हित्ता घरंमि समागओ। पत्थाणदिणे हत्थिरयणे त मोत्तिअज्झरग उववेसिअ, नियकोढियपुत्त च वसणढक्किअरहे आरोवित्ता नयरमज्झेण निग्गओ। पउरा मोत्तिअज्झरणमुह दट्ठूण पसस काउ लग्गा—'धण्णो एसो सेट्ठी, जस्स एरिसो रूववतो पुत्तो अत्थि'। एव मोत्तिअज्झरस्स रूपसलाह सुणमाणो सेट्ठी कमेण कन्नानयरे सपत्तो। सो रयणसेट्ठी वि हत्थिरयणे थिअस्स मोत्तिअज्झरस्स रूव दट्ठूण अहिययरो तुट्ठो। मोत्तिअज्झरण-सीलवईकन्नाण विवाहो वि समह सजाओ। करमोयणसमए जामायरस्स बहुदव्व दिण्ण। एव विवाहमहूसवे समत्ते तआ सव्वे निग्गया। सा सीलवई मायपिऊण पाएसु नमित्ता, सिक्ख गहिऊण मोत्तिअज्झरेण सद्धिं रहवरमारूढा निगच्छइ। नियपइणो अच्चब्भुअ रूव दट्ठूण नियजम्म सहल मन्नेइ, पासत्थिआए दासीए अग्गओ सिलाह अकासी —" मम पिओ रायकुमारो इव दीसइ, इत्थीसु किलाह पुण्णवई, जओ पुण्णोदएण एरिसो मए भत्ता पत्तो "। सोवि मोत्तिअज्झरओ किंपि न वोल्लेइ, अथिरमणो इओ तओ विलोएइ। सा सीलवई चचलचित्त नियप्पिअ दट्ठूण पुच्छइ —'हे पिअ ! अहुणा विणोयसमए किमेव अत्थिरमणो लक्खिज्जइ ? मोत्तिअज्झरओ कहेइ—" हे बाले ! अह तव न भत्ता, भाडएण मए तु परिणीआसि। जओ एसो किवणसेट्ठी मोत्तिअलोहेण

निययघरसमभूमियके मज्झुवाए मं पूरिऊण रक्खइ। दिणे दिणे उच्छुपमाणेण मज्झ कच्छघीरितो पडाए मोयगाई खिवइ। चउत्थं च मासम्म य परिमेऊण तस्स वणियपुत्तस्स अप्पिस्सामि तया सो जिणदत्तसेट्ठी मे मोइस्सइ। एसो वि समीवत्थो जिणदत्तसेट्ठी एयाओ वयणाओ सव्वं देइ अओ हं गच्छिस्सामि एवं चिंतिऊण सो मोयगकरंडए पडाओ ओयरिऊण अन्नत्थ गओ। तया संझाए सो कोसिओ पुणो रायमुहवासिर्हं समागओ। सीलवई दासीरूवेण तं वरह य पाएइ। पुणरवि चडिय आगच्छइ एवं पुणरवि दासी अवमाणय य पाएइ। सा एवचो तत्थ ठिओ। जिणदत्तसेट्ठी तत्थ आगओ अन्ने वि अम्ह आगया सीलवई कहइ कि एवं करेसि?। सा कहेइ— न मम एसो कोसिओ भत्ता मए परिणीओ भत्ता अईव रूवायगो तया जइ एसो आगच्छिस्सइ तया अहं निग्गच्छिस्सामि,' एवं वसि तत्थ वासाउलं जायं। मज्झत्थपुरिसेहिं कहियं— एयं किं वयणजुत्तेण, जं अम्हाणं तं करेमि अम्हाणं एव पच्छामि सव्वं सुयं संजायं। अम्हेण निग्गमं सव्वे समागया। सीलवईए वयणाय एगो दासो अप्पिओ तत्थ दासीरूवा सीलवई वसइ। अन्नमि दिणे पिउघरम्मि सा कोसिओ पुणो सीलवइए समीवं आगच्छंतो दासीए अवमाणिओ वयणाए भीसरणम्मि अओ ठिओ। तस्स वयणाई वि कुप्पियआई एवं जया सो आगच्छइ, तया तया दासी व विडंबि किज्जइ। तया एसो एवं निण्णओ कओ जया वि एत्थ न आगमिस्सामि एव दियाणि गच्छंति। सा सीलवई कम्मसावि वयणं न मन्नेइ। एगया सो जिणदत्तसेट्ठी चिंतेइ— जइ अम्हाणं राया एवं जोएइ, तया कयाचि सा मण्णिस्सइ एवं चिंतिऊण सम्मुहे परिहमाणा गंतूण रायदारं राइणा विन्नवणं कुणंतो पुत्तवहूदायएण एयवं कहि। रायमाणमीसत्तेण निवेण तस्स करेमि आगमणाय संबोहिय एवं च— कहमि दिणे हं आगमिस्सामि'। जिणदत्तसेट्ठिणा परे

आगतूण नियकुडुंविजणस्स पुरओ नरिंदागमणवत्ता कहिआ। वीयदिवसे पहाणपमुहपरिवारजुत्तो नरिंदो किवणसेट्ठिघरे आगओ। सेट्ठिणा तस्स नरिंदस्स सुट्ठु सागय कय। अब्भतरे पवेसिअ पासायमज्झठवियसींहासणे थिओ नरिंदो 'परत्थीण मुह न दट्ठव्व' ति वियारेण जवणियब्भतरे सेट्ठिणो पुत्तवहु आहूय ठवेइ। ठविऊण त कहेइ-" हे पुत्ति! कुलवहूण एगो च्चिअ सामी आजम्म होइ, जारिसो तारिसो वि पिओ माणणीओ होज्जा, तस्स अवमाण कयावि न कायव्व। तए विस अप्पणो भत्ता देवो इव आराहणिज्जो।' सा सीलवई कहेइ-' हे नरिंद! तुम मज्झ पिउसमो, तेण तुम्हाणमग्गओ अकहणिज्ज किं पि नत्थि, सच्च कहिस्स, ममोत्तर जोग्ग दास्सह, पुव्व तु पुच्छामि-" इत्थीण परिणीओ भत्ता होज्जा वा अपरिणीओ भावेगेण गहिओ वा?"। निवो कहेइ-' सव्वजयपसिद्ध एय, इत्थीहिं परिणीओ जो स च्चिय भत्ता होइ, नन्नो'। तया सीलवई कहेइ -' मम परिणेया भत्ता किवणसेट्ठिस्स पुत्तो न, किंतु जस्स अच्छीहिंतो मोत्तिआइ झरति, सो चिय मे भत्ता'। नरिंदो तीए मुहाओ मोत्तिअज्झरणवत्त सोऊण नियवधुसकाए पुच्छइ-'सो कत्थ अहुणा वट्टइ?'। तयाणिं किवण सेट्ठी वोल्लेइ-' एसा मम पुत्तवहू अथिरमणा, ज वा त वा वएइ, इमीए वयणे वीसासो न कायव्वो'। नरिंदो परुसक्खरेहिं कहेइ- ' हे सेट्ठि! तए किंपि न वोत्तव्य, ह सव्व जाणामि'। पुणोवि सीलवइ पुच्छइ-' हे पुत्ति! तु कहेहि, सो अहुणा कत्य अत्थि'। सा कहेइ— " अणेण किवणसेट्ठिणा अस्स पासायस्स उवरिं सत्तममालके मजूसाए मज्झमि सो मोत्तिअज्झरगो मोत्तिअलोहाओ पक्खित्तो अत्थि "। एवं सोच्चा नरिंदो सपरिवारो उवरिं गतूण मजूस उग्घाडिअ नियभायर पासइ, पासित्ता वाहिर निक्कासिअ हरिसेण आलिंगेइ, वहुवरिसे नियवधुस्स सगमाओ सपरिवारस्स नरिंदस्स अपुव्वो अउव्वो अ आणदो सजाओ। मोत्तिअज्झरस्सावि तहेव अकम्हा वधुमिलणे

सिरिमई य । पढमपुत्त मण्णाइआ आरब्भ नियसमवपुत्तं पई पत्तं नामं पुत्तेण पुच्छइ । तत्थ अम्म सेट्ठिस्स घरे आगमणाओ आरब्भ सीसपरिक्खणत्थं जाव पुत्ता पट्ठिओ । तया सा नरिंदो निययमणिस्सुवरि सव्वं पुत्ता सहुउत्तस्स सेट्ठिस्स वत्तं कहिअइ । तया सिरिदेविनाम्म हरिसियसीलवाए सम्मिलुपुत्तभासयान रयणासणं नरिंद परिवारम्मि ते रयणाइं । तया रण्णा ते सव्वे नरिउ अवहरिअ निम्मिसमा कामया । नरिंदो नियपुत्ता सीसवईए य पुत्ता हरिस वसओमि आगईए नियमंदिर समागया । सपुण्ण संपत्तीए जिणचेइएसु अट्ठाहियामहूसवा कारिआ । एए नामि आयरेण दिवसा गच्छंति । एगं दिवं ताणं पुव्वत्त य पुत्तो आसपिण्ण निवइणा । सव्वंगो नरिंदो मायापियरमिलणाय अईव उक्कंठिओ जाओ । चउरंगसेणाइ कलिओ हत्थि-तुरंग-रह-पाइक्कसहस्सपरिवुडेणाए पुत्तेण मिलणजणाए निग्गओ । मग्गम्मि गाम-नगर-पुर-विमठ्ठाणेहिं रायपहेहिं नरिंदे वसिपुरओ पमए उज्जुगाम आगओ तत्थ गाम निवसाय सिवरा सेणि । गामाओ बाहिं जंगलम्मि ठविआ । उज्जुराजि महाप यस्स आगमणं सुच्चा सव्वजीवा नयराओ आगंतूण सव्वेजुवतीए नाय नमइ । पाहुडं रहण तस्स नाम संगेसुमेइ । प्रणामिपाय जिणदत्तेण रण्णा पुट्ठं— अस्स नयरे का वि वणिआ अत्थि न वा ? । तेण वुत्त- " मम नयरे जिणदासो नाम वणिओ अत्थि सो वहुआमाओ पुव्वं एत्थ आगच्छ अवणिज्जत्थं कुणन्तो चिट्ठइ " । नरिंदो वि तस्स सेट्ठिस्स आगमणत्थं अत्थं पेसइ । सो जिणदासो आगच्छ सव्वं नरिंदं पणमइ । नरिंदो वि तं पुच्छइ— हे सेट्ठि ! तुं अम्हे किं परियाणसि ? । सेट्ठी आह— 'अम्हगं नरिंदपरियाणाणत्थं ण महाराय कहं न जाणइ ? । नरिंदो आह— 'एवं न, किन्तु अहं संबंधत्थेण पुच्छामि । तया सो जिणदासो सव्वं सवत्तुं नरिंदं पुच्छमाप कहक-

क्खेइ, किन्तु कह कहिज्जइ 'तुम्हे मम पुत्त'त्ति। तओ सेट्ठी मोणेण थिओ। तया सवधू नरिंदो सीहासणाओ उत्थाय पिउस्स पाए पडिओ कहेइ–"पिअ! अम्हे एयावत कालं पिउमुहदंसणपरिहीणा निब्भग्गा तुम्हाण पाए पणमिमो, अज्ज अम्हाण दिवसो सहलो, जं पिउपायदंसणं जायं। मायावि तं समायारं लोगमुहाओ जाणिऊण सिग्घं तत्थ आगया। सहसा आगयं मायरं दट्ठूण ते दुण्णि वि माइपाएसु पडिआ। मायावि थण्णं झरंती अच्छीहिंतो हरिसेण असूणि मुंचंती नियपुत्ते सहरिसं आलिंगइ। जिणदत्तनरिंदोवि मायपियरं सीहासणे ठविऊण कहेइ–'तुम्हाण पुण्णप्पहावेण मए रज्जं लद्धं, तुम्ह संतिअं एयं रज्जं, तम्हा तुम्हे अंगीकुणेह, अम्हे वि तुम्ह चरणे सेविहामो मायापिउणो कहिंति–" हे पुत्ता! आजीवणं सम्मं आराहिअस्स जिणधम्मस्स एयं फलं, तओ तुम्हे वि जिणिंददेवगुरुधम्माराहणे सया तप्परा होह। पुत्तावि धम्मसम्मुहा जाया। ठक्कुरो वि 'सेट्ठिणो एए पुत्ता, जे मए वहाइ चंडालाय अप्पिआ' इअ नाऊण सभीओ सपुत्तजिणदासस्स पाए नमइ, नियावराहं खमेइ। नरिंदो वि तस्स सव्वमवराहं खमेइ, आसयदाणाओ ठक्कुरस्स वि पच्चुवयारकरणत्थं गामे देइ। जिणदत्तनरिंदो मायापियबधुजुत्तो नियनयरंमि समागओ। जिणदत्तनरिंदो बधुजुत्तो पिउस्स निव्वंधेण सीहासणे उववेसिअ नाएण रज्जं पालेइ। जिणमहए जुत्तो जिणदासोवि जिणपडिमाओ अच्चंतो, आयरियमुहाओ जिणवरकहिअधम्मं सुणंतो, वयाइं पालंतो सुहेण कई वि वासे गमेइ। पज्जंते धम्मघोससूरिणो पासे सभज्जो दिक्खं घेत्तूण, सम्मं आराहिअ देवलोगं पत्तो। कमेण सिज्झिस्सइ। सो जिणदत्तो नरिंदो जिणरक्खिअजुत्तो जिणवरचेइआलंकियाइं नयराइं कुणंतो, साहम्मिअजणवच्छल्लं समायरंतो, दीणाणाहे उद्धरंतो सद्धम्मकिच्चेहिं जिणसासणं पहावंतो, सावयधम्मं परिपालंतो सुहेण

कालं गमइ। ताउसपगईवि पुत्तस्स रज्जं अप्पिऊण सगुरुणो पासम्मि गुरुणो समीवे गिण्हित्ता सम्मं परिपालिऊण सम्मसुद्धं पत्तो कमेण सिद्धिं पाविस्सइ।

उवएसो—

विणयदासस्स दिट्ठंतं, उवयारसमस्सियं।
सुणित्ता भविआ! तुम्हे, दाणधम्मे पयट्टह॥ ५॥

दाणधम्मोवरि विणयदाससेट्ठिणो पंचमी कहा समत्ता॥ ५॥



अवियारिआएसे नरिंदस्स कहा छट्ठी॥ ६॥

अवियारिय-आएसो, सप्पाणंमि पडेइ वि।
साऽऽयसे कुंभगारे व, सुणित्ता निवइं जहा॥ ६॥

एगंमि नयरे एगेण नरिंदेण नियनयरे आएसो दिण्णो— "गामस्स मज्झे एगो देवालओ अत्थि। पुरीए माहणा वा वइस्सा वा खत्तिया वा सुद्दा य वा नयरवासिणो जे लोगा संति तेहिं देवालयं पविसिऊण एगं पंडिया पेक्खियव्वा अन्नहा तस्स वहो भविस्सइ"। एगो कुंभगारो कम्माएण वावारिऊण गद्दहमारूहिऊण एगं पच्चूसे गिण्हिऊण महारायस्स पत्थइ। तत्थ देवालए सो देवो न वंदिओ। तओ एगा सुहडेणं गिण्हिऊण नरिंदस्सग्गओ ठविओ। नरिंदेण तस्स वहो निदिट्ठो। तक्खणे सो भीओ। मरणकाले तस्स मरणं विणा पाणवाणिय विण्णवइ, पाणवाणिणी पूरिऊण वट्टिस्सइ एवं नियमो निवेण कओ अत्थि। तया सो कुंभारो वि पुच्छिज्जइ तम पाणवाणिणो कि वाहिज्जइ तेण वुत्तं— अहं नरिंदस्स समीवे गमिस्सामि। सो तत्थ नीओ। नरिंदेण पाणवाणियं मम वि कहियं। सो

कहेइ—' एग तु मज्झ गेहे अहुणा कुडुवभोयणत्थ पन्नरलक्खरूपगाइ पेसेह। वीअ तु जे जणा वदीकया ते सव्वे मोएह। निवेण सव्व कय। तइअपत्थणावसरे तेण —' सहमज्झत्थिअनरिंदपमुहसव्वजणाण एएण लगुटेण पहारतिगकरणाय आएसो मग्गिओ'। रण्णा चिंतिअ—अह किं करोमि ?, एसो थूलो, दडोवि थूलो, एगेण पहारेण अह मरिस्सामि। तओ 'अजुत्तो एसो आएसो' इअ चिंतित्ता वइणाएसो निक्कासिओ, उवरिं दाणमहिअ तस्स अप्पित्ता तस्स वुद्धीए सतुट्ठेण निवेण समाण गिहे मोइओ। एव अविआरिओ आएसो— कयावि अप्पवहाए होइ।

उवएसो—

अवियारिअकज्जस्स, पासित्ता अप्पियं फलं ।
कयाई न तहा कुज्जा, जइ तुम्हे सुहेच्छवो ॥ ६ ॥
अवियारिआएसे नरिन्दस्स छट्ठी-कहा समत्ता ॥ ६ ॥



सीलवईए कहा सत्तमी ॥ ७ ॥

कालो गओ जो धम्ममि, सो णेओ सहलो च्चिअ ।
निप्फलो मयलो सेसो, वहू एत्थ निदंसण ॥ ७ ॥

कम्मि नयरे लच्छीदासो सेट्ठी वरीवट्टइ। सो वहुधणसपत्तीए गव्विट्ठो आसि। भोगविलासेसु एव लग्गो कयावि धम्म न कुणेइ। तस्स पुत्तो वि एयारिसो अत्थि। जोव्वणे पिउणा धम्मिअस्स धम्मदासस्स जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पाणिगहण पुत्तस्स काराविय। सा कन्ना जया अट्ठवासा जाया, तया तीए पिउपेरणाए साहुणीसगामाओ जिणीसरधम्मसवणेण सम्मत्त अणुव्वयाइ च

गब्भिआई विणयधम्मे अईव विरत्ता संजाया। जया सा ससुरगेहे आगया तया ससुराई धम्माओ विमुहं दट्ठूण तीए चउत्थं संजायं। कह मम नियधम्मस्स निव्वाहो होज्जा? अहं वा देवगुरुविहूणा ससुराईण धम्मोवएसो भवेज्जा, एवं सा वियारेइ। एयम्मि संसारे असारे कम्मि वि अवसरे देहेवि विणस्सरे एगो धम्मो चिय परलोगगयजंतूण जीवाणमाहारो'त्ति अवयमाणेण निम्मला चित्तपवित्तेण धारिआ धम्मो। एवं मामूपि धम्मंतरे धरइ। ससुरं पडिबोहिउं सा समयं गमेइ।

एगया तीए घरे समणगुणगणालंकिओ महव्वई मासक्खमणतवो एगो साहू भिक्खट्ठं समागओ। जोव्वणे वि महव्वयं सव्वं देवं साहुं घरंमि आगयं दट्ठूण आगारे चिंतमाणा वि तीए वियारियं— 'जोव्वणे महव्वयं महादुक्करं, अहं पि एयम्मि जोव्वणत्तणे गच्छिमि' त्ति परिक्खणत्थं समागयाए पुट्ठं— 'अहुणा समया न संजाओ, किं तुम्हं निग्गया?'। तीए हिययगयभावं नाऊण साहुणा वुत्तं— 'समयनाणं— कया मच्चू होस्सइ त्ति नज्जइ, तेण समयं विणा निग्गओ।' सा उत्तरं नाऊण तुट्ठा मुणिणो वि सा पुट्ठा 'कइ वरिसा तुम्ह संजाया?'। मुणिस्स तुम्हमणाणं बावन्न वीसवासेसु जाएसु वि तीए बारसवासाण्णि उत्त पुत्तरपि दसावासस्स कइ वासा जाय त्ति? पुट्ठं। तीए नियस्स पणवीसवासेसु जाएसु वि पच वासा वत्ता एवं सामूए छम्मासा कहिया। ससुरस्स पुच्छाए सो अहुणा न उप्पन्नो अत्थि। एवं बहू-सासूण वयणं सोऊण ससुरेण सुणा। कहमिमस्स साहुंमि गए सो अईव कोवाउलो संजाओ। अओ पुत्तवहू म घरस्स न जाइ त्ति कहेइ। तओ सो पुत्तस्स पच्चक्खं हुई पच्छाए गच्छंतं ससुरं सा वयइ— 'मोत्तूणं हे ससुर! तुं गच्छसु।' ससुरो कहेइ 'जइ हं न गच्छामि, तया तव्वं मज्झं वत्तेमि-गच्छेमि एव परिच्छ हुं गया। पुत्तस्स सव्वं वुत्तंतं कहेइ— तव पत्ती गुरुत्ताए असम्भावय

अत्थि, अओ त गिहाओ निक्कासय'। सो पिउणा सह गेहे आगओ। वहु पुच्छइ–' किं माउपिउणो अवमाण कय ?, साहुणा सह वट्टाए किं असम्बमुत्तर दिण्ण'?। तीए उत्त–' तुम्हे मुणिं पुच्छह सो सव्व कहिहिइ'। ससुरो उवस्सए गतूण सावमाण मुणिं पुच्छइ–' हे मुणे ! अज्ज मम गेहे भिक्खत्थ तुम्हे किं आगया ?'। मुणी कहेइ–' तुम्हाण घर न जाणामि, त कुत्थ वससि ?, सेट्ठी वियारेइ 'मुणी असच्च कहेइ'। पुणरवि पुट्ठ कत्थ वि गेहे वालाए सह वट्टा कया किं ?। मुणी कहेइ–' सा वाला जिणमयकुसला, तीए मम वि परिक्खा कया'। तीए ह वुत्तो ' समय विणा कह निग्गओ सि'। मए उत्तर दिण्ण–समयस्स ' मरणसमयस्स ' नाण नत्थि, तेण पुव्ववयमि निग्गओ म्हि। मए वि परिक्खत्थ सव्वेसिं ससुराईण वासाइ पुट्ठाइ। तीए सम्म कहियाइ। सेट्ठी पुच्छइ–'ससुरो न जाओ इअ तीए किं कहिय ?।' मुणिणा उत्त–' सा चिय पुच्छिज्जउ, जओ विउसीए तीए जहत्थो भावो नज्जइ। ससुरो गेह गच्चा पुत्तवहु पुच्छइ–' तीए मुणिस्स पुरओ किमेव वुत्त–' मे ससुरो जाओ वि न'। तीए उत्त–" हे ससुर ! धम्महीणमणूसस्स माणवभवो पत्तो वि अपत्तो एव, जओ सद्धम्मकिच्चेहिं सहलो भवो न कओ सो मणूसभवो निप्फलो चिय। तओ तुम्ह जीवण पि धम्महीण सव्व गय" तेण मए कहिअ– ' मम ससुरस्स उप्पत्ती एव न, एव सच्चत्थनाणे तुट्ठो धम्माभिमुहो जाओ। पुणरवि पुट्ठ– ' तुमए सासूए छम्मासा कह कहिआ ?'। तीए उत्त–' सासु पुच्छह ' सेट्ठिणा सा पुट्ठा। ताए वि कहिअ- " पुत्तवहूण वयण सच्च, जओ मम जिणधम्मपत्तीए छम्मासा एव जाया, जओ इओ छम्मासाओ पुव्व कत्थ वि मरणपसगे गया। तत्थ थीण विविहगुणदोसवट्टा जाया। एगाए वुड्ढाए उत्त 'नारीण मज्झे इमीए पुत्तवहू सेट्ठा। जोव्वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्मकज्जमि स एव अपमत्ता, गिहकज्जेसु वि कुसला नन्ना एरिसा'।

इत्थीण सासू निम्ममत्त परिणीय सावियसउणाए पुत्तवहूए वि धम्मकज्जे परिकमाणावि धम्मं न कुणइ, इमं साउण बहुप्पयारेहिं बीय सुहाणा धम्मे पमा। धम्मफलाए एम्माणा आया तओ पुत्तवहूए एम्माणा कहिया वे सुपं। पुत्ता वि पुरी तस्स वि वयं-" रत्तीए सयणधम्माणुसरणाए मज्झाए संसारासारत्तणेण मोक्खविलासम्मि य परिणामसुहदाइत्तणेण वासावईपुरमणुसुणयत्तणेण य वेहस्स नरभवदुल्लहत्तेण अवमि धम्मो एव सारत्ति उवदिट्ठे ई जिणधम्मारत्तओ जाओ अज पेव णामा जाया। तया बहूए मे उदिस्स पंचनामा कहिया, ह सव्वं। एवं सुसंसरस धम्मपत्तीए बहुं विसेसेण य पुत्तवहूए बहुप्पयारेण सीलम्मि धम्मोवएसे वि पडिबुद्धा सुयणो वि धम्म आराहिय सम्मई पत्तो सपरिवारो। उवएसो

सीलड्ढीए दिट्ठंते, ससुरमणिपसेसे ।
सोऊण धम्मेण अप्पाणं साहिज्ज इम सम्मया ॥ ७॥
ससुराइधम्मसाहणे सीलड्ढीए सत्तमी कहा समत्ता ॥ ७ ॥

दाणंमि थेरे-थेरीण कहा अट्ठमी– ॥ ८ ॥

दायव्वं निव्वहरणेण, परो दाउं वा न वा ।
सुहरुद्दभविट्ठो भिक्खाओ एत्थ सुवइ ॥ ८ ॥

एगमि नयरे मिच्छो थेरो धम्मिओ अपुत्तो अत्थि। भिक्खोपजीवण तस्स थेरी भज्जा सुहा थिआ। तेण वणिएण भिक्खवणा कया वि दाणं न दिन्नं। एगया तेण चिंतियं दाणेण विणा परलोगे सुहं न होही किंचि वि इह भवे दाणं दायव्वं ति विचारिऊण तस्स घरे एगो

जच्चतुरगमो अत्थि, तस्स विक्कएण जं दव्वं होहिइ, तं धम्मत्थं मए अप्पियव्वं, एवं चिंतमाणस्स कियतो कालो गओ। जया तस्स मरणसमओ आगओ, तया महायणं बोल्लविऊण कहिअं "मम मरणाओ पच्छा मम भज्जा एयं जच्चतुरगमं विक्केऊण जं दव्वं पाविस्सइ, तं दव्वं परलोगसुहाय तुम्हाणं दास्सइ, तं दव्वं तुम्हेहिं सुहकम्मंमि निओइयव्वं" ति कहिऊण सो मरणं पत्तो। तस्स वुड्ढा भज्जा नियभत्तुणो मरणंमि विक्खा विआरेइ-"इमस्स जच्चतुरगमस्स विक्कएण रुप्पयसयं होही, तं तु महायणस्स अप्पणं भविस्सइ, मम पासे किं पि न होस्सइ, तओ एवं कायव्वं जेण सव्वधणं मईयपासे चिय ठाइ" एवं चिंतिऊण एगो मजारो पालिओ। विक्कयकाले मजारस्स रुप्पयाण नवनवई ठविआ, तुरगस्स एगं रुप्पयं ठविअं। जो कोवि कयणत्थं आगच्छेज्जा तस्स सा एवं कहेइ- 'मए एए मजारतुरगा सह विक्केयव्वा, एक्कमेक्कं कस्स वि न दायव्वं, जस्स गहणेच्छा सिया, तया मजारस्स रुप्पगाण नवनवई दायव्वा, तुरगमस्स एगं चिय रुप्पयं। एगमेगं तु न विक्केस्सामि। लोगा तुरगमस्स गहणेच्छाए आगच्छंति, सा पुव्वं मजारगहणाय कहेइ, पच्छा तुरगं। मजारं को वि न गिण्हेइ। एगया एगो वणिओ आगओ। तीए तारिसं वयणं सोच्चा मजारस्स नवनवइरुप्पयं दिण्णं, आसस्स रुप्पयं एगं दिण्णं। सा रुप्पयसयं गिण्हित्ता घरे आगया। महायणं बोल्लाविऊण जया एगं रुप्पयं देइ, तया पुच्छइ किमेवं ? । सा कहेइ-" तुरगमस्स विक्कएण इमं रुप्पयं लद्धं, नवनवइरुप्पयं तु मजारविक्कएण लद्धं। मम भत्तुणा वि एवं कहिअं- तुरगमस्स विक्कएण जं दव्वं होज्जा, तं अप्पियव्वं, मए उ तं दव्वं तुम्हाण दिण्णं। एवं वुड्ढाए महायणो वि वंचिओ। तं च सव्वदव्वं, अइलुद्धत्तणेण उवभोगं अकिच्चा चिय, विविहकिलेसं सहमाणा, मरणकाले वि झायमाणा अट्टरोद्दज्झाणपरा मच्चुं पत्ता। तओ निएण हत्थेण जं दाणं दिण्णं, तं परलोअसुहयरं होइ ॥

इमीए सासू निम्मणाए परिसीए भाविणाससरस पुत्तवहूए वि धम्मकज्जे पेरिज्जमाणाए वि धम्मं न कुणेइ, इमं सोऊण बहुगुणसंजुत्ता तीए सुण्हा धम्मं पत्ता । धम्मपत्तीए छम्मासा जाया तओ पुत्तवहूए छम्मासा कहिया ते सुणे । पुत्तो वि पुच्छे हेमवि वत्तं रत्तीए सम्मधम्मोवएसस्साए भज्जाए संसारासारदंसणेण भोगविलासाणं च परिणामदुहदायगत्तेण सासणईपुरओ कुडुंबजणत्तणेण य देहस्स खणभंगुरत्तणेण अयमवि धम्मो एव सारत्ति' जाणिऊण ई जिणधम्माराहगो जाओ तत्र पंच वासा जाया । तओ बहूए वं वरिसस्स पंचवासा कहिया त सव्वं । एवं कुडुंबस्स धम्मपत्तीए गई विम्हसीए य पुत्तवहूए धम्मपवयणं सोऊण धम्मसीलत्ती वि पडिबुद्धा कुडुंबेण वि धम्मं आराहिअ सग्गं पत्तो सपरिवारो । उवएसो

सीलवईव विदुसी, ससुरस्स विवेगं ।
सोच्चा धम्मेण अप्पाणं वासियं कुण सव्वया ॥ ७॥
ससुरस्स धम्मसत्थे सीलवईए सत्तमी कहा समत्ता ॥ ७ ॥

दाणम्मि परे-पेरीए कहा अट्ठमी– ॥ ८ ॥

दाणम्मं निअलोभेण, परो दाहिइ वा न वा ।
कुडुंबपरिदिट्ठंतो निसुणाओ एत्थ सुणह ॥ ८ ॥

एगम्मि नयरे विक्कमो सेट्ठी धणिओ अपुत्तो अत्थि । निक्कीकुसस्स तस्स घरे भज्जा कुड्डा निवसइ । तेण धणिमम निहुणेण धणा वि दव्वं न दिण्णं । एगया तेण चिंतियं– दाणेण विणा परलोगे सुहं न देन्ती' नेमि वि इह भवे धम्मं पायच्छं ति विचारिऊण तस्स घरे गयो।

जच्चतुरगमो अत्थि, तस्स विक्कएण ज दव्व होहिइ, त धम्मत्थ माए अप्पियव्व, एव चिंतमाणस्स कियतो कालो गओ। जया तस्स मरणसमओ आगओ, तया महायण बोल्लविऊण कहिअ "मम मरणाओ पच्छा मम भज्जा एय जच्चतुरगम विक्किऊण ज दव्व पाविस्सइ, त दव्व परलोगसुहाय तुम्हाण दास्सइ, त दव्व तुम्हेहिं सुहकम्मसि निओइयव्व" ति कहिऊण सो मरण पत्तो। तस्स वुड्ढा भज्जा नियभत्तुणो मरणकिच्च किच्चा विआरेइ-"इमस्स जच्चतुरगमस्स विक्कएण रुप्पयसय होही, त तु महायणस्स अप्पण भविस्सइ, मम पासे किं पि न होस्सइ, तओ एव कायव्व जेण सव्वधण मईयपासे चिय ठाइ" एव चिंतिऊण एगो मजारो पालिओ। विक्कयकाले मजारस्स रुप्पयाण नवनवई ठविआ, तुरगस्स एग रुप्पय ठविअ। जो कोवि कयणत्थ आगच्छेज्जा तस्स सा एव कहेइ-'मए एग मजारतुरगा सह विक्केयव्वा, एक्कमेक्क कस्स वि न दायव्व, जस्स गहणेच्छा सिया, तया मजारस्स रुप्पगाण नवनवई दायव्वा, तुरगमस्स एग चिय रुप्पय। एगमेग तु न विक्केस्सामि। लोगा तुरगमस्स गहणेच्छाए आगच्छति, सा पुव्व मजारगहणाय कहेइ, पच्छा तुरग। मजार को वि न गिण्हेइ। एगया एगो वणिओ आगओ। तीए तारिस वयण सोच्चा मजारस्स नवनवइरुप्पय दिण्ण, आसस्स रुप्पय एग दिण्ण। सा रुप्पयसय गिण्हित्ता घरे आगया। महायण बोल्लाविऊण जया एग रुप्पय देइ, तया पुच्छइ किमेव? । सा कहेइ-" तुरगमस्स विक्कएण दव्य रुप्पय लद्ध, नवनवइरुप्पय तु मजारविक्कएण लद्ध। मम भत्तुणा वि एव कहिअ- तुरगमस्स विक्कएण ज दव्व होज्जा, त अप्पियव्व, मए उ त दव्व तुम्हाण दिण्ण। एव वुड्ढाए महायणो वि वंचिओ। त च सच्चदव्व, अइलुद्धत्तणेण उवभोग अकिच्चा चिय, विविहकिलेस सहमाणा, मरणकाले वि झायमाणा अट्टरउद्दज्झाणपरा मच्चु पत्ता। तओ नियएण हत्थेण ज दाण दिण्ण, त परलोअसुहयर होइ॥

उवएसो—

दिट्ठंतं थेर-थेरीए, सोच्चा सम्मयाओ सया ।
मणुयं जं दुह दिज्जा, माणं नेव समायरे ॥ ८ ॥
दाणंमि थेर-थेरीए अट्ठमी कहा समत्ता ॥ ८ ॥

दाणविलम्बोवरिं जुहुट्ठिल भीमसेणाणं कहा नवमी— ॥ ९ ॥

'धम्मकम्मस्स वेलाए, विलंबं न समायरे ।'
कालो दाणं पडिच्छेइ, जुहुट्ठिलकहं सुण ॥ ९ ॥

जुहुट्ठिलमहारायस्स मज्झण्हे जाव पइदिणं दाणं देइ । एगया सो वि निच्चं भोयणं पहुराओ आगओ जुहुट्ठिलरायसाहाए समागओ मज्झण्हसमए पविट्ठो । पंचेव पहरा रायसहाए विसज्जिए । तया धम्मपुत्तेण माहणस्स कहियं— कल्ले दाहिमि । एवं सोच्चा निरासो अमणो गओ । तया भीमसेणेण चिंतियं— न जुत्तो एस विलंबो तम्हा महारायं बोहेमि इअ चिंतिऊण सिग्घं तया जयजयसद्दं कुणमाणो गओ । तम्स पच्चा निमंतणस्स नत्थि । जाव ना वि देमि त्ति चिंतिऊण तया सा भाउजाण । भाउस्स माहणस्स पत्थेइ आणियाइं जम्म ना वि एस चएवेइ जिआ । भीमसेणो वि सव्वं तं हत्थं महारायस्स कहेइ कम्मो । तया तेण हक्कारिय माहणो जयजयसद्दो पहई सुणा । जुहुट्ठिलेण वि सुणिओ । सो चिंतेइ— अज्ज इमो को विसवो जाओ ?' । भीमसेणं जं पुच्छइ । सो अहं निरिक्खिऊण आगओ समागओ भणिउं करेइ— हे महाराय ! अज्ज भीमसेणस्स विजयसद्दं जाणइ । धम्मपुत्तो भीमसेणं आहविऊण पुच्छइ— हे भायर ! अज्ज को

अउव्वो देसो केण विजिओ ?, जेण सय तु विजयढक्क वाएसि '।
भीमसेणेण उत्त--'हे महाराय! तित्थयरेहिं केवलीहिं जोगीहिं महारिसीहिं च जो कया वि न जिओ, सो अज्ज जिओ, तेण इमा विजयढक्का मए वाइज्जइ'। धम्मपुत्तेण पुट्ठ 'किं तए जिअ ?'। भीमसेणो कहेइ--'निव्वलस्स मम अजेअ त जेउ सत्ती नत्थि' पुणरवि पुट्ठ--'तो केण जिअ ?'। भीमसेणो कहेइ--'हे महाराय! तुमए सो विजिओ'। जुहुट्ठिलो पुच्छइ--'कया मए जिओ' ?। भीमसेणो कहेइ--'अज्ज अहुणा य'। जया सो माहणो एत्थ आगओ, तया सो भवतेण उत्तो--'कल्ले दाइस्स'। तओ नज्जइ एगदिण जाव भवतेण कालस्स विजओ कओ। पुव्व केण वि महापुरिसेण कालो न जिओ, तए पुणो सो जिओ। तेण अच्छेरजुत्तेण मया ढक्का वाइआ। नीइसत्थे वि कहिअ--"ज कल्ले कायव्व त अज्ज करणिज्ज, ज अज्ज सायतणे कायव्व, त मज्झण्हे करणीअ, ज मज्झण्हे करणिज्ज, त अहुण च्चिअ कायव्व, जओ मच्चू नहि पइक्खए, अणेण नियकज्ज कय अहवा न कय, तओ सुहाण कज्जाण करणे विलम्बो न कायव्वो"। त सुणिऊण धम्मपुत्तो महारायो निय पमाय जाणित्ता, त घमण सिग्घ बोल्लाविऊण बहु धण दाहीअ। एव दाणे विलम्बो न कायव्वो। उवएसो

वयण भीमसेणस्स, दाणे जुत्तिसमन्नियं, ।
सुणित्ता भविया ! तंमि, पमायं परिवज्जह ॥ ९ ॥

दाणविलम्बोवरिं जुहुट्ठिल-भीमसेणाणं नवमी कहा समत्ता ॥९॥



कित्तिम-नेहोवरिं वुड्ढाए कहा दसमी – ॥ १० ॥

पिया लोए निय-प्पाणा, न पुत्तप्पमुहा जणा ।
मरणस्स पुरओ रम्मो, वुड्ढाए अत्र दंसिओ ॥ १० ॥

एगम्मि नयरे एगा थविरा वसइ । तीए पुत्तो एगो जोव्वणत्थो विज्जइ । सो एगया रोगपीडिओ मरणासन्नो वि संजाओ आसी । सा थविरा वाहिपीडियं पुत्तं दट्ठूण एवं चिंतेइ– पुत्तविओगेण मम जीवणं न होस्सइ, जओ मरणं पिव वरं । तओ सा एवं वएइ– हे जमराय ! मं नयसु, मम पुत्तं न नेस्ससि । तीए मंदिरे पइदिणं एवं वुत्तं तया मरणकाले आगच्छइ तया महिसरूवेण जमराया आगच्छइ, अम्हाणं पासम्मि एवं नेऊण गच्छइ । एगया मज्झरत्तीए पुत्तो रोगपीडिओ अत्थि, वुड्ढा पुत्तमुहं दट्ठूण वएइ– हे जमराय ! मं नयसि, मम पुत्तं न नेहिसि, एवं पुणो पुणो कहयंती सुत्ता निद्दं पत्ता । तया समीवघरस्स महिसो छुट्टिओ समागओ, तीए घरस्स वाडिगादुवारे पविसिऊण ठिओ । सो महिसो गोरसभायणाए कुंडाए भायणस्स अग्गे मुहखेवेण आगच्छइ । वुड्ढा जागरिआ समाणा महिसं पासेइ पासित्ता चिंतेइ– पुत्तस्स गहणत्थं जमराओ अत्थ मं परिहेइ । तया तीए वुत्तं– हे जमराय ! हं तु नीरोगा म्हि, मम पुत्तो रोगपीडिओ मज्झ समीवे पिआ अत्थि, तं गिण्हाहि, हं मुक्का एत्थ किं आगओ सि ? । तीए तं वयणं सम्मं सुणिओ पुत्तो वि सुणेइ, चिंतेइ–मम मायाए कित्तिमो नेहो मसुवरि नेहो अत्थि, सच्चो नेहो नियपाणसरक्खणपरो अत्थि, जया वाह ति नीरोगो होस्सामि तया सिग्घं अन्नत्थ गच्छं समिइस्सामि एवं मुणिऊण कमेण नीरोगो जाओ । सव्वं नईण पडिवन्नओ जाओ । उवएसो–

वुड्ढाए कारिमं नेहं, नियपुत्ते वि पेक्खिअ ।
पयट्टिज्जा निए हिए, 'सत्थभंसो हि मुक्खया' ॥ १० ॥
कित्तिम-नेहोवरिं वुड्ढाए दसमी कहा समत्ता ॥ १० ॥



जोग्गाण संजोगे चोरस्स कहा एगारसी – ॥११॥

निरुद्धदंपईणं हि, संबधो नेव सोहए ।
अओ जोगोऽणुरूवाणं, जहा चोरेण कारिओ ॥ ११ ॥

धाराए नयरीए भोयनरिंदरज्जे एगंमि घरे पुरिसो कुरूवो निग्गुणो अ, तस्स य भज्जा सुरूवा सुगुणा। सा इत्थी धम्महीणपइस्स जोगेण निच्च दुक्खिआ अत्थि। अन्नमि गिहंतरे भज्जा कुरूवा निग्गुणा, तीए य पई सुरूवो सुगुणो। निग्गुणाए भज्जाए सो दुहिओ समाणो कयावि सुहं नेइ। एगया चोरेण ताण गिहाण खत्तपयाणे अणणुगुणजुत्ते दुवे दंपइणो दट्ठूण सुत्तइत्थिदुगाण परावट्टणं कयं। ताण सुजोगो जाओ, ते चिराओ उव्विग्गा तया पसण्णा संजाया। अन्नेण निग्गुणेण भोयनरिंदसहाए गंतूण 'हे नरिंद! मम भज्जा सुरूवा केण वि हरिअ त्ति मम नाओ नायव्वो' इअ जाणाविअं। रण्णा नयरंमि पडहुग्घोसो कओ—'जस्स भज्जा केण वि हरिआ होज्जा, तेण अवस्सं एत्थ आगंतव्वं, अन्नह पच्छा तस्स नहाव्वो होहिइ'। सो चोरो पडहुग्घोसं सोच्चा नरिंदसहाए आगंतूण कहेइ मए अस्स इत्थि हरिऊण सुरूवस्स जोगस्स अप्परस्स दिण्णा। अओ उत्तं—

मए निसिनरिंदेण, परदव्वावहारिणा ।
दुण्हं विहिकओ मग्गो, जोग्गो जोग्गेण जोडिअ ॥ १ ॥

इमं सोच्चा निवेण तोसिऊण सं पसाओ किओ त्ति ।

उवएसो—

तिरिया वि एवं कज्जं, चोरेण कयमण्णहा ।
तं नाऊण महाजोग्गं, जोयए मइमं सया ॥ ११ ॥
जोग्गाए संजोगे चोरस्स एगारसी कहा समत्ता ॥ ११ ॥

भत्तस्स असारयाए नागदत्तसेट्ठिणो कहा दुवालसमी ॥ १२ ॥

अन्नमन्नसरिसा लोगा पेक्खेज्जा न हियाहियं ।
ते हसिज्जंति साहूहिं, नागदत्तो व्व सेट्ठिओ ॥ १२ ॥

सिरिमहुराए नयरीए नागदत्तो नाम महारिद्धिमंतो सेट्ठी परिवसइ। तस्स जसोमई नामा भज्जा अत्थि । सो दिव्वदेहसुहसमाणे भोगविलासेहिं कालं नएइ । पत्थावे कयाइ 'पवरकम्मंमि जुम्मइ' त्ति मणेण तेण चोरियवयपन्न बारहवरिसेहिं सत्तमालओ सत्तपासाओ निम्मविओ । सो पासाओ तारिसो जाओ जस्स पासायस्स सरिच्छं सहस्स वाय वरओ वि न करेज्जा । सिरविहं पासाए चित्तयरे बोल्लाविऊण विविहवर-नारीहिं चित्तकम्मं निम्मिउं समप्पिओ । ते चित्तगरा वि जयमेयावेगस्स सेट्ठिपासायस्स भित्तीओ कुणंति । सम्मया पज्जूसकाले सो सेट्ठी चित्तगरे चित्तकम्मं पेखेइ तया तत्थ कोवि विसायदीणमाणसेहिं सुपुत्तो महप्पा साहू आगओ । सुहुमपरमत्थदंसि वि विसमपरामुहे ते मत्तपत्ते दट्ठूण तेण किंचि सिहसिय मणाओ भणिओ । नागदत्तो वि चिंतेइ—" चित्तयराणं पेरणं कुणंतं मे निरिक्खिऊण हसिरो मुणी किं जाओ ? महप्पणो कयावि निरत्थं

न हसेइरे। मइ एआरिस किं दिट्ठ, जओ हसिऊण गओ। पच्छा अस्स कारण उवस्सए गतूण मुणिं पुच्छिस्सामि" इअ विआरिऊण खणतरे सो चिंतारहिओ जाओ। पुणरवि मज्झण्हसमए सो साहू भिक्खत्थ तस्स घरमि समागओ, तया भुजमाणस्स नागदत्तसेट्ठिणो उस्सगे तस्स पुत्तो कीलेइ, तस्स भज्जा जसोमई भावओ मुणिं सक्कारिऊण निरवज्ज भिक्ख दाहीअ। तया पिउस्स अके रममाणेण पुत्तेण मुत्तिऊण साहिस्स भोयण वत्थ च मुत्तणेण भरिअ। मुत्तण अवसारिअ भुजतो नागदत्तो वोल्लइ–'हे पिए! अणेण पुत्तेण मम भोयण वत्थ च खराटिअ', एव वोल्लमाणे समाणे स साहू नागदत्तमुह पासित्ता किंचि वि हसित्ता निग्गओ। हमत मुणिं दट्ठूण नागदत्तो पिअ कहेइ–"हे पिए! इमा मुणी म पासित्ता हसिऊण गओ, तत्थ किं कारणमत्थि, अहव हसणसीलो सो अत्थि। पहायकाले वि चित्तगराण विचित्तचित्त-करणत्थ पेरत म दट्ठूण हसिओ, अहुणावि हसिऊण गओ"। जसोमई वएइ–'हे नाह! विणा कारण मुणिणो कया वि न हसति, अवस्स किं पि एत्थ पओअण होज्जा'। नागदत्तो आह–'तओ अवस्स इ मुणिस्स समीवे गतूण हसणकारण पुच्छिस्स' एव वोत्तूण भोयण काऊण हट्टे गओ। अवरण्हकाले हट्टे थिओ नागदत्तो कयविक्कय कुणतो अहेसि, तया रायपहे एग बक्कर गिण्हित्ता गच्छमाणस्स चडालस्स हत्थाओ छुट्टिअ सो बक्करो हट्टत्थिअ नागदत्त पासित्ता तस्स हट्टमारूढो, तस्स पच्छा अयग्गहणत्थ चडालो वि हट्ट आगतूण नागदत्त कहेइ—"इमो बक्करो अम्हच्चओ, तेण मज्झ अप्पेह, जइ तस्सुवरि किवा होज्जा, तया तस्स मुल्ल जोग्ग दाऊण गिण्हेह"। चडाल दट्ठूण सो बक्करो भयभतो बें बें करतो हट्टस्स अब्भतरे पविट्ठो। सेट्ठिणो कम्मगरेहिं पि अतो पविसिअ दडेण त ताडिऊण बाहिर निकासिज्जमाणो वि सो अतो अतो पविसेइ। तया नागदत्तो

गये रहाय तस्स अवसस्स कण्णं गिण्हिऊण वसह दुहुआ करावेइ। मित्ता सो चिंतइ—" एवं निक्के जीवे दमंतेमि एवं जीवाणं दमणे मम कत्थ सौक्खं होज्जा, पच्छओ वि सया एवं कुज्जा तेण निस्सम्म चिय वरं"। एवं चिंतिता से से कुमरो सो दुहार भीमगरिओ। निस्सपरिरममाणं, अओ चिय भंमुहे मुंचमाणं, सेट्ठिस्स सम्मुहं चालिऊण ह दयालु ' मुणिवर ' अस्स वाढमस्स हत्थाओ म मयाणमु इअ मग्गस पवमाणं च वकचर गहिऊण चंदाय गओ। तया मोहुग्ग दुहुआ भीमपरिरममाणो वक्करा आसी तया सो सामुपाय वंदिऊणं गच्छन्ता पुण्णवि सेट्ठि पइ किंचि दसिऊण गओ। तया नागदत्तो वि दहुआरं हसिऊण गच्छंतं मुणिं पासिऊण चिंतइ— एसा मुणिवरो अम्म कारणं मिलिओ कारणप वि हसिऊण गओ एस वरस्स किंपि कारणं होज्जा ? तओ उवस्सए गन्तूण हसणकारणं पुच्छिस्सं एवं विआरिऊ हुमो सिंधे गंतूण मोचणं किच्चा हत्थीम उवस्सए गओ। साहु पणमिऊ पुच्छ—"मुणिराय ! अम्म पमाणकाले जिणमार्गे जिणमयकाय भण्णं मे पहुस्स किं कारणं तुम्ह हसिअं। सम्मे ससारिम्म मिष्णधम्मियाइं किं न करेंति ? सो तुम्हेहिं केण कारणेण हसिअं सि ? पुच्छणाय आसाओ हं। मुणी वयइ— हे नागदत्त ! हं समणधम्मेसु वसन्ता मिआइस्स अंत पभाममंगा, जिणमार्गे चिंतिऊणवि करणं वयसि किंतु जासि पसाय मम निर्णतमणे जाव वसिऊणं सि न पलोसि पभा विसयपापूराय परिसा ठिइ पि मए हसिअं । नागदत्ता वि मुणिवयणेण जाउस्सस्स कम्मे पासंता साहु पुच्छइ— हे भयवंत ' मम जीवणकेर्सं चिरंतयस्सि ? । मुणी कहेइ सत्तमी वरससमहि। जम्मवयाओ सत्तमे दिवस सहामस्से हुं मरणं पविविसि' । नागदत्ता पुच्छइ 'किं मंते ! हं समाहिपा वा असमाहिया वा मरणं पाविस्सं ?' । मुणिवरो भणइ— 'नागदत्त ! इओ सत्तमे दिवसे

तव मत्थए सूलपीडा होम्सइ, त असहेज्जसूलपीड तीहिं दिणेहिं अणुभविअ मरण गमिहिसि"। नागदत्तो त सुणिअ, मढप्पाणमग्गाओ अप्पाण हसणपत्त गणितो, अप्पकेरासब्भपउत्तीए धिक्कार कुणतो, नेत्तेहिं असूइ मुचतो साहु कहेइ–"हे भदत! किल सच्चो ह हसणीओ जाओ, दुल्लह माणवभव पाविता मए पोग्गलिअसुहपसत्तेण किंपि परलोगाराहण न कय, निप्फलो गमिओ मणूसा भवो, अहुणा किं करोमि?" इइ वोल्लिऊण रुयतो मुणिपाएसु पडिओ। समणोवि नागदत्त कहेइ–"हे सावग! जह रण्णे महारुक्खो अत्थि, तत्थ सझाए दूरयराओ आगच्छिऊण पक्खिणो साहासु वसति, पुणो पहाए मजाए उड्डेऊण अन्नत्थ मचलति, पुणो मिलेज्ज न वा मिलेज्जा, एव भवे एयारिसो कुडुंबमेलो जाणियव्वो। अप्पणो एव अत्थसाहणाओ सत्थिआ सव्वे ससारिणो जणा नायव्वा, तुम पि अप्पस्स अत्थ साहेहि"। नागदत्तो पढमहासस्स कारण नच्चा अप्पाण अहण्ण मण्णमाणो वीयवार-हसणस्स कारण पुच्छइ। तया मुणी कहेइ–'हे–नागदत्त! भज्जापुत्ताईसु मूढप्पाणो ससारसरूव न जाणेइ, जओ तु ज पुत्त मन्नेइ, जेण पुत्तेण आणदिओ होज्जा, जस्स मुत्तणेण भरियपि भोयण पिय गणेइ, सो तुज्झ पुत्तो परभवे तव भज्जाए जारपुरिसो आसि। नायसरूवेण तए एसो हणिओ समाणो, मरिऊण तव भज्जाए पुत्तत्तणेण समुवन्नो। तु सत्तु पि पिअ पुत्त मन्नेइ, जो तुम पुत्तो जोव्वणत्थो होस्सइ, तया सो तव वरुक्खरजुअसव्वपासायं विक्केहि-इ, तव भज्जाए विस दाऊण मारिस्सइ, तुम्ह पुत्तो कुले कुलगालो होही। ससारिणो एरिसी ठिई' इअ चिंतिऊण मए विइयवारं पि हसिअ।'

एअ सुणित्ता नागदत्तो कहेइ–"हे भगवत! पुत्तीए भज्जाए, पुत्तत्तणेण य उप्पन्नस्स सत्तुणो सरूव जाणिऊण किल भोगेहिं ह वचिओ म्हि। अहुणा मज्झ त कहिज्जाह, ज मए छट्टाओ निस्सारिज्जमाण

चमक्कारं दट्ठूण तुमए हसिअं । मुणिवरो कहेइ — " नागदत्त ! एसो बक्करो पुव्वभवे तव पिआ आसि तेण महापरिग्गहत्तणेण मूढप्पा अणीइए बहुदव्वं संचिणिऊण मरणसमये पुत्तं सव्वदव्वं अप्पिऊण पावकम्मेण एसो बक्करो संजाओ । जस्स चंडालस्स परमे तेण बहुसम्माणत्तणेण अप्पा अप्पयस्स अप्पिओ तव एसो रिक्खमोक्खणं जस्स चंडालस्स इह आगओ । जम्म चंडालं एवं चमक्कारं पासेऊण पपवंमि गच्छंतो अरोमि, तया एसो बक्करो अप्पणो इह पुव ण मिम्मिआऊण चारिसरणं पाविऊण तुम्ह सरणमागओ । चंडालेण चमक्कारं तुं करिओसि अन्नाणेण तुमए न गहिओ ' तेण मए हि नागदत्त ! तइयवारं पि हसिअं । एवं सोच्चा— पिआ पि न रक्खिआ त्ति मण्णंतो धी धी करिंतो मुणिं नाम सिरं पंचमपरे णमिऊण कहेइ — हे भयवं ! अविरम्मिअमं सव्वं गहिऊण चमक्कारं मरण तेसु ! तेणुत्तं— सेट्ठि ! सो तुम्हे एस इमो कहं करेमि ? एवं सुणिऊण अप्पं निंदंतो मुणिवरस्स पासंमि गच्छिऊण पुच्छइ— मम पिआ मरणं पाविऊण कं गइं पत्तो ? । मुणी कहेइ — सरणमागयस्स पिउस्स बरबलमज्झं तुमे रक्खिओ सरणागयरक्खणेण मरणं पाविअ सिरं गओ " । तया नागदत्तो पिउस्स सुगइं सोच्चा सिरचपुलओ वंदिओ मुणिं कहेइ— हे भगवंत ! म कारण मे उत्तरण सव्वविवेगं किं करिस्स ? कहं अप्पाणं तारइस्सं ? हे दयाभंडार ! मम सम्मं दंसेमि दंसेहि पि । मुणिवरो कहइ — हे नागदत्त ! एगदिवसं पि संजमपरा लेण भववीओ जणस्सं वेमाणिओ होज्जा किं पुण सव्वविवेगं !" एवं सोच्चा सेट्ठिस्स असारं भाविओ सव्वदोसेसु निवत्तणं काऊण जिणमंदिरे अट्ठाहिआमहूसवाओ किच्चा सयस्स मुणिवरस्स सगासे संजमं गिण्हीअ । अप्पमत्तो सुद्धय चारित्तं पाली गओ । तस्स सिरिविउ पाउस्सत्तेण असंबद्धा जाया । पुत्तरस्स

चयगमुहावुट्टीए समभावेण वेयणं सहंतो समाहिणा कालं किच्चा वेमाणियदेवलोगे सोहम्मकप्पे देवत्तणेण समुप्पन्नो। एवं आउसस्स सत्तदिणे सेसे वि संजमं पालिऊण आराहगो नागदत्तो जाओ।

उवएसो—

नागदत्तकहं सोच्चा, भवस्सचपयगामिणिं।
'कामभोगाइअं चिच्चा जएह संजमे चरे'॥ १२॥

भवस्स असारयाए नागदत्तसेट्ठिणो दुवालसमी कहा समत्ता॥१२



गेहेसूर-सुवण्णयारस्स कहा तेरसमी ॥ १३ ॥

गेहेसूरा जणा गेहे, नियसामत्थदंसगा।
बाहिरे कायरा ते त्थ, सुवण्णारनिदंसणं॥ १३॥

एगम्मि गामे सुवण्णयारो वसइ। तस्स रायपहस्स मज्झभागे हट्टगा चिट्ठइ। सया मज्झरत्तीए सो सुवण्णभरियं मंजूसं गहिऊण नियघरम्मि आगच्छइ। एगया तस्स भज्जाए चिंतिअं— "एसो मम भत्ता सइया मंजूसं गहिऊण मज्झरत्तीए गेहे आगच्छइ, तं न वरं, जओ कयावि मग्गे चोरा मिलेज्जा तया किं होज्जा"। तओ तीए नियभत्तारो वुत्तो— "हे- पिअ! मज्झरत्तीए तुज्झ गिहे आगमणं न सोहणं ति मज्झ भाइ, कया वि को वि मिलेज्जा तया किं होज्जा?"। सो कहेइ— "तुं मम बलं न जाणासि, तेण एवं बोल्लेसि। मम पुरओ नरसयं पि आगच्छेज्ज, ते किं कुणेज्जा?, ममग्गओ ते किमवि काउं न समत्था। तुमए भयं न कायव्वं" एवं सुणिऊण तीए चिंतिअं—'गेहसूरो मम पिओ अत्थि, समए तस्स परिक्खं काहिमि'। एगया सा नियघर-समीववासिणीए खत्तियाणीए घरे गंतूण कहेइ—'हे पियसहि! तुं तव भत्तुणो सव्वं वत्थभूसं मज्झ अप्पेहि, मम किंपि पओयणं

सत्थि । तीए माणिक्यमणीए अण्णया पिअस्स अभिसारिआ सिरछत्तकरिसपुप्फसुरहसमं सव्वं समप्पिअं। सा मंदिरम्मि सह गया। तया, दइएण मग्गे कम्मा गमा तया सा तं सव्वं सुवण्णसे परिहिय आमि मंदिरम्मि विसंवाम रायपहम्मि निग्गया। पिअस्स छुहा मा हूं सत्यस्स पच्छा अप्पाणं जाणरिअ ठिआ तिमिसपासे सा लण्णवं छु संठाणि मंझूसं च हत्थम मंदिरम्मि सा मज्झंतो इओ तओ पासंओ सिग्घं गच्छंतो जाव तस्स सत्थस्स समीवे आगओ, तया पुरिसंसमणपासम्मि सा सहसा मोसहिऊण मग्गाए तं निम्मच्छर्य" हुं हुं सत्थ मुचाहि, अण्णहा मारइस्सं । सा अवण्णा रविआ मग्गं चरचरंता मे न मारसु, म न मारसु इअ मंदिरम्मि मंजूसं अप्पिआ । तया सा सत्थपरिहिअसव्वस्समग्गणाय करयासम्मि तस्स कण्ठम्मि ठविअम्मि सहाए मसपाडं पि बहुणाइ । तया से परिहिअ-विसद्दमत्तो जाओ । तया सा कण्ठम्मि पि मरणभयं दंसिऊण बहुणाइ । सा अहुणा जाओ इव नम्मो जाओ । सा सव्वं मंदिरम्मि घरम्मि गया, घरदारं पिहिऊण सुत्ता चिअ ।

सो सुवण्णयारो भणइ कंपमाणो इओ तओ भयकम्पा मग्गं आसण्णदीपि गच्छंतो कमेण जया सणसासरिआ छुहसमीवमागओ, तया तम्म जणय पच्छवियम्मि बाहिर पविसाउ तं तु तस्स सुवण्णयारस्स पिउमाणं अप्पिअं। तए नामं केणावि अहं पहरिओ। पिउ एमे हत्थम पासेइ तस्स पिअरस्स एस भीमाणं च पासिऊणं विआरियं जया इं गणचरकारिओ मि, तया जाणंतस्स सह मोत्तिअं पि निस्संचं नम्मयस्स चोरयाणि समुप्पन्ना, एवं जणयसाताणं तुरियं तुरियं गच्छंतो घरस्स समागओ। पिहिअं घरदारं पासिऊण निअम्म-गाम आणवणं इच्छपदे बोइ– हे मणमस्स मायर ! दारं उग्घाडि, दारं उग्घाडि। सा अम्मरसेविआ सुणंती पि असुणंतीव चिय मउणं ठिआ। अइक्कमोवसए सा आगच्छ दारं उग्घाडिअ एवं

पुच्छइ–'किं वहु अक्कोसासि ?'। सो भयभतो गिहमि पाविसिअ भज्ज कहेइ–'दार सिग्घ पिहाहि, तालग पि देसु'। तीए सव्व काऊण पुट्ठ-'किं एव नग्गो जाओ ?'। तेण वुत्त-'अब्भतरे अववरगे चल, पच्छा म पुच्छ'। गिहस्स अतो अववरए गच्चा निच्चितो जाओ। तीए पुणो वि पुट्ठ–'किं एव नग्गो आगओ ?'। तेण कहिय चोरेहिं लुटिओ, सव्व अवहरिअ नग्गो कओ'। सा कहेइ –"पुव्व मए कहिअ–हे सामि ! तए एव मज्झरत्तीए मजूस गहिऊण न आगतव्व, तुमए न मन्निअ तेण एव जाय"। सो कहेइ-'अह महाव-लिट्ठो वि किं करोमि ?' जइ पच छ वा चोरा आगया होज्जा, तया ते सव्वे अह जेउ समत्थो, एए उ सयसो थेणा आगया, तेणाह तेहिं सद्द जुज्झमाणो पराजिओ, सव्व लुटिऊण नग्गो कओ, पिट्ठदेसे य असिणाह पहरिओ। पासेसु पिट्ठदेस, घाएण सह कीडगावि उप्पन्ना। तीए तस्स पिट्ठदेस पासित्ता गाय- चिब्भडस्स रसो बीयाइ च इमाइ सति। भत्तुस्स वि कहिअ–" सामि ! भयभतेण तए एव जाणिय 'केण वि अह पहरिओ, तओ साणिअ निग्गय, तत्थ य कीडगा वि समुप्पन्ना, त न सम्म' तु चिब्भडेण पहरिओ सि, तस्स रसो बीयाइ च पिट्ठदेसे लग्गाइ" ति, तओ तस्स देहपक्खालणाय सा जल गहिऊण आगया नियपइस्स देहसुद्धि करेऊण परिहाणवत्थप्पणे ताइ चेव वत्थाइ अप्पेइ। सो ताइ वत्थाइ पासिऊण धिट्ठत्तणेण कहेइ– हु हु मए तयाच्चिय तुम नाया, मए चिंतिअ–'मम भज्जा किं करेइ ? त्ति ह पासामि' तेणाह भयभतो इव तत्थ थिओ, सव्वावहरणमुवेक्खिअ, अन्नह मम पुरओ इत्थीए का सत्ती ?। सा कहेइ– 'हे भत्तार ! तव बल मए तया चेव नाय, गेहेसूरो तुम असि, अओ अज्जयणाओ तुमए मज्झरत्तीए मजूस गहिऊण कयावि न आगतव्व'ति भज्जाए वयण सो अगीकरेइ। उवएसो —

सुवण्णमारविट्ठं, मथा समग्गं अहावत्तं ।
अपच्चा वा मज्झत्थं पमायेग्गा विवेगिणो ' ॥ १३ ॥
गोरवसुवण्णयारस्स वेरसमी कहा समत्ता ॥ १३ ॥

निद्धणवणिअस्स कहा चउद्दसमी ॥ १४ ॥

'धम्मं एगारसो पाणो' त्ति अप्पं मण्णमेव तं ।
सुमिणे वि अओ लोगा सयट्ठं सहिरे दुहं ॥ १४ ॥

एगम्मि पि नगरे कोइ निद्धणो वणिओ आसि । सो धणत्थं सव्वत्थ भमंतो निग्गओ कत्थ वि कामरासिं पि न लहइ । एगया कत्था अम्हारइ वि निग्गमणविन्नासाय पयवा रत्तीए सयणाए सुत्तो । मज्झरत्तीए तस्स सुमिणं आगयं । तत्थ सो रत्तो अणुवमपमाणं गच्छंतो तत्थ एगस्स रुक्खस्स हिट्ठम्मि उवविट्ठो मग्गं पस्संतो इत्थेव भूमिं खणेइ अयं तत्थ सुवण्णदीणारभरियं घडं पासइ पासित्ता हरिसुप्फुल्लो जाओ । तेण चिंतियं अहो मम पुण्णं जागरेइ, अप्प इयत्तं धणं सव्वं घरं परं नेस्सामि ? इय चिंतंतो सो अत्थि । तया तत्थ एगो आगओ तेण मग्गंमि गच्छंता ते तारिसे उवविट्ठ, इत्थय न भूमिं अव्वं पएइ पुट्ठं त्ति कयासि ? । सो कहेइ- तुम्हे मग्गेण गच्छह, अम्हेण किं ? । स लोगो चिंतइ- किमवि अवस्सं होज्ज तेणेव एसो वणिओ भणेइ । तओ सो तत्थ गच्छा पुच्छइ भूमिए किं अत्थि ? । सो कहेइ- इ न कहेमि । तया सो आगओ गत्ताए उवरिं ठिए तस्स इत्थे भग्गया दूरीकरिय तेण तत्थ दीणारभरिआ घडा दिट्ठो वुत्तं च- हे महाभाग ! तए मम्मं आसरिय समप्पि एस दीणाराणं अद्धभागं देहि तय वयणं सुच्ची । सो वणिओ कहेइ- किं तुम्ह पिउसंतियं धणं अत्थि ? अहं एगं पि दीणारं न दाहिस्सं, तुम्ह अं रोएज्जा ते

कुणिज्जसु'। जोगी कहेइ-'तुम मम य पिउसतिअ नत्थि, तुमए पुण्णुदएण लद्ध, मम किंचि दाऊण सव्व त गिण्हाहि'। लोहधो वणिगो त अप्पिउ नेच्छइ। तया सो कहेइ-'जोगी अह, अगाहिऊण कयावि न वंचिस्सं' ति कहिऊण तस्स सम्मुह उवविट्ठो। तयणतर तत्थ एगो रायसुहडो तेण मग्गेण गच्छतो त दुण्णि तहाथिए पासेइ, पासित्ता कहेइ-'किमत्थ तुम्हे कुणिज्जाह'। तया सो जोगी कहेइ-'एत्थ भूमीए दीणारभरिओ चरू अत्थि, अणेण सो लद्धो, मए किंचि वि धण जाइओ, एसो न देइ, तेणाह अत्थ थिओ'। सो रायसुहडो तत्थ आगच्च वणिअ पुच्छइ-किमेत्थ'। वणिगो कहेइ-'किमवि एत्थ नत्थि, जोगी असच्च लवेइ, तुम्हे तव मग्गेण गच्छह। तया मसको रायसुहडो वाणिअ कहेइ-'इओ अवसरसु' सो नावसरेइ, हत्थे य चरूवरिं ठविऊण तत्थ थिओ। तेणुत्त-'भूमीए ज धण सिया त रायसतिअ होज्जा, न तव, एव कहिज्जमाणो वि जया सो न अवसरेज्ज, तया उवाणहजुत्तपाएण पिट्ठदेसे ताडिओ सो हा! हा! मारिओ ह' ति वुल्लता सुत्तो जागरिओ समाणा सुहडस्स पायप्पहारेण सक्कय किल तस्स सयणे उच्चार-पासवणाइ सभूआइ पासेइ न जोगिं, न सुहड ति। एव सुविणे वि आगया लच्छी अणट्ठ करेज्जा, तया जागरमाणस्स किं किं न कुणेज्जा ?। उवएसो--

तिव्ववित्तपिवासाए, पामित्ता कडुअ फल।
परिच्चएज्ज त लोगा, ! 'सतोसो परम सुह' ॥ १४ ॥

तिव्वधणासत्तीए निद्धणवाणिअस्स चउदसी कहा
सम्मत्ता ॥ १४ ॥



चउजामायराणं कहा पण्णरसमी ॥ १५ ॥

परप्पमोयणे अन्ना-सत्ती नत्थि सुहावहा।
ससुरगेहवासीण, जामायराण मायणं ॥ १५ ॥

कम्मि वि गामे नरिंदस्स रज्जसेट्ठि-मण्णणो पुरोहिओ आसि। तस्स एगो पुत्तो पंच य कन्नगाओ संति, तेण चउरो कन्नगाओ विज्जा-रूवगुणाणं परिणाविआओ। कयाइं पंचमीकन्नगाए विवाहमहूसवो पारद्धो। विवाहे चउरो जामायरा समागया। पुण्णे विवाहे जामायरेहिं विणा सव्वे संबंधिणो निय-निय-घरेसु गया। जामायरा भोयणलुद्धा गेहे गंतुं न इच्छंति। पुरोहिओ विआरेइ– सासूए अईव पिया जामायरा तत्थ भुंजमाणा पंच छ दिणाइं पए चिट्ठउ पच्छा गच्छेज्जा। ते जामायरा खज्जरसलुद्धा तओ गच्छिउं न इच्छेज्जा। परुप्परं ते चिंतेइरे– "ससुरगिहनिवासो सग्गतुल्लो नराणं" जिअ एसा सुत्ती सच्चा पम चिंतिऊण पगाए भित्तीए एसा सुत्ती लिहिआ। एसया पढं सुत्ति ससुरेण वाइऊण चिंतिअं– एए जामायरा खज्जरसलुद्धा कयावि न गच्छेज्जा, तओ एए बोहियव्वा एवं चिंतिऊण तस्स सिलोगस्स हिट्ठंमि पायमिगं लिहिअं–

" जइ वसइ विवेगी पंच छव्वा दिणाइं,
दहिघयगुडलुद्धा मासमेगं वसेज्जा।
स हवइ खरतुल्लो माणवो माणहीणो।" ॥ १ ॥

तेहिं जामायरेहिं वाइअमिमं पायं पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतुं नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ कहं एए नीसारेअव्वा ? भोयणपयरणा एए खरसमाणा माणहीणा संति तेण जुत्तीए निक्कासणिज्जा। पुरोहिओ निय भज्जं पुच्छइ– पियसि जामायराणं भोयणाय कि

देसि"। सा कहेइ 'अइप्पियजामायराण तिकाल दहि-घय-गुडमीसिअमन्न पक्कन्न च सएव देमि'। पुरोहिओ भज्ज कहेइ- 'अज्जयणाओ आरब्भ तुमए जामायराण वज्जकुडो थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो' पियस्स आणा अणइक्कमणीअ त्ति चिंतिऊण सा भोयणकाले ताण थूल रोट्टग घयजुत्त देइ। त दट्ठूण पढमो मणीरामो जामाया मित्ताण कहेइ– 'अहुणा एत्थ वसण न जुत्त, नियघरमि अओ साउभोयण अत्थि, तओ इओ गमण चिय सेय, ससुरस्स पच्चूसे कहिऊण इ गमिस्सामि'। ते कहिंति–"भो मित्त! विणा मुल्ल भोयण कत्थ सिया, एय वज्जकुडरोट्टग साउ गणिऊण भोत्तव्व, जओ–' परन्न दुल्लह लोगे' इअ सुई तए किं न सुआ?, तव इच्छा सिया तया गच्छसु, अम्हाण ससुरो कहिही तया गमिस्सामो" एव मित्ताण वयण सोच्चा पभाए ससुरस्स अग्गे गच्छित्ता सिक्ख आण च मग्गेइ। ससुरो वि त सिक्ख दाऊण पुणावि आगच्छेज्जा, एव कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्ण देइ। एव पढमो जामायरो 'वज्जकुडेण मणीरामो' निस्सारिओ। पुणरवि भज्ज कहेइ– 'अहुणा अज्जयणाओ जामायराण तिलतेल्लेण जुत्त रोट्टग दिज्जा। सा भोयणसमए जामाऊण तेल्लजुत्त रोट्टग देइ। त दट्ठूण माहवो नाम जामायरो चिंतेइ घरमि वि एय लब्भइ, तओ इओ गमण सुह, मित्ताण पि कहेइ–इ कल्ले गमिस्स, जओ भोयणे तेल्ल समागय। तया ते मित्ता कहिंति–'अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि, तेण सीयाले तिलतेल्ल चिअ उयरग्गिदीवणेण सोहण, न घय, तेण तेल्ल देइ, अम्हे उ अत्थ ठास्सामो' तया माहवो नाम जामायरो ससुरपासे गच्चा सिक्ख अणुण्ण च मग्गेइ। तया ससुरो गच्छ गच्छ त्ति अणुण्ण देइ, न सिक्ख। एव 'तिलतेल्लेण माहवो' बीओ वि जामायरो गओ। तइअचउत्थजामायरा न गच्छंति।

'कहं एस निक्कासणिज्जो' इअ चिंतिऊण पच्चूसकाले ससुरो मग्गं पुच्छइ— एस गामाउओ रत्तीए समयम्मि कत्थ आगच्छेमि ?) तया पिया कहेइ— कयाइ रत्तीए पहरे गए आगच्छेज्जा, कया दुतियपहरे गए आगच्छइ' । पुरोहिओ कहेइ— अज्ज रत्तीए तुम्ह दारं न उग्घाडिअव्वं अहं जागरिस्सं । स रोगिणि गामाओ संझाए गामे निक्कसिओ गया । विविहकीलाओ कुणंता गहाई च पासेता, मज्झरत्तीए गिहदारे समागया । पिहियं दारं दट्ठूण दारुग्घा-डणाए उच्चयरेण अक्कोसंती— 'दारं उग्घाडेसु,' त्ति । तया दारसमीवे उवविट्ठो पुरोहिओ जागरंतो कहेइ— मज्झरत्ति जाव कत्थ तुमं ठिआ ? अहुणा न उग्घाडिस्सं जत्थ उग्घाडियदारं अत्थि तत्थ गच्छसु एवं कहिऊण मोणेण ठिआ । तया सा कुविआ समीवत्थिआए तुरंगसालाए गया । तत्थ आसरक्खगामीण कईवयदिवसाइअं तुरंगमसिक्खणसमायरणजलं पाहिऊण सुविआ सुत्ता । तया सिमयरामेण गामाओ चिंतिअं— मम दार मग्गो ठाणं न दट्ठूण । तया से मित्तं कहेइ— हे मित्त ! वरं सुहसमयं कया ? इम मूढपुरिस च पत्तं ? अओ इओ अम्मं चिअ वरं' । स मित्तो कहइ—'एआरिसपुरे वि परत्तं कत्थ ? अहं तु एत्थ ठाइस्सं । तुमं गंतुमिच्छसि जइ, तया गच्छसु' । तओ सो पच्चूसे पुरोहिअसमीवे गओ सिक्खं अणुण्णं च मग्गीअ । तया पुरोहिओ सुट्ठु त्ति कहेइ । एस सो सिमयरामो 'सुसरयाए सिमयरामो' त्ति भणिअं । अहुणा कत्थई केण्णो आमायरो तस्स चिओ सत्ता मग्गं गच्छइ । पुरोहिआ वि केसवगामाउयं निक्कासणं पुत्ति भिआए । पच्चा सिमपुत्तस्स कत्थ किंचि वि कहिऊण कया केसवगामायरो मायव्वं कयविओ, पुरोहिअस्स य पुत्ता समीवे ठिओ गहइ तया पुरोहिओ समागओ ससम्मं पुत्तं पुच्छइ—'वच्छ !

एत्थ मए रुप्पग मुत्त, त च केण गहिअ ? '। सो कहेइ—'अह न जाणामि '। पुरोहिओ बोल्लेइ—'तुमए च्चिय गहिअ, हे असच्चवाइ ! पाव ! धिट्ठ ! देहि मम त, अन्नह त मारइस्स ह ' ति कहिऊण सो उवाणहं गहिऊण मारिउ धाविओ। पुत्तो वि मुट्ठिं बंधिऊण पिउस्स सम्मुह गओ। दोण्णि ते जुज्झमाणे दट्ठूण केसवो ताण मज्झे गतूण मा जुज्झह मा जुज्झह त्ति कहिऊण ठिओ। तया सो पुरोहिओ हे जामायर ! अवसरसु अवसरसु कहिऊण त उवाणहेण पहरेइ। पुत्तो वि केसव ! दूरीभव दूरीभव त्ति कहिउआण मुट्ठीए त केसव पहरेइ। एव पिउपुत्ता केसव ताडिंति। तओ सो तेहिं धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घ भग्गो, एव ' धक्कामुक्केण केसवो ' सो अकहिऊण गओ। तद्दिणे पुरोहिओ निवसहाए विलबेण गओ। नरिंदो त पुच्छइ-" किं विलबेण तुम आगओ सि। सो कहेइ-विवाहमहूसवे जामायरा समागआ। ते उ भोयणरसलुद्धा चिर ठिआवि गतु न इच्छंति। तओ जुत्तीए मज्झे निक्कासिआ। त एव—

" वज्जकुंडे मणीरामो, तिलतेल्लेण माहवो।
भूसज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो ॥ १ ॥ " त्ति

सव्वो वुत्ततो नरिंदस्स अग्गे कहिओ। नरिंदो वि तस्स वुद्धीए अईव तुट्ठो। एव जो भविआ कामभोगविसयवामूढा सय कामभोगाइ न चएज्जा, ते एवविहदुहाण भायण हुंति। उवएसो--

जामायरचउक्कस्स, सुणिऊण पराभव।
ससुरस्स गिहावासे, सम्माण जाव सवसे ॥ १५ ॥

ससुरगेहम्मि भोयणासत्तचउजामायराणं
पण्णरसमी कहा समत्ता ॥ १५ ॥

पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा सोलसमी ॥ १६ ॥

जाव दव्वं निहाणं च, पुत्ता ताव वसंवया ।
पत्ते दव्वे य सच्छंदा ' हवंति दुक्खदायगा ॥ १६ ॥

एगंमि नयरे धणसुंदरस्स चत्तारि पुत्ता संति । सो वणिओ सव्वे पुत्ते परिणाविऊण निअधणस्स चउब्भागं किच्चा पुत्ताणं अप्पिअं । सो धम्माराहणपरो निच्चिंतो कालं गमइ । कालंतरे य पुत्तवहूणं पेमसम्माभावेण भिन्नघरा संजाया । वुड्ढस्स भोयणं सव्वं मासमास वारगेण निबद्धं । पढमंमि मासंमि जेट्ठस्स पुत्तस्स गेहे भोयणाय गओ । बीयंमि बीयपुत्तस्स घरे जाव चउत्थंमि कणिट्ठस्स पुत्तस्स घरे गओ । एवं तस्स सुहेण कालो गच्छइ। कालंतरे वड्ढमाणवयस्स अपत्तीए पुत्तवहूहिं सो वुड्ढो अवमाणिज्जइ। पुत्तवहूओ कहिंति–" हे ससुर ! आवेहिं निअं घरंमि किं चिट्ठसु ?, अम्हाणं मुहाइं पासिउं किं ठिओ सि ? थीणं समीवे वड्ढाणं पुरिसाणं न जुत्तं तव लज्जा वि न आगच्छेज्जा पुत्ताणं घरे गच्छसु एवं पुत्तवहूहिं अवमाणिओ सो पुत्ताणं घरे गच्छइ। तत्थ पुत्ता वि कहिंति– हे वुड्ढ ! किमत्थं एत्थ आगओ ? वुड्ढत्तणे घरे वसणमेव सेयं तुम्ह, देवा वि पडिया अक्खित्तेणं पि गयं सरीरं पि कंपिरमत्थि अन्न हे किंपि पओयणं नत्थि तहा वि गच्छसि " एवं पुत्तेहिं तिरक्करिओ सो घरे गच्छेइ, तत्थ पुत्तवहूओ वि तं तिरक्करिंति । पुत्तपुत्तावि तस्स थेरस्स कच्छुहूयं निक्कासेऊण, कयावि संमुहं पासिउं न इच्छिंति । एवं सव्वे विविहप्पयारेहिं तं वुड्ढं अवमन्निंति । पुत्तवहूओ भायणं वि सम्मं भणेउं न देंति चिंति। एवं पराभविज्जमाणो वुड्ढो चिंतइ– किं करेमि अहं जीवणं

निव्वहिस्स ?' एव दुहुमणुभवतो सो नियमित्तसुवण्णगारस्स समीवे गओ। अप्पणो पराभवदुह तस्स कहेइ, नित्थरणुवाय च पुच्छइ।

सुवण्णगारो वोल्लेइ–" भो मित्त ! पुत्ताण वीसाम्भ करिऊण सव्व धणमप्पिअ, तेण दुहिओ जाओ, तत्थ किं चोज्ज ?। सहत्थेण कम्म कय, त अप्पणा भोत्तव्व चिअ "। तह वि मित्तत्तेण सो एव उवाय दंसेइ—तुमए पुत्ताण एव कहिअव्व–" मम मित्तसुवण्णगारस्स गेहे रुप्पय दीणार-भूसणेहिं भरिआ एगा मजूसा मए मुक्का अत्थि, अज्ज जाव तुम्हाण न कहिअ, अहुणा जराजिण्णो ह, तेण सद्धम्म-कम्मणा सत्तक्खेत्ताईसु लच्छीए विणिओग काऊण परलोगपाहेय गिण्हिस्स " एव कहिऊण पुत्तेहिं एसा मजूसा रत्तीए गेहे आणावि-यव्वा। मजूसाए मज्झे ह रुप्पगसय मोइस्स, त तु मज्झरत्तीए पुणो पुणो तुमए सय च सहस्स च रणरणयारपुव्व गणेयव्व, जेण पुत्ता मन्निस्सति—' अज्जावि वहुधण पिउणो समीवे अत्थि,' तओ धणासाए ते पुव्वमिव भत्तिं करिस्सते। पुत्तवहूओ वि तहेव सक्कार काहिन्ति। तुमए सव्वेसिं कहियव्व–' इमीए मजूसाए वहुधणमत्थि। पुत्तपुत्तवहूण नामाइ लिहिऊण ठवियमत्थि। त तु मम मरणते तुम्हेहिं नियनियनामवारेण गहिअव्व '। धम्मकरणत्थ पुत्तेहिंतो धण गिण्हिऊण सद्धम्मकरणे वावरियव्व। मम रुप्पगसय पि तुमए न विस्सारियव्व, एय अवसरे दायव्व। सो थेरो मित्तस्स वुद्धीए तुट्ठो गेहे गओ रत्तीए पुत्तेहिं मजूस आणाविऊण रत्तीए त रुप्पगसय सय-सहस्स दससहस्साइगुणणेण त चिय गणिंति। पुत्ता वि विआ-रिंति–पिउस्स पासे वहुधणमत्थि, ते वहूण पि कहिंति। सव्वे ते थेर वहु सक्कारिंति सम्माणिंति य। अईवनिव्वधेण त पुत्तवहूओ वि अहमहमिगयाए भोयणाय निंति, साउ सरस भोयण दिंति, तस्स वत्थाइ पि सएव पक्खालिंति, परिहाणाय धुनिआइ वत्थाइ अप्पिंति, एव वुड्ढस्स सुहेण कालो गच्छइ।

एगया आमअमरणा सो पुत्तं भणइ "मम सम्मत्ते
चइय तप सत्तवयाणं किंचि वि धम्मं नाराहिस्सामि"। पुत्त
मंजूसागयपवासए अप्पिहि। सा पुत्ता जिणधम्मस्स सम्मपुण्णा
अगसमीव देइ। अन्नया परमाणसुहज्झाणस्स वि निमित्ते
तप्पसमयं पच्चेइ, मए सव्वणमक्खरेमि पयडयए किच्चा अरहम्मी
पुत्ताय पुप्फपूर्ण च सावरिकज्ज धम्मि- 'इमीए मंजूसाए सम्मे
आगमणप्पहाणेण धम्मं सुहमति। तं तु मम मरणसमयं पच्च
अप्पाणं तुण्हेहिं पडिअव्वं ति पडिकज्ज समाहिए सो पुत्तो घ
पत्तो। पुत्तवि तस्स मणुस्सवियं किच्चा आउपण्णं ति अवसि
बहुमाणापाहए जह तत्य निबिडिम मंजूस उग्घाडिति तत्य तत्थ
मिच्छनिवयआणुपवत्तेहिं पेडिए पाइलमेट ते य तप्पसमयं परमि
जय गुरुहेन अप्प वरिमा चरिमं ति किंच अप्पयरं पि
संसुहाणं अविकमण्ड पच्छं सम्मत्तं। एवं सम्म ह दुक्खिया आया
उवणमो—

पुत्तवि पयनिपहिं, पिअरस्स परामय।
सोचा वह पयोहेया, सुरं पुरहपय गमे' ॥ १९
पुत्तपरामसिमुहरस्स मोतसमी कहा सम्मत्ता ॥ १६

निम्मगानिद्धणस्स कहा सत्तरसमी ॥ १७ ॥

सम्मदीसा न पव्वदे, पुरं वि पडिवं मयं।
संपमए सपेयो वि गमित्ता कुहरं अहा ॥ १७

कम्मि गामे मिच्छत्त निम्मगा अन्ने आहेसि। सो
अवर्ण निम्माहेइ। एगया सो धम्मि गया तत्थ एगे निम्मवरं

विज्जाहरी अ विमाणेण गच्छति । सो निद्धणो तेहिं दपईहिं दिट्ठो । विज्जाहरी त निद्धण दट्ठूण नियभत्तार कहेइ—"हे पिअ ! एसो निद्धणो अम्हाण दिट्ठिपहमि जइ समागओ तया एसो अवस्स सुह पावियव्वो" । विज्जाहरो कहेइ—"एसो निद्धणो निब्भग्गो अत्थि । धणधणो वि निब्भग्गयाए सो निद्धणो होज्जा" । विज्जाहरी कहेइ—"पिय ! तुम किवणो असि, तेण एव कहेसि" । विज्जाहरो कहेइ--"ह सच्च वएमि, हे पिए ! तुम्ह वीसासो न होज्जा, तया एयस्स परिक्ख कुणेमो, जमि पहे एसो गच्छइ, तयग्गओ किंचि वि दूरे पहमि कोडिमुल्ल एय कुडल ठविस्सामि, जइ सो त गिण्हेज्जा तया तस्स इम कुडल" एव कहिऊण सो विज्जाहरो तस्स निद्धणस्स नाइदूरे नच्चासण्णे त कुडल मग्गे ठवीअ । गच्छतस्स तस्स त कुडल जया समीवमागय, तया सो भग्गहीणयाए एव चिंतेइ--"अधो कह चलेज्ज" एव चिंतित्ता सो अधो भविऊण मग्गे ताव चलिओ, जाव त कुडल पच्छा ठिअ । सो निद्धणो सम्मुहत्थ पि कुडल निब्भग्गयाए न पावीअ । त च कुडल विज्जाहरेण गहीअ । एव भग्गहीणा पुरिसा सम्मुहत्थ पि दव्व न पासिंति । उवएसो —

> निब्भग्गस्स कह एयं, सुणिऊण जणा सया ।
> 'सोहग्गकारणे धम्मे, उज्जमेज्जा हियट्ठिणो '॥ १७ ॥

दिव्वकुडलपत्तीए निब्भग्गस्स सत्तरसमी कहा समत्ता॥ १७ ॥

अमंगलियपुरिसस्स कहा अट्ठारसमी ॥ १८ ॥

> अमंगलमुहो लोगो, नेव को वी-ह भूयले ।
> वहाइट्ठेण भूमीसो, अमगलमुहो कओ ॥ १८ ॥

एगमि नयरे एगो अमगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि । सो पुरिसो अत्थि, जो को वि तस्स मुह पासेइ, सो भोयण पि न

सोऊण। पच्छा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुहं न पिक्खंति। नयरे पाव अमंगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ। परिक्खत्थं नरिंदेण एगया पभायकाले सो आहूओ, तस्स मुहं दिट्ठं। जया राया भोयणट्ठं उविसइ, कवलं च मुहे पक्खिवइ तया अखिलंमि नयरे अकम्हा परचक्कभएण हलबोलो जाओ। तया नरवई वि भोयणं चिच्चा सहस त्ति उट्ठाय सेण्णेण सह नयराओ बाहिं निग्गओ। भयकारणम्मि अदिट्ठे पुणो पच्छा आगओ समाणो नरिंदो चिंतेइ— 'अस्स अमंगलिअस्स सरूवं मए पच्चक्खं दिट्ठं, तओ एसो हंतव्वो' एवं चिंतिऊण अमंगलियं बोल्लाविऊण वहाय चंडालस्स अप्पेइ। जया एसो रुयंतो सकम्मं निंदंतो चंडालेण सह वहत्थं गच्छंतो अत्थि। तया एगो कारुणिओ बुद्धिनिहाणो वहाइ नेइज्जमाणं तं दट्ठूणं कारणं नच्चा तस्स रक्खणाय कण्णे किंपि कहिऊण उवायं दंसेइ। हरिसंतो जया वहत्थंमे ठविओ, तया चंडाले तं पुच्छइ— 'जीवणं विणा तव कावि इच्छा सिया, तया मग्गियव्वं'। सो कहेइ— 'मज्झ नरिंदमुहदंसणेच्छा अत्थि'। तया सो नरिंदसमीवमाणीओ। नरिंदो तं पुच्छइ— 'किमेत्थ आगमणपओयणं?'। सो कहेइ— 'हे नरिंद! पच्चूसे मम मुहस्स दंसणेण भोयणं न लब्भइ, परंतु तुम्हाणं मुहदंसणेण मम वहो भविस्सइ, तया पउरा किं कहिस्संति?। मम मुहाओ सिरिमंताणं मुहदंसणं केरिसफलयं संजायं' नायरा वि पभाए तुम्हाणं मुहं न पासिहिरे'। एवं तस्स वयणजुत्तीए संतुट्ठो नरिंदो वहाएसं निसेहिऊण पारितोसियं च दच्चा तं अमंगलियं संतोसीअ॥ उवएसो—

अमंगलमुहस्सेवं, रक्खणं धीमया कयं।
सया तुम्हे सया 'होह मईए कज्जसाहगा' ॥ १८ ॥
अमंगलियपुरिसस्स अट्ठारसमी कहा समत्ता ॥ १८ ॥

बुद्धीए मुल्लंकदंसणे कहा एगूणवीसी ॥ १९ ॥

मईए सयलकज्जेसु, मुल्लं दससहस्सगं ।
रुप्पग किंकरस्सिक्क, जंतालय-नियंसणं ॥ १९ ॥

एगम्मि जंतालए दससहस्स जणा कज्जं कुणंति । एगया सो जंतालओ सहसा निम्सचारो थिरो जाओ । कहंपि न चलेइ, तया जंतालयमचालगो जंतालयचालणनिण्हाय सिप्पिं सिग्घं वोल्लावेइ । सो आगओ जंतालयं पासेइ, पासित्ता कहेइ–' दससहस्स रुप्पगं गिण्हिऊण एअं जंतालयं सचालिस्सं ' । अंगीकुणंते समाणे तेण बुद्धीए जत्थ थले, जेण कारणेण खलिअं अहेसि, तं कारणं णच्चा तट्ठाणं तेण मोग्गरेण पहरिअं मत सो जंतालओ चलिउं लग्गो । तेण सिप्पिणा दससहस्सरुप्पगं मग्गिअं, तया जंतालयाहिवो कहेइ मोग्गरेण ताडणस्स उ एगं चिअ रुप्पयं, दससहस्सं अजुत्तं मम भाइ ताडणं तु मम किंकरो वि कुणेज्जा " । सो सिप्पी कहेइ–" सच्चं, मए मोग्गरप्पहारस्स रुपगमेक्कमेव गहिअं, किंतु एगोण दससहस्सं तु सो मोग्गरप्पहारो कत्थ कीइ जुत्तीए दायव्वो, तं बुद्धीए जाणिऊण गहिअं, नन्नहा " ॥ उवएसो—

बुद्धि-किंकरकम्माणं, मुल्लमाणनियंमणे ।
अक्खाणगं सुणित्तेवं ' होह पण्णाविहूमिआ ' ॥ १९ ॥
बुद्धीए मुल्लंकदसणे एगूणवीसी कहा समत्ता ॥ १९ ॥

धम्मसवणे मिलिच्छस्स कहा वीसइमी—॥ २०॥

' धम्मस्सवणयाऽऽणंदो, सावहाणस्स जायइ ' ।
मिलिच्छस्स पमाइस्स, खारो हरिकहारसो ॥ २० ॥

कम्मि नयरे एगा माहणी मएव धम्मसवणसीला अहेसि । सा सया भट्टस्स समीवं गंतूण धम्मं हरिकहारसं सुणेइ, सुणिऊण जणाणमग्गओ

पसंसेइ—" मज्झ केरिसो हरिभद्दारसो कईव साउ मणोहरो अत्थि !" तीए वयण वरपासपासिआ तस्स मोग्गरविस्स मिच्छित्तेण तुमं। सीसत्तिम सामि हरिभद्दारसमपमत्तं भट्टस्स समीव गओ। तत्थ तस्स तया महुरा हरिभद्दारसं सुणसि। सो वि मिच्छित्तो गामि कोवणमि अवेक्खिअ हरिभद्दारसं सुणेइ। तया तस्स आयंसा न कओ समायम तिद्द पत्तो। तया तस्स एगो कुक्कुरो समागओ। सो भिट्ठपंकस्स तस्स मिच्छारिसमुहे बाहसमाबेण सो पाउ उवं भाउ हुतिउम गमो। सा वाणमसणा चिंतेइ—" तीए माहणीए तम-हरिरसो महुरो साउ अत्थि इमो उ कारो कि ? । तया सो तयाए माहणीसमीवे गच्छा कहइ—"तं तु सया कहेसि जं हरिरसो कईव साउ मणोहरो अत्थि परंतु मज्झ हरिरसो खारो जाओ।" तीए तस्स सव्वं जाणिऊण वुत्तं— तुमं तत्थ निद्दमुहणत्था तेण तव खारो रसो समागओ । एवं पमायओ धम्मपत्ती न मिच्छ अपमत्तेण धम्मो सेवणिज्जो। उवएसो—

पमायओ मिच्छिभट्टस्स, मोहणा एवं कई जया।
'सद्धम्मए सया तुम्हे पमायं परिवज्जह' ॥ २० ॥
धम्मसवणे मिच्छिभट्टस्स वीसइमी कहा समत्ता ॥ २० ॥

अउजपालगस्स कहा एगवीसइमी ॥ २१ ॥

सम्मओ जीविएहि वि, मन्नमाणं न भुंजइ।
मज्झमाणम-पिट्ठं पिट्ठंठो एत्थ बुज्झइ ॥ २१ ॥

एगो अमयपालगो पिडरमाम्मो मज्झिए गओ। तत्थ महाणो पीसं पिट्ठं भोयं दद्धूण तस्स हियये कप्पणा जाया। तओ पाणकत्ते वि भंजइ सो अमयपालगो मज्झेसाय सुणाई पसीओ जहा—"पिट्ठेहि

पाणाइवायाओ ह पुत्त, विरमेहि मुसावायाओ ह पुत्त ' ' इच्चाइ। तओ अच्चतकारुणिओ सो विच्छुअनिक्कासणाए जले पडिअं विच्छु हत्थेण गिण्हइ। तया सो जाइसहावओ तं डंसिऊण जले पडिओ। वीयवारं पि तं जलाओ निस्सारिउं जग्गइ, तयावि सो वालगो दंसिओ। तइयंपि अगणितो तईयवारं पि तं निक्कासिउं उज्जमेइ, तयावि सो दट्ठो, तह वि चउत्थवारं सिग्घं तं जलाओ नीसारेइ।

तया तत्थ एगो रयगो वत्थाइं धुवंतो अहेसि। तं तारिसं दट्ठूण कहेइ–" मुरुक्ख! जयंमि तुम्हारिसा जणा कई संति, जेण एयारिस-दुट्ठविसमइअजंतुद्धरणत्थं तुमं उज्जमेसि "। अज्जवालगो आह— ' तुमं ममं मुरुक्खं कहेसि, तत्तओ नाहं मुरुक्खो, जओ खुद्दोवि विच्छुओ मरणंते वि नियजाइसहावं न मुंचेज्जा, तयाहं मणूसोवि होऊण मम परदुक्खविणासरूवं उत्तमसहावं कहं चएमि ? '। एवं उत्तमपुरिसा मरणंते वि नियउत्तमसहावं न मुंचंति॥ उवएसो—

अज्जवालगदिट्ठंतं, परदुक्खविणासणे।
सोच्चा ' भवेह तुम्हे वि, तह कारुण्णपेसला ' ॥ २१ ॥

परदुक्खविणासणे अज्जवालगस्स एगवीसइमी कहा
समत्ता ॥ २१ ॥

सडियधण्णदाणंमि दाणसीलसेट्ठिस्स कहा बावीसइमी–॥ २२ ॥

जारिसं दिज्जए दाणं, तारिसं लब्भए फलं।
सडियऽण्णपयाणंमि, सेट्ठिणो एत्थ णायगं ॥२२॥

' कम्मि नयरे एगो दाणसीलो सेट्ठिवरो आसि। सो सया विवेगरहियत्तणेण। दाणंमि दीणाणं सडियं कुहियं च जवं देइ। जणा

जाणंता वि सेट्ठिस्स पच्चक्खं न कहिंति। कयाइ सेट्ठिणा नियपुत्तं परिणाविओ। परम्मि पुत्तवहू समागया। सा ससुरस्स एयारिसं चरियं दट्ठूण चिंतइ— मम ससुरो जाया दासी वि नत्थि सं परमप्पाविआरणमुत्तम सहियं दुम्मियं च धम्मं दीणाण देइ, तं ससुरं धम्मं पि गहावेमि"। एगया सा य सहिए समागमे सेट्ठिस्स आई अवसरेण मुत्तगारस्स गेहगमणं आणियं कहिय च— मम ससुरं मोक्खट्ठं आगच्छामो तया तस्स सुए एसा वयणमणी पच्चक्खं दायव्वं सम्मं जं पुच्छइ तया मम नामं कहियव्वं"।

सुत्तगारे वि तया सेट्ठिं मासखमणे समागए तस्स तं चिय गेहे परिवसेइ। सेट्ठी मासस्स य पारिसडण सुत्तगारं पुच्छइ—"कि तुम्हे मम एसा पुच्छा निस्साओ वहूमा दिन्ना ?"। सो कहेइ न जाणामि तुम्हाण पुत्तवहू जाणइ। सेट्ठिणा सा वाहाविया, पुच्छिया य किमेयं दिन्नं ?। सा कहेइ—हे ससुर ! जारिसं दाणं दिज्जइ तारिसं चिय भवंतरे लब्भइ, जओ परलोए तुम्हं पि सरिसं तुम्हं जाणणं देइ, भवंतरे य चिय समुवहिस्सा। तओ अहुणा एयस्स गीयत्थसुपत्तसहियजणवयस्स अज्झाणं न करिस्सइ तया परलोए एयस्स तुम्हं परिसमत्तं दव्वं पावेइ त्ति मए दिन्ना"। एवं सेट्ठिवरो पुत्तवहूए हियवयं सारत्थं सुवयणं सोच्चा विरत्तमणो जाओ तं पच्छिमं तओ निग्गओ वसण्णं दाणे दीणाणं मेहमं धम्मं देइ॥ उवएसो—

दाणसीलस्स सेट्ठिस्स सुणिया चरियं इमं।

दाणं मे तारिसं दज्जा परत्थे—इ सुहं बाहा॥ २१॥

सहियपत्तदाणंमि दाणसीलस्स सेट्ठिस्स वासीसम्मी धम्म

समया॥ २२॥

[illegible]

सोमन्तो जाओ पडिमाओ निम्मवेइ, तासु तासु पिआ कंपि कंपि भुल्लं दंसेइ, कया वि सिलाहं न कुणेइ। तओ सो सुहमदिट्ठीए सुहुम सुहुमं सिप्पकिरियं कुणेऊण पियरं दंसेइ, पिया वि तत्थ वि कंपि खलणं दरिसेइ, 'तुमए सोहणयरं सिप्पं कयं' ति न कयाई तं पसंसेइ। अपसंसमाणे पिउम्मि सो चिंतेइ–'मम पिआ मज्झ कलं कह न पसंसेज्जा ?, तओ एआरिसं उवायं करेमि, जेण पियरो मे कलं पसंसेज्ज। एगया तस्स पिआ कज्जप्पसंगेण गामंतरे गओ, तया सो सोमन्तो सिरिगणेसस्स सुंदरयमं पडिमं काऊण, पडिमाए हिट्ठमि गूढं नियनामाकियचिन्हं करिऊण, तं मुत्तिं नियमित्तद्दारेण भूमीए अंतो निक्खेवं कारेइ। कालंतरे गामंतराओ पिआ समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एवं कहेइ–'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमिए पहावसालिणी गणेसस्स पडिमा अत्थि'। तया लोगेहिं मा पुढवी खणिआ, तीए पुढवीए सुन्दरयमा अणुवमा गणेसस्स मुत्ती निग्गया। तद्दंसणत्थं बहवो लोगा समागया, तीए सिप्पकलं अईव पसंसिरे। तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। तं गणेसपडिमं दट्ठूण पुत्तं कहेइ–" हे पुत्त ! एरिसिआ सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मवगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्लं खुण्णं च अत्थि ?। जइ तुमं एआरिसिं पडिमं निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्नहा"।

पुत्तो वि कहेइ–" हे पियर ! एसा गणेसपडिमा मए कया। इमाए हिट्ठमि गुत्तं मए नामंपि लिहिअमत्थि"। पिआवि लिहिअनामं पासिऊण खिन्नहियओ पुत्तं कहेइ–" हे पुत्त ! अज्जयणाओ तुं एरिस सिप्पकलाजुत्तं मुत्तिं ... ... जओ हं तव

सिप्पकलासु भुल्लं ... ... रणतप्पिच्छो

पायमेयाइयं कराइ। सद्दिया तया माय- मम विज्जा सयाइं गुणइ तया कम्मायं समुद्दिसिअ सद्दी पुच्छइ- एमा कम्म कि गया ? । स मुग्गिआ सेट्ठिपुत्त चिंतइ- एयं किंपि न पुच्छइ पण पि न दइ गामि गु देइ तया अम्म पच्चुत्तरं पि सम्मं पुक्खरं ति चिंतिऊण सेट्ठिपुत्ता कहेइ 'एमा कम्म न गया किंतु गुरु ति वसिआ एयं विम्ह तपक्खम । तए माउच्चा सिग्घं दसंगा ममाओ निवकम्मसमयंमि कहेइ-'किंपि दाइम एयं निस्सारं निस्सारेव ति। तया किमणिसिवं सेट्ठिपुत्तस्स एगं कण्णं दाऊ निक्कामइ। सा सेट्ठिपुत्ता वर गंतूण विसयमाइ कहइ-"तुमंसि मोहमगरा माउया वत्ता तुमि, तुहमि विरत्त चिंता दुवंसि, तेण मए सेट्ठिपराओ जवमाणमयेम एक्कमेव मउ। उवएसो—

सिरिण-सेट्ठिसुओ मायं सम्माणेण विमणिओ।
मरणा अभावदोसत्तु, इमे आ सम्भया इवे' ॥ २१ ॥
सिप्पसेट्ठिस्स तेवीसइमी कहा सम्मत्ता ॥ २३ ॥

xxxx❖xxxx

सिप्पकलाबुद्धीए सिप्पिपुत्तस्स कहा चउवीसइमी-॥ २४ ॥

पिउणा सिक्खिओ पुत्तो पारं जाइ कलाइणो।
सिक्खिओ जइ सो होज्जा जह सिप्पिअंगओ ॥ २४ ॥

आवंतीए पुरीए ईसरचंद सम्मसिप्पिवरो आसीअ सो सिप्पकलंसि सव्वंमि वरिसंमि पसिद्धो होत्था। इमस्स सरिच्छओ अन्नो को वि नत्थि। एयस्स पुत्तो सोमदत्तो नाम। सो पियस्स समासंमि सिप्पकलं सिक्खाओ वि बालं सिप्पकलाकुसलो सो जाओ।

सलिअपाओ तया पडिओ, त सोहण जाय। अन्नहाह तमि पवहणे गच्छेज्जा, तया ममावि केरिसी अवत्था होज्जा, ह पि जले निमग्गो सिया। एव 'तस्स पुव्व दुक्ख पि, पच्छा सुहजणग सजाय' त्ति ॥ उवएसो—

धणिपुत्तस्स दिट्ठत, परिणामसुहावह ।
जाणित्ता 'पत्तकालमि, समभावेण चिट्ठए' ॥ २५ ॥
परिणामसुहावहकज्जम्मि धणिअपुत्तस्स पणवीसइमी
कहा समत्ता ॥ २५ ॥



गयाणुगइगोवरि मयणमच्चुकाणस्स कहा छव्वीसइमी– ॥ २६ ॥

गयाणुगइओ लोगो, परमट्ठ न चिंतइ ।
मयणमच्चुकाणे वि, सव्वे लोगा समागया ॥ २६ ॥

कम्मि नयरे कुभारस्स भज्जाए मह नरिंदरण्णीए सहित्तण अहेसि। कुंभगारभज्जाए एगा गद्दही अईव वल्लहा आसि। गद्दहीए पुत्तो जायइ, किंतु सो जायमेत्तो मरइ। तेण कुभगारभज्जा स व्व झूरेइ। एगया तीए गद्दहीए पुत्तो सजाओ। सो अईव सेयरूवो अत्थि। तीए तस्सुवरिं वहू नेहो अत्थि, तओ तस्स नाम मयणु त्ति दिण्ण। त मयण सम्म पालेइ, एगमि वासे जाए समाणे सो वि मयणो मच्चु पत्तो। तया सा कुभगारी अईव रोयइ। तीए रोयमाणीए तप्परिवारो वि रोवेइ। तमि काले नरिंदभज्जा किंपि कारणत्थ कुभगारीगेहे दासिं पेसेइ। सा दासी तत्थ आगया सपरिवार कुभगारिं रुयतिं दट्ठूण चिंतिअ– 'नूण ... गेहे कोवि मओ, तेण सव्वे रुयति ...' तया

मज्झं मज्झं सिप्पं कुणंता अत्थि, तत्थ तव सिप्पकलावि वट्टेइ हुवीअ। जइ पुणा 'मम सरिच्छो अन्नो' इइ अंसुलोएण कुणइ तयाऽऽवि सिप्पकला न संपविसिइ । एवं सा महरसं सिक्खवण सोऊण पाएसु पडिऊण सिक्खा धम्मसामप्पणजणयनिमावयाइं आमोइ, अंतु स सोमराओ तत्थ आएम्म वरिसेसि सिप्पकलं कारेइ जसमत्ता जाओ ॥ उवएसो—

> सिक्खत्थ सिप्पिपुत्तस्स, मया गुणगणप्पयं।
> 'पुत्ताणं पयर्ण माण्णा, पडिउलं न विंदइ' ॥ २४ ॥
> सिप्पकलायुइदीए सिप्पिपुत्तस्स चउवीसइमी कहा
> समत्ता ॥ २४ ॥

परिणामसुहावहकज्जम्मि भणियपुत्तस्स कहा पणवीसइमी— ॥ २५ ॥

> तयासे दुक्खहेउं वि परिणामे सुहं सुहं।
> भणाणमा मण्णए दुक्खं, जहा सेट्ठिअपुत्तओ ॥ २५ ॥

एगो वणियपुत्तो पञोयणम्म कत्तरिवे गन्तुं तीरिं पइ चलिओ। मग्गे गच्छंतो पक्खिवपाओ पडिओ तेण बहुंच पीडा संजाया। तओ पच्छा निवट्टिऊण बहुंच घरम्मि समागओ समाणो चिंतइ— 'हा किं जायं? जइ पाओ न गमिहस्स तया मम महालाभो होज्जा, अहुणा मम एयम्मि पंगुत्तमवि किं जायं?' एवं विचारंतो दुक्खेण दिवसे नेइ।

अग्गया तेण सुयं— तं पवहणं समुद्दम्मि निवुड्डं, जम्मि आरोहिऊण गमणीय पत्थिओ इ आसि। तया तस्स मणुम्माणंतो संजाओ, जओ इ

पासित्ता 'सुपरिक्खित्ता, कज्ज किमवि साहए' ॥ २६ ॥
गयाणुगइगोवरि मयणमञ्चुकाणस्स छव्वीसइमी कहा समत्ता ॥ २६ ॥

धम्मोवएससवणे पुत्तलिगातिगस्स कहा सत्तावीसइमी ॥ २७ ॥

सद्धम्मस्ससवणे जोग्गा, सोयारा कहिया तिहा ।
पुत्तली-तितयस्से-ह, दिट्ठंतो पण्णविज्जइ ॥ २७ ॥

भोयनरिंदसहाए एगया को वि वइएसिओ समागओ। तया तीए सहाए कालीदासाइणो अणेगे विउसा तत्थ संति। सो वेएसिओ नरिंदं पणमिअ कहेइ— 'हे भोयनरिंद ! अणेगविउसवरालंकिय तुम सहं नच्चा पुत्तलिगातिगमुल्लकरणत्थं तुम्ह समीवे इह आगओ म्हि' एवं कहिऊण सो समुच्चयण्ण रूय पुत्तलिगातय रण्णो करे अप्पेइ। कहेइ—"जइ सिरिमंताण विउसवरा एआसिं इह मुल्लं करिस्संति, तया अज्ज जाव अन्ननरवरसहासु जएण मए लद्धा जे विजयकंकिआ लक्खचंदगा ते दायव्वा, अन्नह अइ विजयकंचिन्हिअ-सुवण्णचंदगमेग तुम्हाओ गिण्हिस्स"। रण्णा ताओ पुत्तलीओ मुल्लकरणत्थ विउसाणमप्पिआओ। को वि विउसो कहेइ—"पुत्तलिगागयसुवण्णस्स परिक्खय णिहसेण हे मणिगारा ! तुम्हे कुणेह, तुलाए वि आरोविऊण मुल्लं अक्खेह"। तया सो वइएसिओ ईसिं हसिऊण कहेइ—"एरिसप्पयारेण मुल्लनिरूवगा जयंमि बहवो संति, अम्स सच्च मुल्लं जं सिया, तं णाउं भोयनरिंदसभाए समागओ म्हि" एवं ... लिगाओ करे गहिऊण सम्मं निरूविंति, परंतु

पुप्फचूलाभगिणीस्स रज्जं ण्हाणं न कीरिहि। तया कुद्धो मरिऊण एवं
पयाइ महईए परिसाए वि अहं एयम्मि सुद्धे कज्जे न समत्थो !
किंचि तुम्हाण ’।

तया अन्नियासुओ चोएइ– रियत्तएयावस्सं सुय कयामि ’ ति
कहेऊण सा पुप्फचूलाओ गब्भिणी करेमि गओ। अन्नं
कयाो एयस्स वत्तु निमारेइ। सुकुमारिईए कयाो निविसेइ।
तया अम्मं पुप्फचूलं कम्मेसु ठियाइ पासेइ, पासित्ता तेसु ठियं नंदं
सव्वं पच्चयेइ एवं सव्वाओ सव्वागारत्ताकेवव निरुवियं तासि सु
ति निण्णीयं। सिरिपीयि मारियसमाय गच्छइ निवस्स पुत्तो अन्न
कयाे ठवियम्मि सुयं— पम्मयाए पुप्फचूलाए सुसोगकवाडियाले
बीयाए एगे कम्मा तयाए सुसोगरलंतरउम्मगमस्मि ”। ते सुं
सोऊण सव्वा सभा अच्चेयमस्सया जाया। वायपसिस्स कहियं–“एवं
सव्वं सुयसुय ममम्मि ते चिय अणुमयं । एयम्मि अन्नीयाो
पुट्ठो– “ सुमए समपमाय-बम्ब-कयायं एयम्मि कहं निस्सं सुं
कहियं ति ?। अन्नीयासे चोएइ–हे नरिंद ! मए पढमपुप्फचूलाए
सुहे अणुट्ठियमेयं कहियं अओ इमीए कप्पवियारे सव्वस्स
परिच्चयिया, सा बीयअणगियारओ विमाया। तया सा एवं
कहिसेइ–“वरिसम्मि अम्मसोयव्व सिसिरा वत्ता पढमो सोयारो एरिसो
होइ जे अप्पवियारं वयणं सुणेइ, सुणित्ता अवरकम्माओ निस्सरेइ,
न य तयणुसारेण पयट्टेइ । बीओ सोयारो पढमपुप्फचूलासरिसो जेओ,
तस्स किंपि सुहं न, जया मए पढमसेवसमसमपुप्फचूलाए सुहं
कयाइ्यमेयं कहियं ”?।

बीयपुप्फचूलाए अन्ने परिच्चया सव्वस्स सुहेण विमाया सा एवं
चोएइ–“ जयमि केवि सोयारा एयारिसा हुंति, जे ड अप्पवियारं
वयणं सुणंति, अहो न रयणीसवि किंतु सव अण्णविवेसु न

पवट्टंति, परिसा सोयारा बीअपुत्तलिगा सरिसा नायव्वा" तओ बीअपुत्तलिगाए मुल्लं मए रुप्पगमेगं कहिअं २।

तइअपुत्तलिगाए कण्णे पक्खित्ता सलागा बाहिरं न निग्गया, परंतु हियए ओइण्णा, सा एवं उवदिसइ-"केवि भव्वजीवा मम सरिच्छा हवंति, जे उ परलोगहियगरवयणं उवउत्तो सम्मं सुणेइरे, धम्मकज्जेसु जहसत्ति पवट्टंते, परिसा सोयारा तइअपुत्तलिगाए समाणा नायव्वा" तओ मए तइअपुत्तलिगाए मुल्लं लक्खरुप्पगं ति जाणाविअं ३।

एवं कालीदासस्स वयणं सोच्चा भोयनरिंदो अन्ने वि य पंडिआ तुट्ठा। सो वइएसिओ पराइओ समाणो तं चउगलक्खं नरिंदग्गओ नेइ। राया तं सव्वं कालीदासस्स अप्पेइ॥

उवएसो—

पुत्तलीतिगदिट्ठंतं, नच्चा सन्नाणदायगं।
'धम्मस्सवणकम्मंमि, हियएण पवट्टह'।

धम्मोवएससवणे पुत्तलिगातिगस्स सत्तावीसइमी कहा समत्ता॥ २७॥

समावराहचोराणं सिक्खाए कुमारमंतिणो कहा अट्ठावीसइमी-॥ २८॥

"जारिसो माणवो होइ, सिक्खणं तत्थ तारिसं।"
समावराहचोरेसु, कुमारस्से-ह नायगं॥ २८॥

पाडलिउत्तनयरे जियसत्तुनरिंदस्स कुमारो नाम चउब्बुद्धिनिहाणो पहाणो आसि। सो जारिसा अवराहिणो आगच्छंति ताण परिक्खिअ, तारिसं दंड [illegible] एगया कोट्टवालेण चउरो चोरा कुमारमंतिणो पुरओ

भणिआ । कुमारसेट्ठी तासिं कुट्टीए परिचत्तं परिकप्प रत्तसरीरं आ-
गमणकारस्स तत्त- तु सइआ वि होऊण परिसं अकज्जं करो तुमं
कि कुणे ? किं तव रूवे मोहेइ ? गच्छसु तुं मा कयावि मं
कुणस्सा " इअ बोत्तूण सा विसज्जिआ । बीअं वारं आगूण सविव
सामसामा परसक्कारपुरस्सरं कुर्ण- ' हे सुयणसुंदर ! सुहसुयण्णे-
गामि तुमए परिसं कज्जं कम किं ते करणा कि नमाया ? गच्छसु
तुमं मसीए किम्सु, मा तुमं पुणो असिसु ।त ? " सो तं विसज्जिआ ।

तइअं वारं सेवगनिउत्त, कत्ताए पाविउं कुमाराओ पयम्मो वि
हाउम्मो इत्त मसिरक्खभर वक्कर्णेण निक्कासिआ । चउत्थ तु
पच्चासुइं मिण्णा गहरमारोहिऊण सम्मसक्कारेहिं भमाडिआओ ।
नयररक्खस पगास भिन्नाभिन्नरक्ता वगाईं क्खे दिण्णा कुमारसेट्ठिणा वि
सव्वपरिवारसहुआ सव्वे सहायणा जाणा । तेहिं दिअसावसाणं नागर
परम्म चाउरम रि पास वि निरवराहं रण्णा वरपुरिसो पसिआ ।
पगपवारंपि गए सा वरपुरिसा सम्मागाओ समग्गो नरिंद वयइ- हे
महाराय ! पढमो कोमलस्स वक्खेण वक्कलिआ सत्ता, रोइ तम्मूल,
सव्वं पि रणकेण असहंतो वीर ईसी पिमिउण वल्लं पत्तो । बीओ
पयमस्सावरए हिरकमारिओ सो वइ कयावि मइ न दक्खिउं-
सि कुड्ढिय मियसं गआ ।

तइआ जो सहासमज्झ तासिआ सो मिआओ वीदिरं मत्तु न इच्छआ ।
चउत्थो य जो गहरमारोहिऊण नयरमज्झमम्मअडो सो य गहरवरि
परसुइपुसपेसिअ नयरं सम्मं भमाओ पिभिलावमारणस्सेहिं य पसाई
डिंडिमसाआ निरूवा निवपरसम्मीव समागओ तथा सो तम्मो-
वसासरम्मसमयसिंसमसं वरइ- आउपाह वणसिद्धुरिमाअसरा
ससिरे सिमं सामपिसिरं तओ तुमं वरं सिम्मं रूपं कुमिसु इत्त
वरपुरिसकहिअवुत्तंतं सुणिऊण सव्वे कुमारसविसम कुमी पसंसन्ति

उवएसो—

सब्भाव च असब्भाव, चउचोराण पेक्खिअ।
तुम्हे कुमारमंतिव्व, 'होह तह परिक्खगा' ॥ २८ ॥
ममावराहचोराण सिक्खाए कुमारमंतिणो
अट्ठावीसइमी कहा समत्ता ॥ २८ ॥

तरणब्भासे सेट्ठि-नाविआणं कहा
एगूणतीसइमी – ॥ २९ ॥

सुट्ठु नाणं सुहा लच्छी, रमणी सुदरी तहा।
निप्फल त विणा धम्मं, एत्थ सेट्ठिस्स नायगं ॥ २९ ॥

एगया कोवि वणयतो सेट्ठी नावमारुहिऊण समीवदीवं वच्चतो अत्थि। तस्स पासे महाघडिआलय वट्टइ। नाविगो घडिआलयं दट्ठु तत्थागओ। सेट्ठिं पुच्छइ–' हे सेट्ठि ! अहुणा कई समओ सजाओ ?'। सेट्ठिणा वुत्त–' किं तुम घडिआलय न पासासि ?'। पासामि अह, किंतु घडिआलयनाणकला मम नत्थि। पुणो वि सेट्ठिणा पुट्ठ– 'ववहारनाण तुमए सिक्खिअ न वा ?'। तेणुत्त–' दीणस्स मम को सिक्खण देज्जा ?'। सेट्ठिणा भणिअ–' जइ तुम न भणिओ, तेण तव जीवणस्स चउत्थभागो मुहा गओ'। पुणरवि सेट्ठिणा पुट्ठ –' किं तु परिणीओ सि न वा ?'। तेणुत्त–' कट्ठेण जीवणनिव्वाह करोमि, एरिसाए दीणावत्थाए मज्झ को कन्न दास्सइ ?, कयावि कोवि कन्न देज्जा, तह वि दुक्खेण उयर भरतो हं तीए निव्वाह कह करिस्सामि ?'। सेट्ठिणा उत्त–' इत्थि पुत्त च विणा संसारे किं सुह होज्जा ?, अओ तुम्ह अद्धजीवण निप्फल गय'। पुणरवि सेट्ठिण

पुट्ठं- हे सुयण ! तव पासम्मि तरणसाहणं अत्थि न वा ! । तेणुत्तं मम भासाणाणं विणा किमवि साहणं नत्थि' । सेट्ठिणा वुत्तं- "तुमए पओअणसिद्धिं निप्फलं गयं । एरिसतरणाय भिन्नभासा समागय सएगा अन्नन्नसमासमि पत्तेगो सट्ठो पवमुहो, पच्छामि तवसिक्कारमाणुसा हसइ त्ति साहण नाविएण वुत्तं- हे सेट्ठि ! तुम तरणसाहणं अत्थि न वा ! । सेट्ठिणा कहियं- हे सव्वं अहं जाणामि, किंतु तरणसाहणं मम नत्थि । तया नाविगो आह- हे सिरिसेट्ठि ! तुम्हाणं इमं पवाहं मम नाईणं नत्थि अईव पवेसणाय पवाहं समीववट्टिचित्तस्स पुट्ठिस्सइ सव्वसिक्कार य हविस्सइ, मम पावाणजीवणं गयं तुम्ह उ सव्वं जीवणं गयं मम हि तरणसाहणं अत्थि तेण समुद्दस्स पारं पाविस्सं तुमं एत्थ समुद्दे बुड्डिस्ससि एवं कहित्ता सो नाविगो सिक्कप्पसिक्खिअणाणाय नेयर्णकिच्चाय समुद्दे पविसिऊण तरिऊण पारं पत्तो । सेट्ठी य तरणणाणाभावा समुद्दम्मि बुड्डिओ । एवं सत्थाणो पवासो सिक्खिऊण जिण धम्मसमुद्दतरणाय धम्मक्कमं न सिक्खिआ सो सेट्ठी विव भवसमुद्दे मज्जइ ॥ उवएसो—

सरीरमाइ सव्वं पि, भीमा दुक्खस्स नामिओ ।
संसारो सम्मया दुवो तं तरंति महेसिणा ॥
धम्मनाणासीरीपस्स सेट्ठिणो नत्थिमक्खाणं ।
छहम्मं 'तरणब्भासे भावओ उज्जमेह मे ॥ २९ ॥

तरणब्भासे सेट्ठिणाविभत्तं एगूणतीसइमी कहा समत्ता ॥ २९ ॥

तिव्वपावोदए कालसोअरिअस्स कहा तीसइमी –॥ ३० ॥

घोरहिंसापमत्ताणं, समाही न कया सिया।
कालसोअरिओ नाय, मच्चुकाले महव्वुओ ॥ ३० ॥

रायगिहे नयरम्मि सेणिओ नाम राया आसि। तस्स नयरे कालसोअरिओ नाम सूणायरो अत्थि। सो अभव्वो दिणे दिणे महिसपंचसयं वहेइ। तओ तेण घोरहिंसाए सत्तमीनरगपुढवीओ वि अब्भहियं पावमुवज्जिअं। चरमकाले सो सोलसमहारोगेहिं गहिओ। अइतिव्वासुहकम्मोदएणं सो पंच वि इंदियत्थे विवरीए वेएइ, सुहं पि असुहं जाणेइ। तस्स सुलसो नाम पुत्तो अभय-कुमार-मित्तस्स संगेण धम्मिट्ठो सजाओ। सव्वायरेण पिउस्स पडियारं कारेइ। तह वि सो कत्थ वि रइं न लहेइ, ताहे सुलसो निमित्तं अभयकुमारं पुच्छेइ। अभयकुमारो भणेइ–"हे भद्द! तुम्ह पिउणा जीवहिंसाओ घोरपावं समज्जिअं, तं असुहकम्मं इह भवे उइण्णं, ता इंदियाणं जं पडिकूलं तं कुणसु–"कंटकसेज्जाए एअं ठवेहि न उ सुहसिज्जाए, असुइमलमुत्ताइणा विलिंपेसु मा चंदणेहिं पियावेसु खारतिक्खदुग्गंधनीराइं न उ साउजलं, जेण सो रइं पावेइ"। सुलसेणावि तहा कए पत्तपरिओसो कंचि कालं जीविऊण मच्चुं पाविअ सो कालसोयरिओ सत्तमनरगपुढवीए समुप्पन्नो। सयणेहिं तस्स पए सो सुलसो ठविओ, भणिओ य अंगीकुणेहिं नियजणगाजीविगं। सो वि निरयपियराणुभूयं दुहं संभरंतो 'न तरामि पावफलाइं सोढुं' ति जपमाणो नेच्छेइ। सयणा भणंति–'पावं अम्हे विभागेण गिण्हिहिमो'। तओ तेसिं बोहणाय सुलसेण तिण्हकुहाडेण निअपाओ निद्दयं ताडिओ।

भावसंवेग च धम्मिया जणओ भ्रा ! भा ! विप्पवाइ पुत्ता, बज मेरे लीनइ, जेण मे सुहं हाइ । भवयाहिं भणिअं- "पुत्त ! पुण्ण धीम्मस्स जा अभ्यासु सक्कमेइ किं तु भावेसि एयावा जेण बालसंकीर्ण पुरं बलसि मक्कमेइ "। तओ सुक्कमा कहेइ- को वि मज्झ 'कुसे पुण पावं विसइस्सामो' त्ति एवं तत्थ पुत्त संवाविष्पमा पुन्नित्त विश मवण्ण । धीमईसाओ निरओ मा सुम्मकुमारो अणप्पुण्णेण मच्चवो महावीरस्स समीवे सावगधम्मं गहीआ । विहिणा सम्मं पालिऊण देवलोगं पत्ता ॥

उवएसो-

> मणवयसुरकम्मस्स फलमरय परत्त य ।
> भाविया नियमिसाओ निरमेसु सुयं तओ ॥ २० ॥

सिप्पपवोसए कामसोभरिअस्स वीसइमी कहा समत्ता ॥ २० ॥

सुपत्त-दाणभावणाए सालिभद्दपुव्वभवस्स कहा इक्कवीसइमी-॥ २१ ॥

> पत्ते दाणमणे अवि पुण्णमज्झंमि भावए ।
> सालिभद्दो जहा सत्य सुही जम्मंमि आगए ॥ २१ ॥

कम्हि नयरम्मि नयरसेट्ठी आसि । तस्स चत्तारि पुत्ता चउरो य बहुसाओ संति । सो सेट्ठिवरो वयमिमरो वि करन्तो कयाई बहुय कयाइ धम्मं न कुण । एगया चत्तारि पुत्तवहुआ निमसीलिव(पुत्त) सिमाई सम्मिलिय विअरंत किंचवाओ अओ पुण्णपसमण इच्छ तओ बहवमेयवाहिं गच्छंतीणं तासिं बहुपुण्णहय एगा पुत्तवहू सेवाढिआ वडिआ य । तीए पुत्तस्स पभुए पसेहि !

आहूमणेहिं वित्तेहिं घेसेहिं च मयधा तुम ?, तुम्ह पिउणा ससुरेण वा किं दीगदुहियाण नाण दिण्ण ?, नयरमि किं जमकित्तिकम्म कय ?, जेण एव न्हुत्तणेण चलेसि, गव्वधा म पि समुहत्थ न पेक्खामि ?' एवं उत्ता ममाणी जिणमदिरे चेइआइ थदित्ता, घरमि आगन्च कोवधा कोवघरमि ठिआ, परिवारेण मह नालवेइ। तया तीए पिएण जेट्ठपुत्तस्स कारण पुट्ठा, कारण कहिअ, त मान्चा तेहिं चउहिं पुत्तेहिं वियारिअ-' अम्हाण पिआ लोहथो ' दूरे सद्धम्मकज्जमि दव्वयओ नाइजेमण पि न करेइ, तेण अम्हाण जमो कित्ती अ कुओ ?, अओ केण वि उवाएण नाइभोयण कायव्व। पिउवच्छलेण लहुभाउणा वुत्त-' अह पियर कज्जवावारे तह ठविस्सामि, जह सो नाइभोयण न जाणिस्सइ, तुम्हे वि मव्वे नाइजणे आमतिअ वग्गणे सव्वे भोयाविस्सह। तेहिं अणुमत्र। अण्णमि दिणे यमि महूसवपसगे नाइजणा आमतिआ, घरगणे रमवई पउणीकया, मव्वे नाइजणा भोयणत्थ समागया, तमि समये लहुपुत्तेण पिया कयविक्कयवावाराइकज्जेण रुंधिओ अहेसि। ममागयलोगहलबोलमवणण पियरेण पुट्ठ-' किं अज्ज जणकोलाहलो सुणिज्जइ ??'। लहुपुत्तेण वुत्त- किंपि न, कारणपसगेण समागया होज्जा। सन्दिहाणेण पिउणा उत्थाय वायायणाओ वाहिरमवलोइअ, तया भुजमाणा णाइजणा दिट्ठा, चिंतिअ च किल पुत्तेहिं ह वचिओ म्हि !, ' हा ! हा ! धिद्धि म, किंपि मए सुकय हत्थेण न कय, एव अधिइमावन्नो मो जिमतलोगपतीए वाहिं दूरट्ठिअ साहुजुगुल भिक्खत्थ भममाण पासेइ, त दट्ठूण तस्स सुहभावो जाओ, विआरिअ च " धन्नो ह, ज एअ मुणिजुगल मम दिट्ठिपहमि आगय, इओ गतूण मुणिवराण पाए पणमिअ सुद्धमाहार देमि ", एव विआरयंतो सुपत्तदाणदिण्णमणा मो नीसरणीए गच्छतो खलियपाओ सहसा हिट्ठम्मि भूमियले पडिओ ... पाणा तक्खणं मच्चु पत्तो। आहारदाणवियारणाए

महामहुमाफ स्ा अमरिगते संगमो नाम पुत्तत्तणेण समुप्पन्नो। तत्थ महूसवे तस्स गेहे माऊए पुण्णं मणिऊण पायसमत्र रंधियं। तम्मि पुत्तस्स थालम्मि खीरं परिवेसिऊण पत्राकल्ला कज्जहिं घरे गया। तया से संगमो मासक्खमणे पारणिर्जु तया तस्स पुण्णुदएण कोवि पत्तमास-मासिअमपक्खमणो पारणाए निमित्तं समागओ तत्थ आगओ। सो संगमो त महातवस्सि पासेइ, पासित्ता पुण्णभावपरिणामपत्तस्स तस्स आहारदाणपरिणामो जाओ। तस्स महामुणिणो तं सव्वं पि खीरं साहुं भत्तिसंजुत्त सुहभावेण सव्वं पायसं अप्पेइ। पुण्णो सो मरिऊण सुपत्तदाणप्पभावेण रायगिहे नयरे गोभद्दसेट्ठिणो भद्दाभारियाए सालिभद्दो नाम पुत्तो संजाओ। तदुवरि—

सालिभद्दपुरा जम्मं, पुण्णापुण्णविसुण्णयं।
मोक्खा सुपत्तदाणम्मि उज्जमेह दिणे दिणे'॥ ११॥
सुपत्तदाणमाहप्पाए सालिभद्दपुण्णमयस्स इक्कतीसइमी
कहा समत्ता ॥ ३१ ॥

दसण्णभद्द-रूव-बुद्धि-पुण्णाण मुद्धम्मि निवाइपुत्ताण कहा बत्तीसइमी ॥ ३२ ॥

दसण्णभद्द–रूव–विण्णाण, पुण्णाणं चोत्तरोत्तरं।
मुद्धे नेयं इह लोगे रायपुत्ताइणो कहा ॥ ३२ ॥

कम्मि वि नयरे निव-मंति-सेट्ठि-सत्थवाहाणं चत्तारि पुत्ता परोप्परमित्ता समाणवयविण्णो आसि। ते अन्नोन्नमेत्ता खणमेत्तं पि विरहं न सहंति। अन्नया ते चत्तारि– सेव देसंतरम्मि गंतूण अप्प–

वे मिलिया पहिट्ठमणा परोप्पर पभणंति—कित्तिअ अम्हाण मामन्थ ?,
ओ ण्य भणति—

दक्खत्तण पुरिसस्स, पचग महयमाहु सुदेर ।
बुद्धी महस्समुल्ला, सयसहस्साइं पुण्णाइं ॥ १ ॥
सत्थाहसुओ दक्ख–त्तणेण सेट्ठिसुओ य रूवेण ।
बुद्धीइ अमच्चसुओ, जीवइ पुण्णेहिं रायसुओ ॥ २ ॥
उवएसो– दक्खत्ताइगुणग्गामे. मच्चा पुण्णमिह नरं ।
लाहट्ठ सयय तम्म, उज्जमेज्जा सुहेसिणो ॥ ३२ ॥
दक्खत्त-रूव-बुद्धि-पुण्णाण मुल्ले निवाइपुत्ताण बत्तीसइमी
कहा ममत्ता ॥ ३२ ॥

परिणयबुद्धीए वुड्ढ-तरुणमंतीणं कहा तेत्तीसइमी — ॥ ३३ ॥

' नाणं निरत्थय तस्स, जस्स नाणुभवो मणा ' ।
महीवस्सेह दिट्ठतो वुड्ढतरुणमंतिणो ॥ ३३ ॥

एगस्स महारायस्स दुविहा मंतिणो, वुड्ढा तरुणा य । तरुणा भणंति एए वुड्ढा मइभसपत्ता, न सम्म मंतिणो त्ति, ता अलाहि एएहिं, अम्हे चेव पहाणा । अन्नया तेसिं परिच्छानिमित्तं राया भणइ " भो सचिवा ! जो मम सीसे पण्हिप्पहार दलेइ, तस्स को दंडो कीरइ ? " । तरुणेहिं विआरसुन्नेहिं भणिअ–" किमेत्थ जाणियव्व ?, तस्स सरीर तिल तिल कप्पिज्जइ, सुहुयहुयासणे वा छुब्भइ " । तओ रन्ना वुड्ढा पुच्छिया । तेहिं एगते गतूण विआरिअ–' नेहप्पहाणा

तयणंतरं समणपुत्तो कुविपवरम्मि निययघरम्मि गओ तत्थ विसय सुहाइं भुंजिउं ठिओ। तत्थ य मायाओ मम पुत्तं चेव आहुविया। तहिं समणो भणिओ सो मायाए 'किमयं पुत्त?' "अन्नाणं मया अणुसरिमं पुत्तम्मि समाणं देमंतरे मरणं पत्तो तओ न आगओ- एस मम अपच्चं एयारिसं। तहा निमाडिसाणा सव्वं णाइ- मज्ज मणुस्स वणं मम्मं पिय् जओ मयं पुत्तो मए आसी, ता मीइ एस पुत्ता दविणं पि वीइ निच्चम होइ। एयस्स विसय- मिच्छत्तस्स तुम्हं समीवे मायपायं अन्नाण अणुणाए अम्गो,ता अज तह एसो विसाओ परिच्छिउज्जउ तस्स अच्छु। समणेण पुत्तं पत्ते तत्ते मीय राउण मासियं- एस विसाओ अम्मो अर्थ छिंदिसतइ तुं इम भणिरे समये तया समणपुत्ताय भणिअं- हे समणवर! मा तुम्हाणमपुण्णं सिया, तया एवं विसाएं अहं तु छिन्नमि। अणुसरिमिय तेण समणपुत्तेण ता ताव मब्भिलाउ भणिआ- एत्थ मम पुत्तं न पत्तुवेइ। ताहिं तया तम्म उवणीयं पत्थम अमस्स वा विमाण कया पुत्तस्स कुमारग्गभावाय माणिमेमे गाय करयतं आरोविअं तम्म सुमसाणी न भग्गइ छिन्नइ एस विसाउ पि निविसियमणेण भरिआ सपइ- दिग्गउ विमाणेण पुत्त पिय च मा होउ सुमसरणं? समणपुत्तस्स नाम तस्स तुमा इमाइ न इमीए निग्गाहिया तया सा विसाओ। पुत्ता वणं व मणवणम्मीण आसियं। एवं स मंतिवरो तस्स सरिसगुणेण मेत्तुओ न समणपुत्तं निष्पमीरिए मेइय रमियत्तं सहस्सं तस्स दिण्णं। एत्त वाहय दिवसे रायसुओ अइ मम रमणसेयपिउण्णाइं सवि तो नाई तप्पयतु इम विसमाय भयरसाओ निग्गओ। कइ तस्सुप्पयस्स तयत्तो तप्पुरपत्ता अप्पुणे कामिनिसमेव एवंत मसुमणओ। रयणोमुरिसस्स गयसम पवत्ता तत्थ नेमित्तिअपरओ से रायसुओ तस्स रायम्मि दट्ठूणो गओ चत्तारि

अवमाण करेइ, नेहरहिया सा जेमावेइ, तह वि मूढो त चिअ पससेइ, एवं कालो गच्छइ। एगया जुण्णभज्जाघरम्मि भोयणट्ठाए सो समागओ, सा सब्भावपुररस्सर सक्कारिऊण तस्स माउ सुरस पक्कन्न थालीए परिवेसेइ। तह वि सो वएइ-"तुमए मोहण रविअ न, एय मज्झ नीरस आभाइ, तओ तीए नवीणाए भज्जाए घरम्मि गतूण किंपि वजण आणेहि, जओ तेण वजणेण सह एयमन्नपि मम रोएज्जा" तओ सा मूढ पिय नाऊण नवीणप्पियाए घरम्मि वच्चिऊण पिअस्स हेउ साग मग्गेइ, कहेइ-"मज्झ रधिअमन्न पिअस्स न रोएइ, तओ माउयर किंपि वजण देसु" तओ दुट्ठा सा गोमय गिण्हिऊण तेल्लमिरिआईहिं वग्धारिऊण देइ। त च सा गहिऊण घरम्मि गतूण पइस्स देइ। सो भुजमाणो त वहु पससतो मूढो भज्ज कहेइ- "केरिस तीए साउयर रधिअ, तुमत्तो वि अईव सोहणयर निम्मिअ" एव रागवो सो असुह पि सुह मन्नमाणो हरिसेण भुजइ। जुण्णाए भज्जाए 'एय छगणनिम्मिय वजण' ति मच्च कहिय पि सो मूढो न मन्नेइ॥

उवएसो—

> दिट्ठिरागेण अधस्स, दिट्ठत नाणदायग।
> नच्चा त सुहमिच्छतो, दूरओ परिवज्जए॥ ३४॥
> अइरागधे धणिअस्स चउत्तीसइमी कहा समत्ता॥ ३४॥

अणासत्तजोगम्मि जस-सुजसाणं कहा पणतीसइमी-॥ ३५॥

> अणासत्तयजोएण, कम्मबधो न जायए।
> अस्सू तत्ताऽवोहट्ठ, कुलपुत्ताण नायग॥ ३५॥

महोरेणं पिव सव्वं [illegible] तं तीए पूया चेव कीरइ' एवमेवं एव समयं पि निच्छिऊण भणियं-" जं मज्जुमवेरिसं महापारस्स, तस्स सरीरं समप्पसमाणं कंचणरयणचारेणं करेमि आसि[illegible] "। मुणेव भणियं रन्ना माउ विमाणं ति रन्नो सव्वदंसिणो य [illegible] पमाणीकया । जओ सीलिमपुरिसस्स वयणं अहियकालेसु वयणं पि न पवट्टइ ॥ उवएसो

बुद्धवरस्समंतीण, नायगं नायगम्मियं ।
सुणिऊण ' नियाणिणा सया [illegible] मए ' ॥ २२ ॥
परिसपयुत्तीए बुद्धवरस्समंतीणं तेत्तीसइमी कहा
समत्ता ॥ ३३ ॥

अइरागपघणियस्स कहा चउत्तीसइमी—॥ ३४ ॥

मन्नाइ रागमूढप्पा अहियं पि मएण हियं ।
[illegible] कयं सव्वं साउयं मन्नए पिओ ॥ ३४ ॥

कम्मि वि नयरे एगो वणिओ आसि । तस्स कुच्छि मज्जाओ आसि । पाय पइसम्मम्मा पुण्णा वणए य मणीया सा पइणि सीलण वट्टइ । बीसवमाणी परपरं विसेसं पावमाणं य पुव्वंतीया कयाइ दट्ठूण तम वणिज्ज विनयपएमे यओ उवेयाणी । सो सूरस्स नियस्स पयमाए पुव्वं पासइ पुण्णाए तस्स निरिक्खइ । पवीण आएसेण कयं परे वसइ । कया पुण्णाए पयणो आगच्छइ, तया सा पर अहं सम्पावेइ मसिणेहं पुव्वकं सरसं भोयणं भुंजावेइ तह वि सा भोयणतेणं पिव वट्टेइ-" तए इमं न रंधियं पुव्वकं नीरसमन्नं रंधियं न बत्थहीं ? पुव्वयो सा मणीया पिया एवंवारं सरसमन्नं निम्मवेइ " एवं से दाणोति पुव्वं भग्गं निणा । मणीया कयाइ

अवमाण करेइ, नेहरहिया सा जेमावेइ, तह वि मूढो तं चिअ पसंसेइ, एवं कालो गच्छइ। एगया जुण्णभज्जाघरंमि भोयणट्ठाए सो समागओ, सा सब्भावपुरस्सरं सक्कारिऊण तस्स साउ सुरसं पक्कन्नं थालीए परिवेसेइ। तह वि सो वएइ–"तुमए सोहणं रंधिअं न, एयं मज्झ नीरसं आभाइ, तओ तीए नवीणाए भज्जाए घरंमि गन्तूण किंपि वंजणं आणेहि, जओ तेण वंजणेण सह एयमन्नंपि मम रोएज्जा" तओ सा मूढं पियं नाऊण नवीणप्पियाए घरंमि वच्चिऊण पिअस्स हेउं सागं मग्गेइ, कहेइ–"मज्झ रंधिअमन्नं पिअस्स न रोएइ, तओ साउयरं किंपि वंजणं देसु" तओ दुट्ठा सा गोमयं गिण्हिऊण वेसवारिआईहिं वग्घारिऊण देइ। तं च सा गहिऊण घरंमि गंतूण पइस्स देइ। सो भुंजमाणो तं बहु पसंसतो मूढो भज्जं कहेइ– "केरिसं तीए साउयरं रंधिअं, तुमत्तो वि अईव सोहणयरं निम्मिअं" एवं रागंधो सो असुहं पि सुहं मन्नमाणो हरिसेण भुंजइ। जुण्णाए भज्जाए 'एयं छगणनिम्मियं वंजणं' ति सच्चं कहियं पि सो मूढो न मन्नेइ॥

उवएसो—

दिट्ठिरागेण अंधस्स, दिट्ठंतं नाणदायगं।
नच्चा तं सुहमिच्छंतो, दूरओ परिवज्जए॥ ३४॥
अइरागंधे धणिअस्स चउत्तीसइमी कहा समत्ता॥ ३४॥

अणासत्तजोगम्मि जस-सुजसाणं कहा पणतीसइमी–॥ ३५॥

अणासत्तयजोएण, कम्मबंधो न जायए।
अस्स तत्ताऽवबोहट्ठं, कलपत्ताण नायगं॥ ३५॥

परम्मि गाम पुम्फपुरस्स पुप पुत्त अत्थि । जिउ असो परोक्ष मग्गम्मि । न आयकमा पम्मरयसूरिस्स कम्मे सोवा परिसुद्ध तथा उवट्ठिआ पिवर आपुच्छंति । महमग्गिआ ट न व विमओ । नं व ममममाणि तहि मम्मिय पगइ पमाय इ, एयो पुणं धम्मं पुम्मको परिपालय मग्गइ । तम्मा बेहुय पमिठ्ठ मासिआ पुम पि मं पमयामि । तओ मा भमइ आ पिय पमयामि । तआ असेव " परमत्तो वि ताव निम्मरा अहं पुप पुव्वमित्तस्स उवयारि समणवासि त्ति विचिंतिय विसज्जिओ पुत्तमा पम्मइओ विहिय । विसुद्धपरिणामा मामपरिवारसमसारा विहरइ । इयरो वि सव्वं अविपक्खो वि वारिओ वह वि व पुम्फपमयाए पमिमत्तं । पत्तो विविहकम्मसरयमयाए । मिम्मायाएपमत्तो वि पयमयपत्तचित्तो नमयं काड गमेइ । यपरम्मु वि जपम्मु परिस्समसासयाए पम्मिय मज्झय पुम्फइ । मावि दंसियाओ समइ पेय न पुम विसओ । तओ व तीए परिभमणपायममयेतो पुप्फस पिउस । इओ अ पुप्फसम विविहतपोकम्मपसुमसरीरा भावियपा पमसंक्षयमावसभिमाया ताव निदं समागओ । मायरमायम पयभिमाओ सयकुमारी वरिओ य । ठिओ तीए पसिर अभिओवसमय । वहिं परमासिओ त्ति ! पुप्फ तीए सिङ्ग— कम्मं भगो एवं गच्छ त्ति । ओयमायसे वरियरिओ तीए मम्मू परिपत्थं मयपयपोर्य, पुत्तो । वहिया । ममाम वमत्ता वि भयं गमाय परिमया पडिमिपया प यसंतो । पुप्फसमा तसं पुच्छिआ 'किम्मविडं करोसि ? ' । सा भणइ— स ते माया एयमत्तो वि पिउप पुच्छिआ पहुए, वेसरा य भएमा गिरिगई वहइ तेय मसो मेवे न वराम त्ति अभिकम्मय मोहं गयं त्ति । तमुमा मासिबे— " गच्छ तुमं नाहं गमामि—मम देवरस्स वारय परिसामि पम्पइस्स पह तेय विवसे वि न मुत्तं वा मे भयं देहि महाभाग ! त्ति पुप सा नई न गमो दाहि " त्ति । एवं पुत्ताए तीए चिंतियं—" मम पवयसत्तमेव

अणेण भुत्त, कह न भुन्त नाम ?, अहवा न जुत्त गुरुवयणवि-रुद्धचिंतण, जमेस भणइ त चेय करेमि" त्ति सपहारिऊण गया एसा। तहेव भणिए दिन्नो मग्गो नईए। 'कहमागयामि'? पुच्छिया सत्तुणा। तीए वि साहिओ सुजमागमणाइवुत्ततो। सुत्तुत्तरे विसाजिआ जसेण भणइ कह जासि ?, अज्जावि अपारा चेव नई। जसेण वुत्त– "सपयमेव भणिज्जासि 'जइ सत्तुणाऽहमेक मिं पि न भुत्तम्हि 'ता महानइ! मे मग्ग पयच्छाहि"। सुट्ठुयर विम्हिया तहेव भणिए लद्धमग्गा सुहेण पत्ता सगिह। वदिऊण पुच्छिओ साहू–'भयव! को एत्य परमत्थो' त्ति। मुणी भणेइ–"भद्दे! जइ रसगिद्धीए भुञ्जइ तओ भुत्त भवइ। ज पुण सजमजत्ताहेउ फासुयमेसणिज्ज त भुत्त न गणिज्जइ। अओ च्चेवागमे भणिय–'अणवज्जाहाराण साहूण निच्चमेव उववासो' त्ति, एय तुइ पइणो वि बभचेरमणो-रहमहियस्स तुहाणुरोहेण कयभोगस्स अभोगो चेव" जओ उत्त––

"भवेच्छा जस्स विच्छिन्ना, पउत्ती कम्मभावया।
रई तस्स विरत्तस्स, सव्वत्थ सुहवेज्जओ" ॥

एवमायन्निऊण साविग्गाए तीए चिंतिय––"अहो! एस जसओ महाणुभायदक्खिन्नमहोयही ससारविरत्तमणो वि चिर मए धम्मचरणाओ खलिओ, समज्जिअ महत धम्मतराइय। ता सपय जुत्तेमेएण चेव सम समणत्तमणुचरिउ"। एय चेय नेहस्स फल ति भाविंतीए सपत्तो जसो वि, साहु वदिऊण निसन्नो नाइदूरे। साहुणा दोण्हपि सुद्धदेसणा कया। पडिबुद्धाणि पव्वइयाणि। कालेण पत्ताणि सुरलोग ति। एवमेस जसो इच्छामेत्तेणावि चरणविसएण पावारमेण न लित्तो त्ति ॥ उवएसो —

पारिग्गहम्मसंसय,—जस-सुजसनामयं ।
नाऊण ' सम्मत्तत्थाई, अणासत्तो सुसावए ' ॥ १४ ॥
अणासत्तजोगम्मि जस-सुजसाणं पणवीसइमी कहा
समत्ता ॥ २५ ॥

पुण्ण-पावाण पठमंगीए मंतिपुत्तीए
कहा छवीसइमी ॥ २६ ॥

सव्वं पुण्णपावाणं, सव्वं लोगम्मि दीसइ ।
एत्थ नरिंदपण्हेसु, मंतिपुत्तीनिदंसणं ॥ १६ ॥

रायपुरनयरे विक्कमसूरो नाम नरिंदो आसि । एगया अणेगमंति-पंडिय-नयरसेट्ठिपमुहविउसजुत्ताए सहाए उवविट्ठो नरिंदो सहासयणसमक्खं मइपरिक्खणत्थं पुच्छइ—'अत्थि अत्थिवत्थूणं नत्थिवत्थूणं, नत्थिवत्थूणं अत्थिवत्थूणं च किं एयारिसं वत्थुं सिया ?, एयस्स पच्चुत्तरं दिज्जाइ । सव्वे सहासया वियारेंति—'एयारिसं किं वत्थू ?'। विउसेहिं वि पयत्ता भणियाओ । अन्ने वि के के वि सहाए संति ते सव्वे वि उत्तरं दाउं असमत्था जाया । तया कुद्धो नरिंदो सासणमाण कहेइ— एरिसीए महासहाए सबुत्तरं दाउं कोवि अन्नो न सक्कया एवं भणं पच्चवमाहि विउसाण वि पोसणं किं मुहा जायं ? धिरत्थु पच्चक्खं पंडियत्तं ।

एवं नरिंदस्स तुडिविहासणमंतिं कहेइ— हे मंतिवर ! तुमए इमस्स उत्तरं सिग्घमेव दायव्वं अन्नहा ते दंडिस्सं, मंतिसमयं च

पत्तोसि । चिंतन्निमग्गा मए । चिंताए अवसन्नो सो मंतिवरो सयणे गओ । इयराणि विणाइ तस्स भोयणं पि न रुच्चइ । तया भोयणसमए सयणाओ वि सो नागओ। तया तस्स विउसी पुत्ती चंदप्पहा जा अट्टवासिया अत्थि, सा पिउस्स भोयणसमागमणं पेहइ — ' हे पिअ ! छुहिआ अम्हे, तओ सिग्घं भोयणाय आगच्छाहि '। मंतिणा वुत्तं — " अज्जाहं अईव चिंताउलोम्हि, तओ तुमं चिय भोयणं कुणेसु '। तीए पुट्ठं — ' केरिसी तुम्हाण अत्थि चिंता ?, जइ य तुम्हेसु अम्हेसु सा पयडं कुणिज्जइ ''। तओ सामिणो मंतिणा कहिओ नरिंदस्स पण्हवुत्तंतो । तं सोच्चा सा विउसी पुत्ती कहेइ — " इमस्स पण्हस्स हं उत्तरं नरिंदस्स पुरओ दाहिस्सं, मा चिंतं करेसु । अहुणा भोयणाय उट्ठेसु ''। पुत्तीए वयणं सोच्चा सहरिसो ' एसा किं उत्तरं दाहिइ ' त्ति चिंतयंतो उट्ठाय तीए सह भोयणं काउं लग्गो । भोयणाणंतरं पुच्छइ — ' हे पुत्ति ! पण्हस्स उत्तरं ? '। सा कहेइ — ' इमस्सुत्तरं एत्थ न कहिज्जइ, रण्णो पुरओ हं कहिस्सं सपच्चक्खं, तुमए संदेहो न कायव्वो । जया नरिंदसहाए गंतव्वं सिया, तया हं सह नेयव्वा '।

मंती परितुट्ठो वयइ — ' इओ तइअदिणे अस्स उत्तरं दायव्वं, जया अहं नरिंदसहाए गच्छिस्सं, तया तुमं सह नेहिस्सं '। निय- गओ एसा किं कहिहिइ त्ति चिंतमाणस्स तइओ दिणो समागओ। पच्चूससमए सहागमणवेलाए नियपुत्तिं घेत्तूण रहमुवविसित्ताण घराओ निग्गओ । पिउणा सह गच्छंती पुत्ती रायपहम्मि कंपि सेट्ठिं पासायघरस्स चउक्किआए मंडाविऊण दीणाणाहजायगाण दाणं दिंतं दट्ठूण नियपियरं कहेइ — ' एअं सेट्ठियरं रहे उववेसावेह, जओ पच्चुत्तरदाणे एयस्स पओयणमत्थि ' तओ मंतिणाहूओ सो सेट्ठी रहम्मि उवविट्ठो । रहो अग्गओ चलिओ । पुणरवि आवणवीहीए

ठिआ मा मंतिपुत्तं पासेइ जो कामगत्थ मरणे सरणविरत्तसमासंतो पिउसरिसमणुस्सं विस्ससंतो अत्थि तं पि पासिया एवं सिरिं कहिऊण ठवेइ ।

पुणो वि अम्मो गच्छन्ती सा संपि महप्पाणं पेक्खेइ । से सरिसी रंसा समो तस्स अप्पाणं सावेमाणो विहरेइ, तं पि तत्थ सरिसं साहारणिऊण सह नेइ । तओ अग्गा गच्छन्ती सा मित्तसुम पासेइ जो सह भासी वीयविसयसो परमरामो मित्तस्स मरिअरस गेहं नियमेइ । सा वि मित्तमुहो एयम्मि गम्मविओ । एवं मित्तं सग्गपवाडसमणुयो मंती पुत्तीए रहस्सं जाणतो विविसराणं पुरओ निवसणाए गओ । तया सव्वे वि सहयो नयरजणा मंतिस्स पच्चुत्तर जाणणत्थं तत्थ समागया । सव्वत्थ जणविउम नारीण सहयरि सव्वे सव्वपरिक्खण मंतिणा सह समागए पुरिसे दट्ठूण पुट्ठं- किं मे समागया ? । मंती कहेइ- तुम्हाण पच्चुत्तरजाणणत्थं एए पुरिसा समागया । नरिंदो भासेइ- सिग्घं मम पसिणस्स उत्तरं देहि । मंती वएइ- तुम्हं इमस्स पसिणस्स उत्तरं मम पुत्ती दाहिइ । नरिंदपुत्ता सा मंतिपुत्ती पडिभासेइ- " हे नरवर ! सिरि मंताण अविसव्वतिस्सगमपन्हस्स उत्तरं अहं पिउ सेट्ठिपुत्ते सवक्खो " त्ति कहिऊण सेट्ठिपुत्ती दरिसिओ । राइणा पुट्ठ-'कहमेसो ? सा कहेइ- अओ एसो सेट्ठिपुत्तो पुण्णमयसमायरिअसमप्पणेण अणुसरंतो अत्थि तह य इह भवे वि रामसीयसमायजम्म सम्पत्तो रायंतो सीय-पुत्तिवयणाय साहेतो एसो परमत्थे वि सव्वं सुहं च पावेइ । अओ अत्थि-अत्थि त्ति पढमपसिणस्स उत्तरं इमो सेट्ठिपुत्तो सिया ॥ १ ॥

बीयपन्हस्सुत्तरे नरवयस्स तं वणिअपुत्तं दंसिऊण कहेइ - एस वणिअपुत्तो केवलं मणमोहयं सिरिसंचियं ... सेइ, तह य

सद्धम्मकम्महीणो सत्तवसणेहिं दुल्लहं माणवभवं निप्फलं गमावेइ, तओ अस्स पासे अहुणा दव्वमत्थि, भवंतरे सो निद्धणो दुही होही, तेण अत्थि नत्थिरूवपसिणस्स उत्तरं इमो निद्धम्मो धणिअपुत्तो जाणियव्वो " ॥ २ ॥

तइ य तीयपच्चुत्तरदाणे सा तं महारिसिं उवदंसेइ, उवदंसित्ता कहेइ – " एसो महप्पा सइ सव्वपावकम्मविरओ उवसंतो जिइंदिओ परचयारिक्कतल्लिच्छो सद्धम्मोवएसदाणेण य अण्णेसिं पि कल्लाण-करणपरो अप्पडिबद्धो विहरेइ, तम्हा अहुणा अणगारत्तणेण अस्स पासे किंपि नत्थि, किंतु भवंतरे अणुवमं तं पाविस्सइ, महारिद्धिवंतो होस्सइ, तेण नत्थि-अत्थिरूवतइअपसिणुत्तरदाणे एसो महप्पा निदंसिओ " ॥ ३ ॥

चउत्थस्स पण्हस्सुत्तरे तं भिक्खुअमुवदंसित्ताण सा मंतिपुत्ती वएइ– "एस भिक्खू निद्धसपरिणामो निरत्थयजीववहतप्परो भिक्खाए सकट्ठं जीवणं निव्वहेइ । तओ इयाणिं इमस्स समीवे किंपि नत्थि, भवंतरे य पावकम्मेहिं दुग्गईए गमिस्सइ,तत्थ किमवि न पाविस्सइ । तओ नत्थि नत्थिरूवचउत्थपण्हुत्तरम्मि एसो भिक्खू जाणियव्वु " त्ति ॥ ४ ॥

एवं मंतिपुत्तिकहिअं पच्चुत्तरं सोच्चा नरिंदो सव्वा य परिसा अईव संतुट्ठा संजाया । महिवई वि तीए बुद्धीए परितुट्ठो सहासमक्खं चेहु तं पसंसित्ता सुवण्णालंकारेहिं सक्कारित्ता सम्माणित्ता य घरंमि गंतुं अणुण्णं देइ । नरिंदपसंसिओ मंती वि सहरिसिओ त्तियपुत्तीए सह गेहे समागओ ॥ उवएसो

पुण्णपावाण भगीए, फलं ~च्चा इहं सया ।

' पुण्णापुण्णंपिपुण्णस्स उज्जमा होइ अन्नहे ' ॥ २६ ॥
पुण्णपावाण पठमभंगीए मंतिपुत्तीए छव्वीसइमी
कहा समत्ता ॥ २६ ॥



असंतोसे निद्धणभिक्खुस्स कहा सत्तवीसइमी

॥ २७ ॥

असंतोसे वि पसायण सव्वं पत्तं पि नस्सइ ।
संतोसाभावओ मायं, निद्धणो भिक्खुओ इव ॥ २० ॥

एगो भिक्खुओ धम्मकम्मपरम्मुहो पंचप्पयारसमिद्धिं केवलं मणसा वंछिन्तो संतोसरहिओ कंपि धणिणागारं पइदूसं भिक्ख- त्ति न सर लेइ दुम्मं वत्थं च किंपि सारवत्थु । जइ एगत्तीसे अन्नओ होज्जा, तया सव्वासिं पिक्खामि, धम्मपरो पंचप्पयारसीहिं न हवामि एवं चिन्तमाणो भिक्खत्थं च भमयाणो पुण्णओ कहिंरं निग्गओ । एग पवणमग्गेण गच्छंती सिरिदेवी तस्स दिव्वभावं भावेण पासित्ता समीवं आगच्छ कहेइ– " हे भिक्खु ! तुमं दीणभावो मम अग्गिओ हेण इमाइ तुमं किं पि दव्वं दाउं इच्छामि तुमं वत्थं पसारसु तम्मइ दीणारे पक्खिवेमि । जया तुम्ह संतोसो होज्जा तया कहसि त्ति वएज्ज । परंतु पक्खिप्पमाणेसु दीणारेसु जइ एगो वि दीणारो भूमीए पडिस्सइ, तया सो कक्करो होहि त्ति कहियाणं सा अन्नी देवी पच्छारिए तस्स भिक्खुओ दीणारे पक्खिवउं लग्गा । सो भिक्खू लोहग्गत्थो 'अन्नं अन्नं मि न' ... ... ठेईं मन-

समत्ता परिपुण्णं सजाय पि सो न निसेहेइ । पुणोवि कहेइ एत्थ पच दीणारे पक्खिवेसु, ते वि पक्खित्ताण उत्त–' किं तुज्झ सतोसो न जाओ ?' । असतोसेण सो पुणो पुणोचि मग्गेइ । एव पक्खिवमाणेसु दीणारेसु बहुभारेण वत्थस्स य जिण्णत्तणेण त भिण्ण, ते सव्वे दीणारा भूमीए पडिया, तया सो भिक्खू हाहारवे कुणतो अवणमिऊण भूमीए पडिए दीणारे पासेउ लग्गो । तया सव्वे दीणारा कक्करुवा सजाआ । जया उद्ध पासेइ, तया लच्छी वि अदसण पत्ता । तओ सो निम्मसेहरो अप्पाण निंदतो दुहिओ सजाओ । एव असतोसेण जीवो दुह पावेइ ॥ उवएसो—

निद्धणत्थिजणंस्सेह, कज्जवज्जियभावणं ।
जाणित्ता' थोवदव्वे वि, सतोसं माणसे धरे ॥ ' ३७ ॥

असंतोसे निद्धणभिक्खुस्स सत्ततीसइमी कहा समत्ता ॥ ३७ ॥



परासुहचिंतणे सुंदरीए कहा अडतीसइमी– ॥ ३८ ॥

' परस्स चिंतिअ ज तु, सस्स तं जायए धुव ' ।
सज्जाए चिंतिआ हिंसा, तीए अप्पंमि साऽऽगया ॥ ३८ ॥

ओहिनाणजुत्तो वरदत्तमुणीसरो विहरमाणो कोसबीए पुरीए नयरुज्जाणे समागओ । महीपालनरिंदो तह य पउरजणा य देसणा-सवणत्थ उज्जाणे समागया । उवएसदाणावसरे कहिंति–" साहवो सव्वत्थ चदुव्व सव्वे –अलहायगरा हुति, सत्तुसु मित्तेसु च-

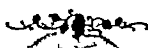
गायणाईसु निरवज्जेसु वा समसाया हवंति " त्ति कहिऊं दुक्खेण ठिआ। तया सरिया सासू व पुच्छेइ वच्छे ! विसायं किं कुणसि ? माउसमं अणुरूव । सा पडिभणई वएइ– " मम विवाहे सहिआ गयासिआ पुष्फतलपयाराइणा यो मम इंगुरिणा हरिदं सम्बुद्धिभरं भणिए सरिसं आणिया अम्हे सप हासिआ "। सासूकहिआ सुणिरो सहाणमाणं पडिवाएणं हीसे सवखीत सुणेइ कया– पुत्त सिरिपुरनयरे पण्णामई आसि। तत्थ ह्रस्वइ नाम मीसानसूर सुंदरी भज्जा आसि। सा सीसेण सारपुरिसपर रायइ। नवय तत्थ तीए भत्तारसीआ वएइ– तुमए सम गेहं कया वि न आगंतव्वं जओ तुम्ह पडमा पीडामि । सा वएइ– हे सिय ! तुमं निच्चिंता भवसु, जइ सयाई, जइ तुम्ह मण न हवेइ । तओ सा सारपुरिसस्स सामत्थं विम्हयमिस्सियसयसवत्तं सारिऊण अवयरइ पत्तिं ठविअं। सोक्खसाणसरं तीए भत्ता जओ मीयमयसमुप्पन्निओ तया सा गीयमाणो अप्पमेयरं पाया समागया तत्थ रायाभिमणिमइरेण तया सही उववरं मुच्छिं काऊण पडिऊण पंचत्तं पत्ता। सुण्हासेट्ठी ताम वाणमई सोया– ति कारं सि महत्ता करुणा करुणा मओ। तं मयं दट्ठूणं तीए कुमरिए अवमाणमाणो बहुं विलवइ। तीसे मरणेत्तिण आगम संसारस्स विरत्तमाणो सम्मत्तेवायसु चए रायस्स आवयई समणव इमसवसंगपरो संजाओ।

एवमा गुरुसो अग्गे सरिऊण अनागा पव्वमि वते आराहसस्सेण संठिओ। सा सुंदरी वि– अस्स सिणिर्धं वि पु अप्पणो ते भायर कुए' त्ति नाएण सम्महुं सरिऊण तीए अग्गिमि मिलो आसो। तं सुणिउं सरूवं सुमणसम्मासाओ सुणिसि रुआ तं सरीरं । मुहरसाइण से अम्मसुणी नारसे अण्णुगामेणोसो रेवसत्तेण समुप्पन्नो। तओ से सिवे सरिऊण सम्मे तरपे समुप्पन्नो। सो य रेवी

ताओ देवलोगाओ चइऊण चंपानयरीए वरदत्तसेट्ठिस्स घरंमि तस्स भज्जाए पुत्तत्तणेण समुप्पण्णा। सा पुव्वभवब्भासाओ सम्मद्दिट्ठी दयावंतो आसि। सुंदरीजीवो चउत्थीए नरगाओ निग्गच्छित्ता अणेग भव भमिऊण वरदत्तस्स घरंमि दासीए पुत्तो संभूओ। पुव्वभवप्पेमाओ वरदत्तंमि पओस धरंतो वि तस्स मिणेहमुपायणत्थ तेण सह धम्म पि कुणेइ। तेण वरदत्तो वि त दासीपुत्त बहुत्तणेण मन्नेइ। लोगंमि सेट्ठिभायगो त्ति पसिद्धो जाओ। सो वि दासीपुत्तो तस्स वहोवाय सइ चिंतेइ। एगया विसमीसालिय तंबूल वरदत्तस्स सो देइ, तया चउव्विहाहारपच्चक्खाणत्तणेण त ऊसीसगे ठवेइ। पच्चूसकाले वरदत्तसेट्ठी जिणालए चेइअवंदणत्थ गओ। तया वरदत्तस्स भज्जाए तत्थ समागयस्स दासीपुत्तस्स – 'हे दिअर! एय तंबूल तुम गिण्हेसु' त्ति कहिऊण दिण्ण। सो वि तीए महुररसमि लुद्धो मूढो त भक्खिऊण मरण पाविऊण सयलिआ रुक्खा जाया। दासीपुत्त मय जाणित्ता वेरग्गरंजियमणो वरदत्तसेट्ठी सत्तखेत्तेसु धण वावरिऊण पव्वइओ, सो इह जाणियव्वो। तया सा सघलिआ मुणीसरमुहाओ त वुत्त सोच्चा, जाईसरण पावित्ता मुणीसरचरणग्गे समागच्छित्ता, वंदित्ता नियावराह खमावित्ता, अणसण किच्चा सग्ग पत्ता। नयराहिवो पउरजणा य एय सुणिऊण पासित्ता य जिणीसराण दयामइअ सुद्धधम्म ससम्मत्त पत्ता। उवएसो—

सुंदरीवरदत्ताणं, नच्चा बोहप्पयं कहं।
तत्तो 'सुहत्थिणो तुम्हे, पराणिट्ठ न चिंतह' ॥ ३८ ॥

परासुहचिंतणे सुंदरीए अडतीसइमी कहा समत्ता ॥ ३८ ॥



उज्जमम्म पहाणत्तणम्मि विठसवरखुगस्स कहा एगूणचालीसइमी—॥ ३९ ॥

सद्धम्मम्मि परा जणा, [illegible] पंच हेठमो ।
सम्बोहिं उज्जमसे सेट्ठे मिउसा होन्ति नायमं ॥ ३९ ॥

पगया मोक्खसिरिस्स [illegible] बुम्मि निम्मा [illegible], केवु
[illegible]– जे मामी ते [illegible] होइ [illegible] सो [illegible] निया [illegible]
मिय समेइ [illegible] पंडिया– [illegible]मेव [illegible] [illegible] य
[illegible] पि [illegible] न [illegible], [illegible] वुत्तं—

" उज्जमेण हि सिज्झंति कज्जाई न मणरहो "।
न हि सुत्तस्स सिंहस्स, पविसंति मिया मुहे ॥ १ ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । मोक्खसिरीए वे [illegible]
[illegible] [illegible], ते [illegible]– [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] । [illegible] वुत्तं– [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "
तया ते बुम्मि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुरओ [illegible] ।
राया [illegible]– [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ? [illegible] [illegible] [illegible] '
तया [illegible] [illegible] [illegible]– [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ? [illegible] [illegible] [illegible] ? । [illegible] [illegible]– " हे [illegible] ?
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible]– [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ? [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] । [illegible] तया ते बुम्मि [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] बुत्ते य [illegible] [illegible] [illegible]

गाढयरं निअतिअ अंधयारमए अववरगे ते दुण्णि विउसा ठविआ, कहिय च "जो दइव्ववाई दइव्वेण छुट्टउ, जो उज्जमवाई सो उज्जमेण छुट्टेज्जा" एव कहिऊण कालीदासो पच्छा नियत्तो । तओ सो नियइवाई मो 'ज भावि त होहिइ' त्ति मन्नमाणो निचिंतो समाणो सुहेण तत्थ सुत्तो । उज्जमवाई जो, सो छुट्टणाय बहु उज्जम कुणेइ, हत्थे पाए अ भूमीए उवरिं जओ तओ घसेइ, परतु गाढयर-बंधणत्तणेण जया सो न छुट्टिओ, तया त निययवाई विउसो कहेइ "किं मुहा उज्जमेण कएण, एसो निविडो बधो कया वि न छुट्टिहिइ?, निप्फलेण बलहाणिकारणायासेण किं?, खुहापिवासापीलिआण पि अम्हाण नियईए सरण चिअ वर"।

एव सोआ उज्जमवाइपडिओ छुट्टणपयास न चएइ । छुट्टणाय अईव पयास कुणेइ । एव तेसिं दुवे दिणा अइक्कता । भोयणा-भावेण सरीर पि ताणमईव झीण सजाय, कज्जकरणे वि असमत्थ जाय, तह वि उज्जमवाई पयासहीणाववरगे इओ तओ भममाणो बधणाओ मोअणाय जत्त न मुचेइ। नियइवाई त वएइ-'अहुणा परमेसरस्स नाम गिण्हसु, किमायासकरणेण फलरहिएण?'। तया सो उज्जमवाई कहेइ-"समावन्ने वि मरणे उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो, सया वि उज्जमसीलेण जणेण होयव्व"। नियइवाई वोल्लेइ-'जइ एय ता अधारिए एयमि अववरगे पाए हत्थे अ घसमाणा भमता चिट्ठेह, किं उज्जमो फल दाही?'। तह वि सो उज्जमवाई पडिओ खीणसरीरबलो तइअदिणमि भित्तिनिसाए भमतो हत्थे पाए य घसमाणो पडतो पुणरवि घसतो भमतो दइववसाओ अववरगस्स कोणगे तत्थ पडिओ, जत्थ उदुरस्स बिल वट्टइ । तस्स हत्था बिलोवरिं समागया । तत्थ रधमज्झट्ठिओ मूसओ बाहिर निग्गतुमचयतो दतेहिं हत्थबधणं छिंदइ, तया सो छुट्टिओ समाणो नेत्तपड पायबधण

न अवसरेइ, सो तया अवयरओ पमावसमेव विगारिं न पासेइ। अरस अवयरस्स हार अस्स अस्थि चि चिंतिऊणमम किंचिकाल तेण कमेण हारं सहं । वाहिरओ विम्हई न पासिऊण कहेइ वे ए मूसओ कप्परिअ वहिरं मा मिगाओ । नच्छा हेम्मयाई वरिसे वि वंभणाओ ओमावइ । पच्छण्णवडाय ठिआ वइसीयासो मग्गं निएइ। अवा ते दुवे वाहिरनिग्गय पासेइ, पासित्ता दे पेसूण निवसायि मज्झो सम्स अवमाणेहिं मक्खरित्ता सम्माणित्ता य निवसइए वे तिरे पढिउण समागओ। मोयणरिं-ओ- उवमेव विर मग्गेण परागओ वि तओ अवयवाई पढिआ उवमेण पुच्छिआ, कसे अवमामायाओ न पुच्छिआ । जो अवमायेव पत्ते मज्झ सा सम्मं अरिसइ । अस्त पमाओ आलस्से लग्ग तुहा पिवासा दुक्खं मग्गं च आयसे समवेइ। जा उवमम दुक्ख सो अयए दुक्खओ दुक्खं, किं पि व पसं पासेइ। हेम्मयाई उवमेण विणा कज्जं न सहेइ। तओ उवमा पढाओ आयण्णो । तओ मोयणरिसो उवमसयासंनि वम्म-नत्तवुत्तगेहिं सम्माणेइ । तउमो वंभणरणसमुदायस्स आमति-प्पभी हाइ वण्णेइ- अहवो पवणिप्पवणसमत्था, सो पढो वाणेण होइ, पाणिप्पवणपरागा वि माविवसवाभिओगेण पढो होइ अणा विणा विव हणिरे। तेणुवमस्स उवमस्स पवा हवइ, वइ धम्मस्स अणुसूयं विम वो धम्मवसस्स मोया होज्जा । एवं कम्म-निवड-सयण उवमम-पुन्नधम्मसयासंवयवमसमवाए कज्जं हवइ तओ आयाइ-पंचसु निव्वई वक्खई, तओ वि धम्मओ सव्वंतो वेवो । वीरसवे वि-धम्मये अस्थि हणिरं । तओ धम्मओ कया वि न मोत्तव्वो ॥ उवएसो

उवमस्स फलं लच्चा विउसपुरगनायगो ।
' आयवीरे न हुज्जा, -

उत्तमस्स पहाणत्तणम्मि सिट्ठिवरसुगस्स
एगूणचालीसइमी कहा समत्ता ॥ ३९ ॥

इंदियाण निग्गहे महप्प-सुगाण कहा चालीसमी -॥ ४० ॥

'दव्वपासं समुच्छेत्तु, होउ इंदियनिग्गहो'।
नच्चा त अनलवित्ता, विमुत्तो पंजरा सुगो ॥ ४० ॥

कोसंबीए नयरीए एगो धम्मिट्ठो धणड्ढो सेट्ठिवरो आसि। सो सइ धम्मसत्थाइं सुणंतो साहुजणचरणकमलसेवाए सुहेण कालं गमेइ। तेण एगो सुगो पालिओ अत्थि, सो पंजरमज्झट्ठिओ रममाणो सेट्ठिस्स पासंमि धम्मसवणेण महप्पा सद्धम्मसीलो जाओ। सेट्ठिणो वि तंमि सुगंमि गाढयरो रागो संजाओ। सो हणगरफलाइणा त सम्मं पालेइ। सुगो वि सया परमेसरस्स नाम घोसिऊण सेट्ठिस्स चित्तं अल्हाएइ, एव ताण दुण्ह कइ वि दिवसा गया। एगया नयरीए उज्जाणे को वि महप्पा परभावण्णू अणेगसीसगणपरिवारजुओ धम्मुवएसदाणत्थं समागओ। पउरजणा य तस्स समीवे धम्मसवणत्थं समागच्छंति। तया त सेट्ठिं तस्स महारिसिस्स पासे गच्छंतं पेक्खिऊण सुगो वएइ-" हे सेट्ठिवर ! जया तुम्हे तस्स साहुवरस्स समीवे वंदणत्थं गच्छिज्जाह तया सो महप्पा एव पुच्छिअव्वो, मम बंधणाओ मोक्खो कह होस्सइ ?, सत्थेसु एव सुणिज्जइ- " परमेसरस्स अभिहाणकहणं पि जीवाण मोक्खदायगं सिया, इह तु सया ईसरस्स नाम गिण्हंतो वि अज्ज वि जाव बंधणंमि कह पडिओ म्हि ?. छन्नायाओ को अत्थि ?. एव मम एसो पण्हो तुम्हेहिं

पुच्छियव्वो । सो सेट्ठिवरो सुयस्स वयणं सुणिऊण अंतिमसेज्ज य साहुवरस्स समीवे गओ। तस्स सुणिऊण पच्छिं सुयस्स वयं पुट्ठं । पउमिणीपाणिमज्जणसक्के सो मुणिवरो अणवसरं निच्छिऊण झाणमि मिणी न किं पि वयइ। तया सो सेट्ठी दोच्चं पि तच्चं पि वारं पुच्छेइ तया वि सो मुणिवरो मउणेण झाणेण य संठिओ न किं पि बोल्लेइ। सेट्ठिवरो वि अमरिसं मणे धरिऊण गिहम्मि आगओ। सुगो वि सेट्ठिं पइ उत्तरं पुच्छइ। सेट्ठी कहेइ-"हे सिसुग! न पच्छो मए तस्स साहुस्स पुच्छिओ तया सो मेणाइ मिसीकिय झाणमि संठिओ न किं पि उत्तरं दासी। एवं दोच्चं तच्चं पि वारं पुट्ठे, तह वि सो निम्मलो निच्चलो समाणो न किं पि बोल्लिय"। तया सुगो वि अवगयपरमत्थो पंजरम्मि कुडमाव एवीय मयगावं निसीलिऊण निच्चेट्ठो इव संजाओ। पच्चूसे सो सेट्ठी तं पासिऊण निच्चेट्ठं दट्ठूण, 'निमयं मओ' त्ति चिंतेइ पंजराओ बाहिरं कड्ढिऊण एगेण तं पिंजरुम्मि पासइ, निच्चं तं मयं ति जाणिया हा! हा! एस मज्झ सुओ त्ति बहु सोइऊण तस्स मरणकिच्चकरणत्थं गिहाओ बहिं नेऊण सुयकुमिंसाणे बहुं जिमिय जम्ममिच्चं तं ठविअ सज्जमाणो घरम्मि गओ। तया सुगो वि गगणाओ उड्डिऊण, एगस्स रुक्खस्स उवविट्ठो। सेट्ठी आगओ समाणो ते सुगं रुक्खसाहुवरि पासिऊण कहइ- हे सिसुग! किं तुमए कयं? कहं कहं वंचिओ म्हि? का वा मओ इव निच्चिट्ठो जाओ? । तया सुगो वि कहइ-"हे सेट्ठिवर! तुमए तस्स महप्पस्स साहुवरस्स उत्तरं सम्मं न अवगयं, किंतु तेण महप्पणा अणेण पयारेण मम मोक्खस्स उवाओ दिण्णो। मए य तस्स वयणं सोच्चा एवं चिंतियं-'सो महप्पा मेणाइ मिसीकिऊण झाणम्मि निम्मग्गो निच्चिट्ठो जाओ तओ मोक्खस्स उवाओ अम्हेवि मम जाणिओ। तम्हा अहमवि इव ईसिमाण निम्ममं किच्चा निच्चेट्ठ संठिओ निच्चिट्ठो जाओ। तए अहं मओ त्ति नाओ मोक्खो। एवं

…ण साहुवरेण पजरबंधणाओ जुत्तीए अह उम्मोइओ। एव इंदियाण निग्गहकरणेण भवबंधणाओ जीवो वि छुट्टिज्जइ, परमपय च पावेइ। अह वि वणम्मि गतूण जहिच्छ पहुपायसरणेण जीवण सहल करिस्सामि त्ति" कहिऊण वणमि गओ सुहिओ जाओ ॥ उवएसो—

निग्गहो इंदियस्सेह, सुगस्स फलियं जहा।
तहा 'तुम्हे पयट्टेह, तमि समाहिया सया' ॥ ४० ॥

इंदियाण निग्गहे महप्प-सुगाणं चालीसमी कहा समत्ता ॥४०॥

नाणगब्भमंतिस्स कहा एगचत्तालीसइमी–

॥ ४१ ॥

देव्वजण्णविवत्तीओ, बुद्धिमंता जणा दुयं।
धुवं तरंति जत्तेण, नाणगब्भुव्व धीसहो ॥ ४१ ॥

सिरिमुणिसुव्वयतित्थयरथूभालंकियाए वेसालीए जियसत्तुनाम निवो आसि। तस्स रण्णो सामाइनीइभायण सयलनियरज्जकज्जसज्जपरो णाणगब्भो नाम मंती अहेसि। अन्नया सहानिविट्ठस्स राइणो दोवारिएण पणमिऊण एय राया विन्नत्तो –'सामि! एगो नेमित्तिओ कत्तो वि आगओ दारंसि ठिओ समाणो पहुपायदंसण महेइ। लद्धाणुन्नेण तेण निवसहाए पवेसिओ। सकोउगेण नरिंदेण तण्णाणजाणणकए विहियउचियपडिवत्ती सो जोइसिओ पुट्ठो–'थोवदिणमज्झे कस्स अपुव्व सुह दुह च होही?'। अट्ठगनिमित्तसत्थवियक्खणेण तेण भणियं –'हे सामिअ! तुम्हेहि पुच्छिओ संतो सत्थभणियमत्थ कहिंतो दोस न जामि' त्ति कहिऊण पाएइ– "जो एसो नाणगब्भो महामती मतिपतीण सिरोमणित्तण पत्तो, तस्स सकुलस्स मारी अइघोरा उवट्ठिया

अत्थि। सा मज्जी मा अरिमाणा न माआओ किंतु एयाओ सव्वाओ अमणं हविइ "। तओ सा सव्वा मम्मा ५ममस्स तस्स सगासे गुव्विणीए सगासा। तओ मज्झि धीरमाणस्स तओ सव्वा किं माओ मेम धम्मस्स जसकित्तिओ निमित्ति तं नेमित्तिय वाएसो। समं समयम्मि वरपुप्फवरमाणमपइट्ठाणेण सव्वसेवाए एसो पसी पुच्छा – कया एस मारी माविस्सइ त्ति। सो नेमित्तिओ कहेइ – तव वेइपुत्ताणं । मज्झि पुच्छइ – निवमा एसा होस्सइ, अह वा पवओ ? । नेमित्तिओ कहइ – अणुगब्भिणीसम्मि इमं मज्झे सुमिणं हविइ । एवं सा मज्झी धारणस्स जणसहस्सा वयणं सुणं परमायरेण धारइ – 'मम्माए इमं मे पमासियव्वं'। तओ सव्वाओ सो निवमाणं। अइममा रत्तीए मंतिणा सुमिणा दिट्ठा – अह मम सरीरे बहुमयणसिमिणयनपवखामसमाई भूमसमाई सव्वत्तो दद्धं । तओ मंतिणा सपवयं निवमिसुणा उत्ता – " ५ पुत्त ! जं दसणेणं तव जम्मकम्मसिमिणाइं सुरसु पम्मत्ता एसिं पुत्त तुमाहिं इमस्स पयओ दुंसि धीमइ। तओ एवं सव्वं ताण सुमिणसुणुसुमिणं वट्टिस्सइ, अम सव्वेहिं मणं वसम वई पि वंचेमो। जइ अस्स धम्मस्स सव्वं न केणमि तओ म सवमजणपरिसाए इमाए मज्झे का गुणो होज्ज ? ।

मज्झिमं गहिवरिमं, सुमिणो सउणमयं निमित्तं च ।
दुणा व मजपमं, पणंमि जइ कस्सइ कमइ ॥ १ ॥

तओ धीरिमं मज्झिमि मज्झिपण्णीइ मा नमिवमा कि दु सव्वओवायसव्वीइ निच्चं पि हवव्वं । सव्वीविवमिणमणीईंसे दूरओ दुक्खदुक्खगममाणं अणाई रिममाणा कमवरमा विइत्तिओ पि हि न होसाव । तओ हे पुत्त ! मंतूमाण पवीस, पयत्तस्स

मोयणनलाणि पयाणि तुज्झ तणुट्टिईए साहुणाइ मुक्काइ। तओ नियकुलरक्खणत्थ पुत्ते वि तहा निहिए, नरिंदस्स पासे उवागम्म मतिणा निवेइअ–'हे राय! रायकुलसेवाओ पुरिमपरपरपत्त एय वित्त निरायत्त अत्थि'। रण्णा भणिय–'मा वीहसु' त्ति। मतिणा 'को जाणइ, किं भविस्सइ' एव वोत्तूण अणिच्छतो वि राया एय मजूस पडिग्गाहिओ। सा मजूसा राइणो भडारगिहमि नीया। भणिय च–'हे देव! इह मज्झ सव्वसार सचिट्ठइ, पस्स जाव मज्झोयरोहाओ चेव सव्वायरेण सरक्खिज्जउ। तओ रण्णा तीसे मजूसाए निविडाइ तालगाइ दिण्णाइ, सव्वओ सीसगमुद्दाओ वि दिण्णाओ। पइपहर च तीसे रक्खणत्थ दोण्णि दोण्णि पाहरिआ वि ठविआ। एव कयसुविहाणो मइवो चिन्तइ एण 'किं एसो मज्झ पओगो विहडेज्जा, अचितचरिय दिव्व, किं च न होज्जा'? एव खणेण विसाएण छुप्पतो जाव चिट्ठइ, ताव तेरसम्मि वासरे पभायसमए 'कण्णतेउरम्मि नरवइस्स कन्नाए वेणीछेओ जाओ, केण कओ इअ निमित्तचिंताए, वेट्ठिण मतिसुएण कओ' त्ति पवाओ सजाओ– जह किल नियमादिरसेज्जापरिमाठिअ एअ रायकण्ण समागम्म जिट्ठमंतिसुएण विण्णत्ता– 'उम्मीलियकमलवयणे! हे सुदरि! मए सम रमसु, वहु पि भाणिआ वावेसा नेच्छइ, ताव रोसवसेण छुरिआहत्थेण अणेण तीसे वेणी छिन्न' त्ति।

तओ सा कमलमुही अंसुपुण्णनयणा विस्सर रुयमाणा पिउणो पासम्मि गया। सव्ववुत्ततो निवेइओ। कोवानलारुणिअदेहो राया पुरारक्खगलोग एरिस भणइ–"जइ स मतिसुओ सूलारोवणपमुहदुक्खमारेण मारिओ होइ तहा लहु चिय करेह, अहवा सचीवाहमस्स गेह तणेहिं कट्ठेहिं दारुयभरेहिं सव्वत्तो वेढिऊण, जलतजलण च काऊण सव्वे दहह जओ मज्झ पर पसाय लहित्ताण उम्मत्ता जाआ, कहमन्नहा एरिस आयरणं [illegible] होज्जा"।

तओ नागरजणसमूहा अन्नया असमंजसस्स तस्स विय वासमकासे पत्ता । मंतिणो कुमार पइ हसमाइं सिक्खिवं आरद्धा, न मंतिणा वि मणं समुद्धिआ । सयमेव राया से दड्डूण विरत्तेण मंतिणा बिंबिसारिअ रायनयर पुच्छ— किं कारणं तेण एयारिसं असमंजसं उवट्ठियं ? । ते भणंति— तुह पुत्तेण रायकुमारेण सेणीओ जम्मं कओ' । तं सुणिऊण मंती चिंतेइ— जारिसं कम्मं, तं तारिसं भायव्वयम्मि पडिआर चिट्ठिए वि एयारिसं हासं सयं समायरियं ति । जइ वि परिसमवराय सेवयाणं एयारिसं चिर रंगे होज्जा, तह वि नरिंदं पेच्छामि त्ति ते निवपुरिसा भणिआ ।

तओ सा नरिंदसहाए गंतूण कुमरं नरनाहं पयासिउं भणइ— 'हे पिय ! मंजूसाए मज्झे सिद्धुमे उत्तमिम विभावरिए तओ मज्झ मज्झे एसो कुमारो अम्ह सुविचारियपरियत्तं होज्जा' । एवं ति भणिअ जाव जाव मंजूसापासम्मि तीए मुद्दाओ उग्घाडिअ ताडगाइं पच्छंसे । पुरपरिसप्पमाणस्स वासुपुप्फवम्मस्स निभालणं कुमरो धणीहरस्स सुवण्णसुहं सागयपुत्तं । तओ सव्वं वि जणेहिं कुमरं सरल परिवाहेण अण्णोण्णसुहमिमोसिभरिहिआ पसंसिरिं इमस्स इ कमल किमिव उच्चेरयं दीसइ ? । स परियणइ— 'ऐसा चिय परमत्थ विसयणं । न ... ... मिह मंजूसा धारिया न दुवसुद्दाओ अस्स तहमाई दिव्वाइं ... की अणा विवागमया हाउ" मूढं पत्ता रायाणं भणेइ— अयं तुज्झ आयवियखा । तओ राया आयन्नेऊण सत्थरिओ भणइ— 'हे वच्छ ! एरिसमसं मए विआणं जह मम सुयाओ रायकुमारिस्स होज्जा न जओ चिमिव्वयाय सिं तओ मंजूसाए संगुत्ता पुत्ता तुह मज्झमयाउ, तेण तुह पमाए आसिमा अवराहकम्मं जइ न खमि । तओ अम्हाणं पुव्वयमंतरयत्ति य । सि पुत्तो पुट्ठे होज्ज जय मज्झ वच्छपवर अवयारम्मि तेण तुरेण

एय सव्व अणुट्ठिअ" ति समाविज्जइ। तओ संजायपच्चएहिं सव्वेहिं एयमेय ति भणिय। 'कहमन्नहा एसो तुज्झ पुत्तो सुरक्खिओ एण कज्ज कुणेज्जा'। हे देव ! अचिंत कम्म कयपडिकार पि ज एव फलइ, बुद्धिमताण चरिय पि कम्मस्स पसर ज हरइ। अओ उद्धावसर कत्थइ वलिय कम्म, तह य पुरिसयारो वि कत्थइ वलिओ होइ। एव परिणयवणिआण जारिस चरिय, तारिस चिअ चरिअ मपुरिसगाराण णेय। जहुत्त–

कत्थइ जीवो वलिओ, कत्थइ कम्माइ होंति वालियाइं।
कत्थइ धणिओ वलवं, धारणओ कत्थइ वलव ॥१॥

एव सोच्चा रण्णा वहुपूइओ सो णाणगब्भो मती नियनाममाणचेट्ठिओ होउ सिरिं तह जस च लोए पत्तो ॥ उवएसो—

नाणगब्भस्स मतिस्स, देव्वादिट्ठ-दुठ-वारण।
सोच्चा भे चरियं 'होह, मईए कज्जसाहगा' ॥ ४१ ॥

फलदाणसमुत्थिअ-असुहकम्मानिवारणे णाणगब्भमंतिस्स
एगचत्तालीसइमी कहा समत्ता ॥ ४१ ॥



पुण्ण-विक्कमपहावे पुण्णसार-विक्कमसाराणं कहा बायालीसइमी ॥ ४२ ॥

पुण्णोदएण सोक्ख वा, कासइ विक्कमेण वा।
पुण्ण-विक्कमसाराणं, इह रम्ममुदाहिय ॥ ४२ ॥

आसि खिइपइट्ठियनाम नयर, तत्थ पुण्णजसो नाम नरिंदो अहेसि, तस्स य पिया सुहगगी अत्थि। अह तत्थ पुरम्मि धणड्ढसुओ

पुप्फसारो नाम बीओ विक्कमसारो सुआ विक्कमसारे नाम आसि । ते दोवि अहिययणाहत्तमवन्ना तारुण्णं समणुपत्ता । तया विचारिअं —'तारुण्णे पत्ते वि जइ कण्णीए अम्हाणं न होज्जा, ता अप्पमवाहिरस्स तस्स को पुरिसगारो ?'। तस्स कण्णी दाणाहिरिय पुप्फोर्ह न पत्त, तया तस्स जसो जणसोहग्गे य । तओ पव्वालणं किरदासरयओ अप्पणमप्पणा जह सिरी समुप्पज्ज तह गवे मायओ । तेण अणुसरिमा देसंतरं । आरोहेमो परक्कमसिरिं तो अम्हाणं अप्पणाहा कण्णी सुहमा य भविस्सइ'। तया अप्पणा वा सव्वसहिमंसं गया, तया पढमस्स पुप्फसारस्स विहिवसओ अ अणवेण महंते सिरी समुप्पन्नाओ तं निम्बिद्धण येदे समागओ बहुविहेसु कम्मेसु लग्गा । बीओ विक्कमसारो पुण्णे कम्मीए अप्पणा अनुभवणे तुमाए वीर्य आराहिऊण निवणेइ पत्तो । सो वि समणोवासगपरियाए तं सिरिं विक्कसिउं परिकम्मे ।

नयरम्मि तम्म पवाओ संजाओ जइ पसा पुप्फसारो पोमुत्तमारो संपयसमहीयकण्णीविभूओ सुहिओ बीओ य पुत्तो विक्कमसारो रायसम्माणसिरपसंजणयपासणयरिओ मणुसस्स तोगा मंगो भुंजइ । स तपसि अमो पावो जाइ पुप्फवसिओ देवसंनुओ अत्थि बीओ वि अत्तसिरमयहरो पयसायपरो पुरिसगारे पुण्णो अत्थि " । एवं पसो पयाआ भिसुओ अतुकोसमासो सत्थं सरगंमिअ पुत्तं न कि पसो पयाओ सच्चो अप्पणा न वि । तेहिं भणिअं— " अप्पणासो विरहो न होज्जा पत्तो पावं अप्पणो सि कर्द कम्मं लोगो सब्बो विपावेइ " । एवं लोएण तया वेरी परिकस्ता जाणया ।

अण्णे पुप्फसारो पगाम्मी निअ मणस्स पम निविसिओ । महप्पसत्तपाणि भणिआ— " अत्र हुमेहिं न अप्पणाया,

ओ एतम्म पुण्णयमण पत्त अम्हेहिं भोत्तव्व"। अह पत्ते भोयणसमय
दारेवाए सपेमिओ महल्लो अंतउरस्कगो निवेदइ— "अज्ज
सामिहम्मि तुम्हेहिं भोत्तव्व, जओ अज्ज जामाउओ नियनयराओ
ई पि पयोयणत्थ समागओ अत्थि। तस्स निमित्त सुओयणाइभेय
उमोयण पमाहिय, ता देव! तुमए सद्धिं भुजतो सो सोहग्ग
न्ना"। तो ते सव्वे वीसत्था सत्था त भोयण भुजीअ।

अन्नम्मि वह यीओ विक्कमसारो भोयणत्थ निमंतिओ। सव्वे वि
सवहीए पसाइगा भणिया— 'लहु चेव भोयण कुणेह'। तेहिं
व्वायरेण भोयण उवट्ठिय कय, भोयणायसरे आसणेसु ठिअेसु,
अट्ठिए भत्ते समाणे, तया रायसुयाए अट्ठारससरसमन्निओ
मलगथूलमुत्ताहलुब्भडो हारो निन्निमित्त पि तुटिओ, वीणाणणा य
यती रायसुआ पिउस्स पासम्मि समागम्म भासइ मे—'हारो उण्हि
इन्नउ, नन्नहा भोयण काह' इअ जपिए तो नरवई जाव
वेक्कमसारमुह पलोयइ, ताव उज्झियभोयणकज्जेण तेण सो हारो
रयसुत्ततंतुसव्वजो खणेण पगुणो कओ। पच्छा दोवि त भोयण
इह भुत्ता। निवइणा परिभाविअ —'सच्चो जणप्पवाउ' त्ति।
एव पुण्णसारो पुण्णुदएण ववसाय विणा सुह पत्तो, विक्कमसारो अ
वारिसपुण्ण विणा ववसाएण सोक्ख पावीअ॥ उवएसो——

पुण्णविक्कमसजुत्त, सेट्ठिपुत्ताण नायगं।
सुणित्ता ताण पत्तीए, उज्जमेह तहा सया॥ ४२॥

पुण्ण-विक्कमपहावे पुण्णसार-विक्कमसाराण
बायालीसइमी कहा समत्ता॥ ४२॥



अवियारियकज्जम्मि ण्हाविअस्स कहा तेयालीसइमी ॥ ४३ ॥

ण्हाविअस्स सहसो जं, किं पि देइ सहेउमे ।
ण्हाविअस्स जहा होत्था, दण्डोरेण घणं दुहं ॥ ४३ ॥

एगम्मि नयरे एगो सिरिसेणो सेट्ठी आसी । तेण धम्मायरि-
यहु पणमजियं । बुद्धिपभावेण सव्वकज्जेसु पयट्टन्तेसिं पुण्णोदि
होत्था । सो पुण्णकाले पुणसु दुप्पराक्कमं आराहिअ सि-
संजाओ । तस्स मणुस्स एगो ण्हाविओ मित्तो अवि सिंरोव
तस्स पासेमि केसकम्म करताइ । मासे सव्वमासे य सव्व
समीवम्मि मत्थयं मुण्डेइ । एगया सेट्ठी तस्स पुरओ मुण्डण
समुवविट्ठो समागओ एवं— जाव सव्वं मत्थयं मुंडेइ । से
सिरिसिरी दव्वसमुदुस्सम साहम्मरं अवयवरं मुंडयं वामी धरणम्मि
सिरं धारिऊण पमेइ सुवण्णं सुवण्णरासी सए वर्ण
परिणामे अविचारित्ता हरिसेण सहिओ मुंडिअसिरंसि दण्डोरं ए
अंतो वसिओ वि सेट्ठी पच्चुप्पन्नमई किं पि चिंतिऊण मुं
रूपयाई अप्पेइ । पुव्वं तु माणुसयं तस्स सुवण्णस्स आयपाई सेट्ठ
ति बहुया तत्त रोसपसिप्पयेण भणिय गिरं । ण्हाविएण चिंतिय
ण मुंडिअसिरंसि दण्डोरपाएण अवियं धणं हवइ अओ
दण्डोरपायस्स अणुभवो पहाओ । तओ सिंगाय पहुत्तलक्खणस्स
सव्वं । एवं चिन्तंत केसकम्मस्सं मंगलम्मि भणेइ तं सीयाइसि स
रायपुत्ताणं सुवण्णं पेसमाणा । सो तस्स मुंडणकम्मे सुयुत्ते
मुंडेइ । तए समाणे सरीरसमाउयं मुंडिअमाणस्स दण्डोरं देइ । बहु
रूसिओ सो अवियारओ सुरियं सिक्खाविऊण तं ण्हाविअं सुमि
पाविऊण तस्स अरण्णे घाइऊण धणं तओ गओ । तया से

कपमाणो हत्थे जुजिऊण ' हे दीणदयाल ! असरणो तव सरणमुवागओ, पुणो नेव करिस्स, म मुच मुच त्ति जपतो थिओ । लोगा वि वहुणो तत्थ मिलिआ, तेहिं वलाओ मुचाविओ । मरणभयाओ विमुत्तो दुय गच्छतो मग्गे सो सेट्ठिवरो मिलिओ । भयदुय त पेक्खिऊण पुच्छेइ —' भा ! किं अज्ज जाय ? ' । सो कहेइ—" अज्ज मच्चुमुहाओ निग्गओ, जओ मए अज्ज तुम्हाण मुट्ठिअसिरसि टक्कोरे कए अहिग न्न लद्ध, तओ मए जाणिअ धणज्जणे एसो सोहणुवाउ त्ति निण्णेइत्ता रायमुद्दहमत्थग मुट्ठिए ममाणे टक्कोरे दिण्णे आसुरुट्ठो सो छुरिं कड्ढिऊण म भूमीए पाडित्ता वच्छत्थले चडित्ता जाव पहरिउ लग्गो ताव जणेहिं तम्हा उम्मोइओ, तओ भयाओ थरथरतो तुम्हाण मिलिओ" । सेट्ठी वि कहेइ—" वाणिअस्स ववहारो कया वि हियगरो न होज्जा, तम्म दाणम्मि भेओ भये, पचजणमज्झे पुच्छाणिज्जो माणणीओ य अह होमि, त तु निरत्थय सिया । अओ हे ण्हाविअ ! सव्वस्स दाणमि वि रहस्स होज्जा, जओ वणिओ कया वि निरत्थय न देइ त्ति ॥

उवएसो—

वणिणो अत्थदाणेण, नाविअस्सेह दुद्दम ।
नच्चा तव्ववहारमि, सावहाणो भया भवे ॥ ४३ ॥
अवियारियकज्जम्मि ण्हाविअस्स तेयालीसइमी कहा
समत्ता ॥ ४३ ॥

लोहोवरिं माहणस्स कहा चउयालीसइमी–
॥ ४४ ॥

नेय चइत्ता महालोहं, पावस्स पियरो हि सो ।
दिट्ठंतो माहणो एत्थ, सावपुच्छस्स कारगो ॥ ४४ ॥

एगो माहणो वाणारसीए नयरीए चउद्दसविज्जापारगो पढिऊण गिहे समागओ । तस्स भज्जा रूववई सीलवई जिणधम्मवासिया य आसि । पुण्णकम्मेण तीसे सह समागमसमयेण अईव आणंदिओ जाओ । तीए चिंतियं– पढिऊण समागओ मम भत्ता परिक्खियव्वो ति । सो पुणो वि पढिऊण मम भत्ता सव्वविज्जापारगो त्ति मन्नए अस्स केरिसं नाणं ति परिक्खिउं एगया एसा तीए पुट्ठं– हे पिय ! पावस्स को पिया ? । तेण बहुं चिंतियं पि बहुसत्थाणुसारं जाणियं तत्थ तेण पुच्छिज्जन्ते हे पिए ! तुमं कहसु । तीए वुत्तं– अहं न जाणामि किंतु सामि वसहीए गंतूण आयरियं तत्थ पुच्छिऊण अत्थं जाणसु । तओ बीयदिवसंमि आयरियपासे गंतूण पुट्ठं अत्थं । पावस्स को पिया ? । धम्मपरमट्ठं जाणगेण आयरिएण वुत्तं– तुम्ह पच्चूसकाले मासपरिमाणकालो पुण्णं समायरियव्वं एवं सोच्चा सो माहणो किंतुत्तरं पस्से राहो ? इअ चिंतमाणो गिहे गओ । आयरियपरिएण कं सि गीयत्थ-समणोवासगो कहिऊण ठाविओ निगूढठाणंमि धणं ठविअं । अज्ज य वसहीसमीवे धणसुवण्ण-रयणपुण्णं सुरूवं ति । तेण गीयत्थसमणोवासगेण वदन्ति पडिल्ला खणेव मणुस्सं । अवरवासरे सो माहणो तत्थेव धणं खणं सम्मग्गेण खणेव आयरियपुंगवो पुच्छिओ । आयरिएण वज्जरियं– मम एवं कज्जं कुणसु, पच्छा तुम्ह पच्चुत्तरं दाहिमि । तेणुत्तं– किं तं ? । मुणिवइणा साहियं– वसहिसमीवे सुवण्णमोहरे निग्गह तेण धणं

अम आओ गहू-, तेओ तेण कीलिऊण दूरं विमुक्काहि । माहणो कहइ-' पावत्तो माहणो होऊण एरिसं निन्दणिज्जं अपवित्तं कज्जं कहं कुणेमि ?, कया वि अहं न करिस्सामि '। मुणीसरेण वुत्तं -' तुहा अहं न वारेमि, किंतु तुमं जइ एयं कज्जं करिस्ससि, तया तुम्हं एगं दण्डं करिस्सामि '। सो अप्पगेहाओ माहणो बाहणो जाओ, चिंतिअं च रत्तीए मए का जाणिहिइ ? तओ निय माहणत्तणं वीसरिऊण सव्वाइं धणाइं चइऊण लिंगपइट्ठाणगो जाओ । तयणंतरं धम्मीण बाहिरठिअस्स सागरदत्तस्स नगरे पड्डिला दूरं सो माणा अय-मारिया । पुणो सो समीवत्थिअसराजलेण पखालिऊण वत्थाइं परिहिअ सो मुणिवइपासे समागतूण उत्त-' तुम्हाण दण्डं मए कयं तओ रूवगं गेण्हसु । आयरिएण कहियं-एयम्मि गुत्तट्ठाणे रूप्पगं अत्थि तं गिण्हाहि । तया तेण तओ ठाणाओ रूप्पगं गहीयं । पुणो वि सो पण्हो पुच्छिओ । आयरिएण कहियं-' अत्थओ तुम्ह पुण्णुत्तरो दिण्णो, तुमए किं नाहिगयं ' । तेणुत्तं -' सम्मं न जाणामि ' तया मुणिवइणा सव्वपरमट्ठो कहिओ, जं तुम सत्तुयवओ माहणो होऊण रूप्पगलोहेण एयारिसं अकज्जं कयं, तेण तयं पच्चुत्तरं पि समागयं-- ' जओ सव्वपावाण कारगो लोहु ' त्ति तयं बोहणट्ठं मए एआरिसी जुत्ती कया । तओ सो माहणो अवगयपरमट्ठो चित्तचमक्किओ मुणिवरं पणमिऊण घरम्मि गओ । उत्तं च पियाए ' सव्वपावाण कारगो लोहो अत्थि' । तेण पावाण पिआ लोहो णेओ ॥ उवएसो—

' अकिच्चकारगं लोहं, सव्वाणट्ठस्स मूलगं ।
नाणाइगुणहंतारं, सव्वया परिवज्जए ' ॥ ४४ ॥

लोहोवरिं माहणस्स चउयालीसइमो कहा समत्ता ॥ ४४ ॥



सुहासिमाइ उवरिं मेद्दिणो कहा पणयालसइमी ॥ ४५ ॥

अणुमाईप्पसंगस्स, धम्मसीहे सुहासिणी ।
अणुबंधस्स बाहा पुणो, दविप्पा मणिठमा तहा ॥ ४५ ॥

[illegible] नयरे मिरिसत्तो [illegible] मडुबरा [illegible] तस्स [illegible] [illegible] [illegible] अप्पमामा [illegible] नाम [illegible] पि [illegible] [illegible] सुरूप [illegible] [illegible] [illegible] सुहिसार्थ पि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जं पुत्तस्स [illegible] । [illegible] पि पुत्ता न [illegible]। [illegible] [illegible] पुत्तिपुसरिसगा [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि ? । [illegible] [illegible] गुरुमुहाओ सुणे- [illegible] [illegible] [illegible] भोगा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निम्मरूया [illegible]-[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुत्ताणं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सिव ! पुत्ताणं [illegible] [illegible] न [illegible] ? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

दयालू सड मज्झण्हं जाव सव्वोसिं निरग्गल दाण देइ'। तया सो मज्जापरिणोइओ घराओ निगनूण सेट्ठिस्स गेह पइ चलिओ। उम्माहस्स विरहिओ मद मद चलतो विलवेण तत्थ गओ, तया सोट्ठिस्स किंकरमहत्तमो हट्ट पिहेइ। सो मउणेण तत्थ ठिओ, किं पि न मग्गेइ। हट्टाओ निस्सरतो सो त पासिऊण पुच्छेइ-' किं आगमणपओयण'? पुव्व तु सो अमग्गणसहावेण लज्जणसीलेण य न वोल्लेइ, न य पत्थेइ। जया दुच्च पुट्ठ, तया कहेइ - ' खुड्डियकुडुवट्ट वण्णाइमग्गणाय आगओ मि। तेणुत्त कल्लमि आगतव्व, अहुणा समओ न, इअ कहित्ता सो निग्गओ। सो वणिअपुत्तो अज्ज कुडुवस्स निव्वाहो कह होज्ज त्ति चितमाणो दुक्खभरभारेण नेत्ताहिंतो असूणि मुचतो तत्थ चिअ थिओ। एत्थतरे सा सेट्ठिस्स भज्जा नियमदिरवायायणे उवविट्ठा आसि। तीए सो रुयतो दिट्ठो, अणुकपाए सो नियसमीवे आहूओ, रोयणकारण च पुट्ठ। पुणो पुणो पुच्छाए सो नियदुद्दिया-वत्थासरूव कहेइ। सा तस्स भज्जा-पुत्तजुगलस्स एयारिसिं अवत्थ सुणिऊण अइगयकरुणा त उद्धरिउ निण्णय कासी। पुव्व तु त किंकरमहत्तम वोल्लाविऊण उवालभ दाऊण बहुवण्णधण्णाइ तस्स दाविय, अन्न च तस्स भज्जा-पुत्तजुगलजोग्गुवगरणाइ दिण्णाइ। पुणो वि कहिय - ' मम गेह पि अप्पणो समाण गणित्ता निया-सकोणण इच्छियवत्थुगहणत्थ अवस्स आगमणीअ। सो वणिअपुत्तो सक्खा लच्छीव लच्छीसेट्ठिणीए पाए पणमिअ सव्ववत्थूइ च घेत्तूण गिह गओ। पइक्खमाणा तस्स भज्जा सव्वागिहोवक्खरसजुय आगच्छत पिय दट्ठूण साणदा जाया। कह कत्थ वा एरिस लद्ध?। सो सव्ववुत्तत कहेइ। त सोच्चा सा वोल्लेइ—- तीए सेट्ठिणीए कल्लाण सुहपरपरा वछियसिद्धी य अत्थु, जीए सप्पिय-पुत्ताणमम्हाणमुद्धारो कओ'। एव सुहभावणाए सुहासीस देइ, एव च सइ पत्थेइ। एईए

[illegible]
[illegible] मता ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ५८ ॥

[illegible]

॥ ५९ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ५९ ॥

[illegible]

तया उज्जयतगिरिम्मि आगतूण तुम्ह पाए नमसिहामो, नेमिनाह च तित्थयर अचिस्सामु' त्ति नियम गिण्हित्था। सुहभावणाए धम्मपराए कालणुक्कमेण सच्चवईए पुत्तो जाओ। अविगादेवीपसायलद्धत्तणेण देवीदिण्णु त्ति नाम ठविय। मायापियराण ऊसगे कीलमाणो चित्ताणददायगो सो वालो कमेण दुवारिसो जाओ। सच्चवई नियमत्तार वोल्लेइ- अविगादेवीकिवाए पुत्तो लद्धो, तेण उज्जयतगिरिंमि गतूण तीए देवीए तह य सिरिनेमिजिणीसरस्स चरणपउमेसु पुत्त सपाडेमो। ताण किवाए पुत्तो चिराउसो नीरोगी य होज्जा। एव सोच्चा मज्जापेरिओ सो बंभदिण्णो माहणो सप्पियपुत्तो सुहमुहुत्ते विसालानयरीए निग्गतूण उज्जयतगिरिं पइ पट्ठिओ। मग्गे गच्छमाणाण ताण अवसउणाइ सजायाइ, जहा काग खर-सिगालाईण असुहा सद्दा सुणिज्जति, वाऊ असोहणो वाइ, पियाइ दाहिणक्खी फुरइ, चलणा अग्गओ गतु न उस्सहेइरे, तह वि 'ज भावि त अन्नहा न होइ' त्ति चिंतमाणा सिरिनेमिणाह अविगादेविं च हियए झायता अग्गओ वच्चति। कमेण गाम-नयराइ, सोहणाइ यणखडाइ, विविहपक्खिगणसेवियाइ सरोवराइ, अणेगविह-रमणिज्जतरुवर-वुम्महिए गिरिणो य अइक्कमता, तत्थ य दसणीयठाणाइ पासता एगया गिम्हयाले मज्झण्हसमए अडवीए समागया। वुहुक्खा-पिवासाए वाहिआ सच्चवई नियपिय कहेइ—'हे पिय! अहुणा ह अईव तिसिया कठगयप्पाणा जीविउ असक्का, पुत्तो वि तारिसो च्चिअ, तओ कत्थ वि जल लध्दूण देहि, अन्नहा अह जलहीणमच्छीव मरिस्सामि' एव सुणिऊण बभदिण्णो सपुत्त पिय तरुस्स छायाए ठविऊण 'काए दिसाए जलमत्थि' त णाउ उच्चयरुक्खे चाडिऊण चउरो दिसाओ निरिक्खइ। तया दाहिणीदिसाए दूर सारस-हस-बग-चक्कवायाइविविहपक्खिगणविहूसिअ एग महत जलासय पेक्खइ। तओ सिग्घयर ओयरिऊण पिय कहेइ—'इओ कोसपमिअभूमीए

सपरिवारं अत्थि तया तुमं एत्थ समागच्छिज्ज त्ति, तुम्हविओगेण तत्थ एगा तुम्हं अहं आणीअ तुमं पाविस्सामि त्ति कहिऊण मे पच्चीवाय गओ। सा सुयइ पुत्तं पासे ठविऊण अणुदिणेण दुक्खिआ अहूणमोयगया विविहसंकप्पवसगा समयपरिस्समओ य सीयलवायम्मि निद्दावसगया। तया सा सिमयंमि एगो नरपुरिसो समागओ त उवहरित्ता गच्छइ त्ति पासइ। सहसा उट्ठिआ य सुमिणस्स अत्थं वियारेइ — न जाणामि किं अओ एयस्स दुसुमिणस्स फलं भविस्सइ ? किं अणुणो पुत्तस्स य विओगो होही ?। हे भयवं ! ईसरचंद ! असरणसरण ! अणाहणाह ! विणासु पहू ! मम सीलं रक्खेज्ज, मम अणुणा पुत्तेण य सह विओगो मा कयावि कुणसु इच्चाइं कथंती सा दूराओ आगच्छंतं कंपि आसारूढं नरं पासइ चिंतेइ— वेसाविभूसाए एसो को वि रायपुरिसो अत्थि। सो य पुरिसो एगागिणिं तं पासित्ता तीए समीवे समागओ। रूवमइं तं दट्ठूण कामम्मि आगसिओ य कहेइ— हे सुंदरि ! तं का सि ? कुओ आगया ? किं एगागिणी एत्थ ठिआ ? अज्ज भिज्जाइं फलओ जाओ, जेण मम अग्गओ रम्मरमणीओ संति किंतु तुम्हारिसी एगा वि नत्थि तेण तुमं गहिऊण महिसीपए ठविस्सामि। एवं सोच्चा आउलमणा सा कहेइ— हे सुयण ! एवं पि तुमं न जाणेसि जं सई इत्थी नियभत्तारं विणा मणसा वि देवकुमाररूविरूवं पि अन्नं न चिंतेइ। मम भत्ता पवहणगमणत्थं गओ, तओ इमो सिग्घं आगमिस्सइ, पाणेहिं वि सीलमग्गं न चएमि त्ति वयंती सीलमग्गभयाओ सा कंपिया। सो रायपुरिसो एयारूवं तं दट्ठूणं चिंतेइ—'सीलपिसायाहिट्ठिया एसा सामग्गं जाणसइ, तओ अहं एवमि एवं चिंतिऊण आसम्मि आरोवित्ता सपरिवारम्मि पत्तो। अन्नेणेव सा कुमरी एगा तं कहेइ—'हु-

पुरिस ! जलपाणेणावि ममोवरिं केवल अवयारु च्चिय कओ, एत्तो मे मरणमेव वर। सो वएइ—'तुम न जाणेसि, तेण एव वएसि, अह तु इओ वारसजोयणदूरत्थियाए चंदावईनयरीए पहू खत्तियवरो सत्तुदलदलणपक्कलो चंदसेणो नाम नरिंदो म्हि। जइ तुम मम वयण मण्णेसि, तया अन्नरण्णीओ वि मम इव तुम सेविस्सते, अण्णह वला मि त हरिस्स'। सा वएइ-'जइत्थो तुम पयापालो नत्थि, किं तु पयाभक्खओ असि, जेण एरिस अजुत्त वएसि एव वयतस्स तुम्ह जीहा कह सहस्सखडिआ न जाया ?, वियारदिट्ठीए पासतो तव नयणाइ कि न पडियाइ ?, किल तुम न रायस्स पुत्तो, किंतु कुसीलपुरिसस्स पुत्तो' इच्चाइ वयतिं त कुद्धो सो नरिंदो उप्पाडिऊण आसे ठवित्ता नियनयर पइ सिग्घयर निग्गओ। तीए पुत्तो निराहारो रुयतो तत्थ वट्टइ। सव्वत्थ पुण्ण च्चिय जणाण रक्खगमत्थि। वालगस्स पुण्णप्पहावेण तयणतर तेण मग्गेण को वि नवलक्खदव्वसामित्तणेण नवलक्खो नाम वणज्झारो सपरिवारो गच्छतो आसि। अरण्णे वालगस्स रोयण सोच्चा सद्दाणुसारेण सो तत्थ गओ। तरुस्स मूले वालग दट्ठूण तेण चिंतिअ-'एत्थ को वि मणूसो न दीसइ, तेण नज्जइ को वि निट्ठुरो पुरिसो एण वालग चइत्ता कत्थ वि गओ होज्जा'। तओ वालग घेत्तूण अपुत्ताए लच्छी-नामाए नियपियाए सो दिण्णो। अयमराहिया मा वि रूववत मणोहर वालग गहिऊण पुत्तमिव पालेइ। तत्थ पालिज्जतो सो वालगो ताण च्चिय मायापियरे मन्नेइ। मायापियरेहिं तस्स वालगस्स 'सुगराय'त्ति नाम ठविय। कमेण वणझारवालगेहिं सह विज्जा-कलाओ अब्भस्सतो, अणेगगाम-नयरेसु भमतो, विविहच्छेराइ पासतो, मायापिउणो चित्ताइ पमोयतो सुहसुहेण वड्ढतो काल गमेइ।

इओ अ सच्चवईए भत्ता जलाणयणत्थ गओ सो दक्खिणदिसाए दूर गतूण तत्थ एग सुदर सरोवर विविहवरतरुवुदमडिय पासइ,

पासित्ता अहं पिच्छ, ताए य संतपरिस्समो मम्मपुत्तगणण कं गमित्ता कुमणं तत्थ पएसे समागओ। तत्थ पियं पुण मं अपेच्छिऊण गओ गिहाओ मसाणं अत्थ वि तायं सुद्धिं अलहमाणो चिन्तिउं अप्पघायकम्मं च कुणंतो बहुजणत्थावगणचित्तो पिया मि निक्कमसो सोगसमुद्दमग्गो निसुणिऊणं सो गरिहे चत्तो। चित्तमसंघ सा कन्ना रमणे कया इसंता कया य वी ए प कन्ने तस्स रज्जे ममतो कया मुंडन्तो कया अमुण्णतो मणं करेइ। एकेन मज्झा-पत्तलोहरणं मागमवरसमागमस्स तस्स वरसा मासा सत्तरिं तह वि तत्थ सुद्धी न पत्ता।

इओ य सा सत्थवाहं पंरसेभनरिंद पइ बोल्लेइ- अम्मो मम इएणय कुणह किं पि कम्मं न छिज्जिस्सह, अओ हं सोक्खं नत्थि नत्थि। पच्छे वि सीलं न पइस्सामि। तओ मे मेरुव कि कम्मीसिं?। पयाररत्ता कन्ना इह काम म सेवं गमोइदे, पच्चेन रायपुत्त निरय कुणतपरंपराणा अणुमयमि। अओ ममावरि लिंप छिन्ना रच्छंभि पइसम पसप्पसु। अम्मधो सत्थओ वंमो इम नयण समायंपे से पउमसेहरनरिंदो तीय वयणं अमुणंते छिन्नं छिन्नं नासं पोयरंडो संतामणे मिल्लवरसमीवे अणसमा गूढगुत्तारेण नयरे पविसित्ता निम्मयसमावीय सत्थवरसुरकरविक्कमवासए समागंतूण सुयवाई अपरिचयमाइमो ठवित्ता, पुणो नासं समारोहित्ता निययनमेरि समागओ।

सा य सुयवाई एवीम मच्छु-उप-विओगदुक्खेण सह पियास म गमती दिवसमि सीलरक्खणत्थं नट्ठुम्मत्तमहामं कुणेइ। पभाओ समुज्जा निययमणोभाव सिंदेर-किमइं पभाओ कत्थारओ पविसा अप्पयं करेमि? अहवा एवं निवं ठइए पवासेमि? किं करेमि? एवं या लोगे रक्खेमि? इच्चाइविचार एसि गेसी। कमाए

सहस्सकिरणो महस्सकिरणेहिं भुवणतलं पयासेइ । पासायस्स विविहसोहाओ मज्झगया य रंगभूमी वि तीए चित्तं न आगरिसंति । मज्झ मसाणमिव आभाइ । कह एयाओ सुहडरक्खियपासायाओ निग्गमिस्सामि, अहवा अलं चिंताए, ' विविहपयारणपयारेहिं कामध पयाण वंचिऊण इत्तो, निग्गमणं चिय सेयं ' इअ विआरतीए पढमो पहरो गओ। तया सो कामंधो चंदसेणो राया विविहालंकारालंकरिओ तत्थ आगओ। सा तं दट्ठूण जलहीणा मच्छीव सीलभंगभएण तसिआ, कंपमाणा वि वज्झओ धीरयं धरिऊण सीलरक्खणत्थं वएइ– हे नरिंद ! तुम्हाणं पासे एगं पत्थणं करोमि, जओ परदारा संगं जयंमि को वि सुहिओ न जाओ, जह अग्गिसप्पफंसिओ सप्पवड्ढाइ होइ, तह सईनारीण फासेण वि तव कल्लाणं न होज्जा, अपुण्णेच्छो मरणं पाविहिसि, कया वि मेरू वि चलेज्जा, समुद्दो मज्जायं मुंचेज्जा, तह वि हं मरणंते सीलं न खंडेमि त्ति निण्णओ मे जाणियव्वो ' । कामगहगासिओ चंदसेणो राया बोल्लेइ–' हे पिए ! तुमं जहं तहं वएसु, तह वि हं तुमं ण मुंचेमि, जइ तुं मे वयणं मन्नेसि तइ सोहणं, अण्णहा पज्जंते बलक्कारेणावि तव सीलं खंडिस्सं ' । एवं सोच्चा सच्चवईए चिंतिअं एसो कामंधो अवस्सं बला वि सीलं विणासिहिइ, तओ ' असुहस्स कालहरणं ' ति नाएण अहुणा जुत्तीए सीलं रक्खेमि त्ति वियारित्ता तीए कहियं–' नरवर ! जइ तुम्हाणं अइव निब्बंधो अत्थि, तया तुम्ह वयणं एगवरिसंते काहिस्सं, जओ अहुणा मम बम्हवयपालणे नियमो अत्थि, तत्थ वयपालणे वरिसपज्जंतं दीण-दुहिय भिक्खुग-अणाहाईणं दाणं देयं, जिणचेइअपूआ पहावणाइसुहकिच्चाइं कायव्वाइं, एवं धम्मपरा वरिसं जाव चिट्ठिस्सं, पच्छा तुमं जं कहेसु, तहा हं काहिस्सं । ताव पज्जंतं तुमए मम समीवे न आगंतव्वं, दीणाईणं दाणाय सव्वसामग्गी तुमए पूरियव्वा ।

जइ वि य मरणं ताव भिक्खुग्गहणेण रज्जं पालेमि । इओ चरित्तं न कोवि पारं पावेइ त्ति वयणं सच्चवियं हव विवेग परिहीणो सो दीण वयण संकप्पं करेइ । तया चोरसेणो नरिंदो तं पयपासुसारेण तस्स रज्जभारं करेइ, सा सुवण्णरेहा पच्चूसे समए ताव जे के वि नयरस्स देसंतराओ वा आगया भिक्खुओ माग णगरस्स समागच्छंते वणवासिणो दीणा दुहिया अणाहा वा समागच्छंति ताण भिक्खं दवेइ । निययपुरस्स समाचारं पुच्छेइ । समागम-वार्ता भिक्खु-अमच्चत्ताइविविहपत्ताइं कुणेइ रसीए नमुक्कारसहस्सं झायइ एवं धम्मं समायरंतीए तीए दिवसा सुहेण गच्छंति । अन्न वासरसमएसु एगो दिवसो भणसिहो सभाओ । परिमियंमि स पाणसमाए भिक्खा निमंतियपरंमि [illegible] सो दविणत्थं इव पिच्छए [illegible] समोसरो निग्गह त्ति लोग दुक्खस्स [illegible] आगमणेण सुहाविसावसाणेण य [illegible] मूयं समीवगे [illegible] एवं माइयं करेइ, वरिसि निवएण एसो मम पिया त्ति निण्णेइ । भिक्खयारं पेसियत्ता नियं [illegible] संजाओ । कह नियं पिइस्समि त्ति चिंतंती सा रज्जभारं विसेसपरिचयपगसं तस्स समीवे पेसेइ । सो रज्जपालो तस्स पासंमि गंतूण तं पुच्छेइ— कत्थ नयराओ आगओ ! किं नामं ! किमत्थं एवं भमेसि ! । सो सारओ तस्स नियं सव्वं वुत्तंतं कहेइ । तओ सा रज्जपालो सव्ववरं पुरओ आणेऊण सव्वं तस्स वुत्तंतं कहावेइ । सा सुणिऊण भणइ— ता पिय न मन्ने त्ति । कया सा तं रज्जभारं [illegible] वहेमाण तस्स हत्थेण भोयणं माइयस्स [illegible] हे ताय ! तुम्ह पिया सव्ववर्णं नगरस्स [illegible] किं सिक्खियं [illegible] अवरस्सं विकिट्टियं, न जाणामि होसि । सो वि एवं

सिवापउत्ति सुणिऊण सत्थचित्तो पियानामसवणेण पत्ताणंदो समाणो भोयण गहिऊण तत्थ सियालए गच्छिऊण माणट भोयण किच्चा सियासण पइक्खइ ।

इओ चंदसेणनरिंदो वि सयरईए सह कामभोगे अहिलसतो कट्ठेण नरिस जावतो तद्दियसे रत्तीए पढमे जामे सुन्दरवेसभूसाजुओ विविहभोगसामग्गिसहिओ तीए पासे समागओ । सा उ कामय नरिंद दट्ठूण 'कह सील रक्खेमि' त्ति सीलभगभएण भीया अहोमुहा विआ। चंदसेणो राया निय असि पल्लंके ठविता उववििसत्ताण कहेइ हे पिए । अज्ज तुम्ह मज्जाया सपुण्णा, अहुणा मए सह रायारिद्धिकामभोगे जहिच्छ भुजाहि । सा उ धीरिम धरित्ता मायाए वएइ—हे महाराय ! तुम्हाण वयणाहीणाह । तुम्हे जह कहिस्सह, तहच्चिय अह करिहिमि । अज्ज रत्तीए सुह खाएमो पिवेमो मज्जपाणपि कुणेमो । 'मत्तियाण मज्ज अईव पिय अत्थि' तओ सुन्दर सुर आणावेह, तेण सव्वरत्तिं आणदेण नएमो । एव सोच्चा 'एसा सव्वहा ममोवरिं रत्तचित्ता वट्टइ' त्ति हरिसियचित्तो सो मूढप्पा महुर मज्ज समानेइ । 'विणासयाले विवरीयबुद्धी सजाएइ' तओ सो तीए रूवे आसत्तो अप्पणो विणास अपेच्छतो मज्ज अईव पिवेइ, तीए वि पाणाय देइ, सा गहित्ता 'इ पच्छा पिविस्स' ति नेहनाडय करती पुणो पुणो त च्चिय पायइ । एव सो अईवमहुपाणमत्तो ल ल ल लवतो कपमाणसरीरो इओ तओ पडतो सो मुच्छ पत्तो, नट्ठसण्णो य पल्लंगे पडिओ । भय इव त दट्ठूण साहस धरित्ता, रण्णो असिं हत्थे घेत्तूण, चडिगेव रुद्दसरूव धरिऊण निवस्स गलकदले पहार तह देइ, जह कवध सीस च एगपए भिण्ण जाय । अप्पकाल कपमाण कवध पि निच्चिट्ठ जाय । एव सो चदसेणनरिंदो परदाररमणवछाए अपुण्णेच्छो मरण पप्प दुग्गइ गओ ।

सा मुच्छाए मरणसमं नरिंदं दट्ठूण समणा — कहं एवं पाणपियाओ निक्कमिस्सं ? अहं वा भत्तारं विणासमए मिलिस्सं !' त्ति झायंत मणोहा। पासायपुत्तं सुहसंपसुत्तस्स तस्स पच्चुप्पण्णपुण्णी सा पासायस्स उवरिं ठिअं निवसंस सह वासहरिअ, तम्म सुवमाणवस्स गहिअम्म पासायपव्वाणमणोठिअपासवासस पल्लंकस्स पविसिअ मज्झरत्तम्मि तीए पडिगमए विउंमि वोसन्न। रायभवणेण गच्छंती नयरदारसमीवं गया। तहार पिहिअं वसिअ नयरदुवारं अवलंबिऊणमणपवेसेण बहुत्त सा नयरबाहिरं निग्गया। सिवसम्मासाय हरिसियमणा सा सिग्घं सिग्घं दक्खिणदिसि विवरीअवणं वच्चेइ। तत्थ गहूण हे पिय ! पिय ! कम्म कूडे ! विणासदुक्खसंविग्गाय मे दुक्खं देसु, मा विलंबं कुणेसु। तया कोइ पच्चुत्तरं न देइ, तया सा सिवायणस्स चउसु दिसासु निरिक्खइ। तह वि सा धुवं न पासेइ। तओ सा सिवायणस्स गब्भहारं सिग्घं पासित्ता उच्चसरेण पिय ! पिय ! त्ति पुक्करंती एवं च पयत्ता पवेइ एवं दोच्चं तह वि कुणइ, तया पच्छणासरहारं उग्घाडेइ। तओ भट्टमालतीयस्स मंडवाण्णेण भूमिमग्गस्स उवरिं कुणंतं विसमिणं पासेइ तस्स समीवं गच्छा, समं दुट्ठं पासित्ता वक्ख मम पि ति तीए जाणयं। हे पिय ! कहं वायणा जाणेव ति उच्चसरेण ठं बणावेइ, सो य कणइ, तओ सरीरसंवाहणेण कणावेइ तह वि सो न उट्ठेइ मणं किं पि पच्चुत्तरं देइ। तओ वि कहइ — हे पिय ! तव पिया तरिसवि संकमणकंठा एत्थ समागया किं मोणेण ठिओ सि ? पुव्वभवा सरिया मं दरिसणमेत्तेण जाणसो, देवपुरीभाव अलंकरणेण अहं नरिंदं भायारं वंचिऊण दरिसणं निव्वसयमव असमंजसीय मम किं न उत्तरं देसि ? । सिवदरिसणिअं विओगदुक्खमहग्गं मे जाणंतेवि, तह वि सो न वयइ। तया सा तस्स उवरिं ...

निरिक्खेइ, ऊसास-नीसासरहिय सीयल सरीर दट्ठूण, 'नूण एसो किं मओ ? इअ वियारती सा गब्भागारे चउसु दिसासु दिट्ठिं कुणेइ, तया कोणगे एग भयकर विसहर पासेइ, भत्तुणो य सरीर पि विसमइय पासित्ता निण्णेइ-'एएण सप्पेण मम पिययमो अवस्स डसिओ, तेण मओ एसो', एव निच्छय किच्चा पइमरणदुक्खसह-सहिया पइसिर नियके ठविऊण हियय कुट्टती, अंसूणि मुचती विलवेइ- हे दइव ! अयंडे किं कय ?, सामिरहिया कत्थ जामि ?, किल मे हियय वज्जेण घडिय चिय, जेण पियमरणेण सहस्सहा न भिन्न, अहुणा मम जीविएण किं ?, एव बहुसो विलाव कुणती 'नूण रायहच्चापावकम्म अज्ज मे फलिय' ति सा सुमरियनिवहच्चापावकम्मा भयवेविरगत्ता तत्थ ठाउ असत्ता 'सामिसवस्स ज होज्जा त होउ' निण्णेइत्ता, मा तस्स देहस्स अग्गिसक्कार काउ असमत्था, जओ पभाए रायपुरिसा म गहिस्सति त्ति भयभता सिवालयाओ सिग्घ निग्गतूण अग्गओ वणमग्गे चलिया ।

इओ अ पभाए सजाए वि चदसेणनरिंदे रायपासायाओ बाहिर अनिग्गए समाणे पासायरक्खगपुरिसा विविह वियक्क कुणति अम्ह महाराया अज्ज एयमि पासाए परदाराए सह रत्तीए वसिओ, परत्थीण वीसासो कया वि न कायव्वो, जओ-'वीसासो नेव कायव्वो, थीसु रायकुलेसु अ' । अओ पासाओवरिं गतूण निरिक्खियव्व । तओ ते सव्वे पासायस्स उवरियलभूमिभागे गया, तया पल्लगस्स हिट्ठमि भिन्न भिन्न रुहिरविलित्त सिर कवय च पासेइरे, 'केण दुट्ठेण इम नरिंदहच्चामहापावकम्म कय' ? ति चितमाणा ते पट्टिगारहिय पल्लग वायायणे य उब्बद्ध पट्टिग दट्ठूण निण्णयति-'महाराएण हरिऊण आणीया एसा नववई सीलभगभएण मज्जपाणमत्त अम्हाण सामि हतूण वायायणबद्धपट्टिगापयोगेण इओ पलाइआ' तओ ते निग्गच्छित्ता

गामप्पमाणपुरिसं सप्पं निवेसंति। तया सप्पं मत्तं करिचरण समायरणं सोमरूवो संजाओ। सव्वदंसणगाणत्थं नगरं तिण्हं मुहत्तं पेरिसाए निवेइ कुणो वि दुही न जाओ। वासुदेव नरनाहगा पेरस्स अभिसरणं कुणसि। पंससेणपुत्तसुरसेणस्स एवं दिण्णं। एवं परायावरणस्स अणुणयण विवाग दट्ठूण नयरजण परायणिरमा संजाया।

इओ य सा सुवण्णई रायगिहसीमोगमणलायारुवसूसिया एगीए परमधामे सिवारणाओ निगाया तया गयणंसी अंतवारे य अवमाणंती पवम्म-अंगगाइअप्पविवरं सव्वीं महुरं निगाया। एग रयणंसि वासमणवरत्ता परस वि वणिअस्स गेहे अवं वाणिअय एग पमाई हरिऊण वणस्स मज्झे दरओ ठिआ वि नगयालूण हरिवस्स मणाईय समसमा कुणंत घरवी चोरे पासेइ। अणसो वणि कणिअं ति विचारंती सा मंदमंदय मणोहे। तया तिण्ण चयाणं मंदसंचारवयं ठेई मुणिया। तओ ते तिण्ण संमुहं चलेइरे। तया सुंदरयराणू सयपुरिसा सरुवणी रूवमति मसंति दट्ठूण महुरं ते निवरेंति पुणो तीए मणुसाणं वासुरयाई निविहऊण पुच्छंति– तुमं कुणो आगया? कस्स दुहीय वसति?। मणोरमा सा वयइ– हं अंगणा! अहं दुहिया महुरयणस्स अणगा निरवराहो कण वि गओ संमुह मणि वणिअस्स गेहे परायणाई धणाई निव्वाहेमि, मम सुवण्णं अणहारिणाई एवाई न किंपि अ वणोमर्णं? गंतुं मे अणुकंपेह, अवनंतिअणस्स आवयं गमिस्सामि। एयरणे पवित्रा सज्जे पविसुं होइ चोरा ए विचारंति– एसा अणया संधिपुच्छमिहवि अवाणीगी अप्पहा रूवंती अत्थि तओ अम्ह वि एवं निव्विसिस्सामो, तया अणुणयं करिस्सामु'त्ति निच्छिऊण कहेंति– अम्हे तुमं नयरस्स हेसिअ निवणाणं वणिअस्स'त्ति कहिया ते चोरा

अमाओ गहणमएण उप्पहे निग्गया । सा सच्चवई तेहिं चोरेहिं सह चल्लमाणी चिंतेइ– एगदुक्खाओ मुक्का समाणी अन्नम्मि कट्ठे पडिआ । धिद्धी देव्व, जेणाहं एव दुक्खपरंपरा दइव्वेण पाविआ । मं गहिऊण चोरा किं करिस्सति, 'जं वा तं वा होउ' पाणंते वि सीलं रक्खणिज्जमेव । कमेण सूरोदए जाए वि ते थेणा मज्झण्हं जाव चल्ला कमेण चंपानयरीए समीवं पत्ता । सा सच्चवई अईव संता छुहपिवासापीलिआ पयं पि चलिउं असमत्था जाया । तया ते चोरा एगम्मि सरोवरे गया, तत्थ ते सव्वे मुहं हत्थं पाए अ पक्खालिऊण संतसमा ममाणा नयरम्मि पविट्ठा, चउप्पहे कंदविअस्स हट्टे छुहावणयणत्थं भोज्जाइं पक्कन्नाइं घेत्तूण सव्वजणियधम्मसालाए गया । तत्थ तीए सच्चवईए सह चोरेहिं भुत्तं । उवसंतखुहापिवासा ते वियारंति– 'एईए न किंपि पओयणं सिज्झिस्सइ, तओ कत्थ वि एणं विक्केऊण दव्वं गहियव्वं' । तओ तेसिं दुवे चोरा आवणपहम्मि गया, दोण्णि चोरा तं रक्खंति । सच्चवई तत्थ थिआ वियारेइ– 'एए मं किं करिस्संति ?, एआणं हत्थियागारेणं नज्जइ अवस्सं एए कम्मि दुक्खसंकडे मं खिविस्संति' तओ आवडंतिं दुहरिंछोलिं दट्ठूण 'पुव्वं बद्धकम्माण एस विवागो' त्ति । जओ उत्त—

अवस्सं चिय भोत्तव्वं, कयं कम्मं सुहासुहं ।
नाभुत्तं झिज्जए कम्मं, कप्पकोडिसएसु वि ॥

तओ नायजिणधम्मसरूवाए मए समयपत्तं असुहं कम्मं समयाए सहियव्वं ति चित्तं थिरीकरेइ । जे दो थेणा चउप्पहे गया, ते आगंतूण कहिंति—एईए चंपानयरीए नायनिउणो विक्कमो नामं राया रज्जं कुणइ । नयरीए मज्झभागे एगं महाविसालभुवणं रायमंदिरमिव अम्हेहिं दिट्ठं । पासायस्स अग्गओ एगा ढक्का थिल्लाई,

इयाणसमीवे रायमग्गट्ठिय मणिमयकणयसोहिय वरविविहमुत्ताहल पासायं पत्ता सव्व सुवण्णी वहू । तीए पासम्मि गंतूण पुट्ठं कत्थ म सुवण्णं ? कत्थ तुम किमट्ठं आगया इत्थ ठविया ? । सा वयइ एवं मम्मदीय रज्जे वि सामत्थविरहिय पुरिसस्स मम सुवण्णस्स गहिय निमित्ता मम सामी पच्छा गच्छिय अइ । सममो समाओ मम सद्धिं गहिय । जारिसाणं तारिसाणं पुण अवसरो वि न सिया । तरस्सस कोऽवि गंतुं सक्को ? तं किंपि परस पओगं पत्तो । तत्थ न तो केवि अवरं इव्वं दाविय पच्चपयट्टुं इच्छइ, जो इमं महावण्णं बलं परिणेइ । एयाए महासत्ताए सद्दो मम्माए सव्वाए सुणिस्सइ । तं इच्चाए महेण अणाणि जाणंति– जो वि अवरं इव्वं भणिय कुमारकाणवेसाए सुयणो पविट्ठो इत्थ कहिया वेसा पुच्छ-–के तुम्हे किमत्थं एत्थ समागया । एवं सोच्चा अणोरिं कहिय– अम्हे, एवं अस्सवसाणइ पुत्तिं निकवं पत्ता समागया । एसा सुवण्णा सा वेसा भणेइ– अइ सा पुण्णमई सिया तया सुवण्णं मम अप्पिय गिण्हिस्सामि । तओ तत्थ खिप्पं समागया । एवं सा दे सव्वं नियमाण किच्चा वेसाणि मिसेण सुवण्णइ वेसुम वेसासुवण्णं आणाया । सा कुमारकाय सुवण्णइ अवलोयणसामिणि वत्थूणं चोरणं कुरमाणियं गयं पाइव्व गिण्हिस्सा । चोरणि धणं अत्थूण सम्माणं समम्मा किच्चा गहिय य निसम्मा गया । सुवण्णइ अवमुक्कणे सवणवेसिण् रूवमं मच्चा सा कुमारकाणवेसाए वेसाजोगस्स निवुत्तिं किच्च सुवण्णस्स गहियमुणिमग्गो अवे ।

वेसासुवण्णया अणयणिकासणवेसिया, अवलाजोव्वणा वि सुवण्णं वेसाणिं विच्चकेइ, अओ जत्थ अओ वेसाणा निवसामिकीडणसमिणो अणो अणवीरस्सवणो अओ नपुंसिसयमरणमिणाओ अओ अवमाणवणकीयणो, अया

सव्वगपाणहरणपवराओ, काओ मज्जपाणकरावणेण परवचणपराओ सन्ति। ताओ पासित्ता कह अह थीण अलकारभूअ सील एत्थ वेसाघरमि रक्खिस्स ?। सीलरक्खणत्थ पचपरमिट्ठिपय निच्च झायती जहसत्ति तत्र कुणती नामरे नेइत्था।

कामलया अक्का वि अच्चब्भुयरूव त जाणित्ता सव्वासु वेसासु त उच्चपए ठवित्ता 'जो लक्खं दव्व दाही सो एयाए सह कामभोगे भुजिस्सइ' एव निच्चय अकासी। तओ लक्खदव्वदायगस्स अभावेण वेसाघरमि थिआ वि निम्मल सील पालेइ। एव धम्माराहणपराए दुवालस संवच्छरा सुहेण वइक्कता।

इओ य सो नवलक्खो वणज्झारो सुराग्रयसहिओ अणेग गामनयराईसु कयविक्कय कुणतो भवियव्वयाजोगेण चंपानयरीए समागओ। नयरीए वाहिर उज्जाणभूमीए पडवराइ ठविऊण सपरिवारो तत्थ निवसिओ ससाणो नयरीमज्झे नियकयाणग विक्केइ, विएसजोग्ग च गिण्हेइ। मायरपियरभत्तो सो सच्चवईए पुत्तो सुरराओ वावार-करणनिउणो पिउणो सहेज्ज करेइ। एगया सो पच्चूसकालमि मित्तपरियरिओ नयरीसोहादसणत्थ नयरिं गओ। तत्थ विविहच्छेगाइ पासतो, हट्टसेणीओ अइक्कममाणो दइव्वजोगेण कामलयावेसाए सव्व भुवण तयग्गओ य ढक्क पासेइ। ढक्काए समीवमि थिअ कामलयावेस पासित्ता पुच्छइ— 'कस्स इम भुवण, किमट्ठ इय ढक्का एत्थ ठविया ?, का तुम असि ?। एव सोच्चा वेसा वएइ— एईए चपानयरीए रायमाणणीआ कामलया नाम वेसा अहय। वार-गणासयमामिणी, अम्हकेर इम भवण, जो को वि सिरिमतो लक्खं दव्व देइ, सो पुरिसो इम ढक्क वाइत्ताण भुवणतरे पविसित्ता मणव-ल्लियरूवसदरीए सह कामभोगाइ भुजेज्जा। एव सोच्चा पुव्वभद्दक-

गुरुक्कम मो तत्थ आवसमणक्का पियपरिवुडो सिवासवे समागंतूण विसज्जवियपर करेइ—हे मायापिअ्या ! मज्झ एगो कम्मयम्मे समग्गो! तं कहिहि हे पियपुत्त ! किं तुमा पत्तायर्ग ? अणेण वो वाणारो समवगो? अदुरस्मपवयरण अदुमा न समुइयं । तया सा सुमणया—'कम्मसमागमे इतच कादूना वसाभुवम्मसमयमपण मम कटुइ ति मुवसे वयं सममय निवेमइ। आ इसमणायमसरसमणयाण तुम्हाणं सिजवसे मसीन होहि । तंम मायापिआ तं कहिहि वच्छ ' वससीन हर पमे के क युद्द न एसा ? सदसाम व तुम्हाई म गया ? । सयणघवेसु वेसासमो सम्मपसमाणं मूसमरण तथा असमसं चाइमणा, पियेव मि तीन अभिराया न आवमया । तया सा सुमणाता जद्द न वाहिए तप इं अपमपारु मर्द ति वीमावेइ । एवं सोच्चा मायपियरा सुहपी अगाम वाराओ पुणो विमय तम विया ।हं, कामिमा !' एवं विविहिउ कम्मणवच्या ससिणेह तस्स रिच्चं । तया सो तं समय-समर्क पहुणं मिगे कुसमवयावेसामकरमि मओ तीए सयलं दामन हलं वाइयाणं वेसायरमि पविट्ठो । कमवसओपसोइव पाएई मि आविमं-क पि पवयोवा सज्झ कुसमवयनेसायरमि पविट्ठे । कुसमवयनेसम वायुम्मु अम्ब-अहिमियमेक्मपणाओ कारीओ तं रुचहूं अगुणरूं कामर्हि, कओ चमरेहिं वीयंति, कया पिडेमव कुसंति अयओ तंमूलपुत्रणं दिति अयओ अमय-अम्मारं अप्पिंति अयओ हत्थप्पसाभिएवं ईसिरे, अयओ दसमायमियासेहिं मोरंति, एवं वाओ वेसाओ सविवं विविह-कुसीहिं देविंर । सो सुमणया कम्मवक्ख्यासम्गओ सम्मसुरओओ वेसओ कम्मु मम अकुमीओ सुमकर— सत्तो अमीयसमा सुंदरी अथि म वा तया सा वासम्मय अक्कम पासायोवरियम्मीणं सवर्णु दरिसिवं एवं दसि तीम समीवेवि मेरं आमिसेइ । सा सासी तं सुमणणं सुवर्णिए सिवासवाणं दसेइ । तओ सो सुमणाओ तीए

एत्थ सा सुवई दुवालसवरिसंते ढक्कारव सोचा चितेइ— अन्न को वि सिरिमंतो नरो कामलयाघरंमि पविट्ठो, जइ मज्झ पासे आगच्छिहिइ, तया इ कह सीलं रक्खिस्सं ?, अओ अप्पघाओ वरं, एवं वियारंतीए तीए सुहसूयगं वामनयणं फुरियं, अणेण चिण्हेण एयंमि वेसागेहंमि किं सुहं होज्जा ?, मम भत्ता मओ, पुत्तस्स वि संगमो न संजाओ, ता किं जीविएण त्ति झायमाणा सा पल्लगट्ठिमि अहोमुहा उवविट्ठा अत्थि ।

सो सुगराओ तीए निवासब्भंतरंमि गच्छमाणो निम्मलवत्थगच्छाइयपल्लगा तस्स य समीवे अणुवमरूवं पसंतचित्तं अहोदिट्ठि सुववइं पासेइ, पासित्ता वियारेइ— एसा चत्तसिंगारा पडिवहीणा सोगमग्गा अहोदिट्ठी किं पि झायंती मम कुलवहू इव आभासेइ, पुव्वदिट्ठवारंगणाहिंतो विवरीअसरूवा इमा अत्थि । सा वि पायरवसद्देण 'एत्थ को आगओ' इअ उड्ढमुहं किच्चा तं सुगरायं तेयंसिं सुंदरजुवगं जोव्वणपारंभट्ठिअं पासित्ता पुलगिअंगिया महुरसरेण तं पल्लगंमि उववेट्ठुं कहेइ । सो वि तत्थ उवविट्ठो समाणो तीए मुहं पासंतो उवसंतकामभोगाहिलासो संजाओ । जणणीनेहपवलत्तणेण तस्स तीए अवरिं माइव्व सिणेहो पाउब्भूओ । सो विगप्पेइ— 'जीए आसाए अहयं एत्थ आगओ सा आसा नट्ठा, लक्खदव्वं पि मज्झ नट्ठं, इयं न वेसा, जओ सुकुलुप्पन्ना कुलवहुव्व दीसइ, इमीए वेसावित्तित्तणं न सिया' । तओ सो बहुमाणपुरस्सरं सीलभंगभएण कंपमाणसरीरं तं सुव्वइं हत्थेण घेत्तूण पुरओ ठवेइ । तया सा तस्स हत्थफासणेण 'किं अयं मे पुत्तो' त्ति जायापरिओसा थन्नं झरंती नेहपुव्वं तं निरिक्खेइ । एवं दो वि परुप्परं पासमाणा जायक्खोहा खणं मउणेण ठिआ । सा सुव्वई धीरत्तणं अवलंबित्ता पुच्छइ— हे उत्तमपुरिस ! — — — अत्थि ?, मायपियाणं किं नाम ?, जम्मणठाणं किं ? एयं

न्नुप्पन्न सो तत्थ कामसमपेक्खो चित्तपरिवुडो निवासाओ समागंतूण निक्खमाणं पियरे कहेइ— हे मायापियरो ! मज्झ एगं वत्तव्वं सुणेह। ते कहिंति हे पियपुत्त ! किं तुम्ह वत्तव्वं ? कहेसु जो तुमाए वत्तव्वो, अम्हे तुम्ह वयणस्स अवण्णा न करिस्सामो। तया सो सुगराओ— 'जम्मा-णंतरं इमस्स पाइणा वेसाजुवइसमपेक्खा मम बहूइं वि दुल्लहं धणं समप्पिअं सिया। तं इमस्स वेसालयस्स अणेण कुमारेण सह वसेज्ज होज्जा। तया मायपियरा तं बोहिंति वच्छ ! वेसासंजोगेण इह कस्स वि कुद्दं न पत्तं ? परलोगे य कुमई न गया ?। सत्तवसणेसु वेसासंगो सव्वगसयाणं मूलकारणं तओ अवस्सं चाइयव्वो, चित्ते वि इमं अहिलासा न कायव्वा। तया सो सुगराओ— वच्छ न कहिव, तं इं अप्पणा कइं वि चिंतेइ। एवं सोच्चा मायरपियरा पुत्तं कम्हाए बाहाए पुत्तो किंच तया निमा अइ, कहिअो !' एवं चिंतिऊण अप्पणा वयणं सक्किज्ज तस्स दिण्णं। तया सो उ पत्तधणं पहूणं सिग्घं कामकलावेसरूवतीभि तओ तीए अव्वं गामं वरं वाइ वाणं वेसागसंमि पविट्ठो। अणेगसयणसहेण पच्चडि वि आयणि-म वि वणंतो वग्ग कामकलावेसबोहंपि पविट्ठो। कामकलावेसाए वाउप्प कवोल-अहिमवकेलमाणो गाढिओ व दूरंसुदुल्लहं पसंदीइ, कयाओ पसरेहि वीयंति, कया निवेयणं कुणंति कयाओ वत्थुपुप्फाई सिंचि कयाओ कमलवत्थाइं अप्पिंति कया हत्थपायाभिसयं रिसिरे, कयाओ हत्थग्गवियरणेहिं मोएंति एवं तओ वेसाओ तस्स विविह-सुवीहिं रंजेइरे। सो सुगराओ कामकलाअणुरत्तओ तस्सुदरीओ वेसाओ कमसु मग अहुणो पुच्छइ— तओ अहिमवया सुंदरी अत्थि न वा ? तया सा कामकला अवत्थ पासायाइजिणपडिमं सुवण्णं दंसिऊ एवं तुम्हं तीए सव्वंगमि मेणं आलिहेइ। सा पासंमि तं सुगराणं सुवण्णइ सिबासमपं दंसिए। तओ सो सुगराओ तीए

...त सुणित्ता मजायहियययाघाया मुच्छिया, पत्तचेयणा नीसाम
...ती रुयंती हे दइव्व ! वइरीव ममोवरिं किं कुविओसि ?, ज
...रिसीए वोत्तुं पि अणुइयाए अवत्थाए अह पित्ता सि । पुत्तसगमाओ
...न मरणं हुतं ता वरं, जओ एरिसं वुत्तन्तं कहिउं समयं न लहती ।
पियपुत्त ! पुत्तसगमुक्कठियाए मज्झ तुमं अज्ज मिलिओ सि । मए
...न जाव जं दुक्खं पत्तं तं कहिउं पि न पारेमि, तहवि पियजणपुरओ
...न कहिज्जइ। तं चिय दुहसमणोम्हइ, अओ अप्पवुत्तंत कहेमि ।
...सो सुगराओ सम्बवहए वयणं सुणमाणो वियारेइ–मए एगदिवसेण
...ममभोगत्थं लक्खदव्वं वइअ, सुहं तु न पत्तं। इमा इत्थी मम पइ पुत्तव-
च्छलभावं दसेइ, पियपुत्त त्ति वएइ, एत्थ किं पि रहस्सं होज्जा, पुव्वं
...ए वत्ता सवणीआ, एवं विआरित्ता सो बोल्लेइ—'अहं एत्थ किमट्ठ
आगओ सि, तं तुम्हे जाणेह, मं पइ तुम्हे पुत्त ! पुत्त ! त्ति कहेह,
तत्तो मए सह तुम्हाण संबधो होउ, वा न होज्जा, तह वि अज्ज
आरब्भ तुमं जणणिमिव जाणिस्सं, तओ नियं अप्पकहं कहिऊण मे
असत्थचित्तं पसमेह' तओ सा सुव्वई अप्पणो सखित्तेण वुत्तंत
कहइ–" विसाला नयरी, वभदिण्णो माहणवरो, सच्चवई भज्जा,
अविगादेवीपसायलद्धत्तणेण पुत्तो देवी-दिण्णो । उज्जयंतगिरिम्मि
जत्तत्थगमणं, अरण्णे सच्चवई पिवासिआ, भत्ता जलाणयणत्थं दूरं
गओ। तया चंदसेणनिवेण सच्चवई अवहरिया, पियसगमाय नियं
इच्छा मज्झरत्तीए निग्गया, सियालए सप्पदंसेण पियमरणं, रण्णे
गच्छंती चोरेहिं गहिया, तेहिं वेसाघरंमि विक्किआ, दुवालसवरिसं
जाव भील पालंती एत्थ थिआ सा हं सच्चवई तुम्ह जणणी "। हे
पुत्त ! अज्ज तुमं माऊए सह कामभोगाय लक्खदव्वदाणेण एत्थ
समागओ सि । कहं कम्मेण नडिआ वेसारूवा हं मुहं तुज्झ दंसेमि ?,
एत्तो पुव्वं मरंती तया वरं, जं एरिसाए आवयाए न पडंती ।

मारे मज्झ जिणस्स हाइ अओ तुम्ह दसणाय अहं वा ति मे ।
सव्वं वत्थु ति चित्ते मे पत्थव्वं संजायइ । तया सा सुगराओ वय
इ हे निच्चाहमि ! मम भाणं सुग्गराजा, पिउस्स भणिय मायराज
वत्थमाए भाउय भविस्सा अप्पणो उस्सग्गि उ वत्थरोल, सव्व
ममाणहारा अम्हं इमा वइ आणाविं न विसरं । तत्थंतर सव्वं
वयइ – हे पुरिससिङ्घ नामगिहिए तुम न पयट्टामा, भायरेण चेहरम
भामज्झ य तु रसमगुकं उप्पण्णा मज्झइ । तया सा सुग्गराया सम्मोवे
अहं मायपियरो पुच्छिऊण सिग्घं आगमिस्सं ति कहिता कमलप्पहम्‌
सह मेलावं अहिमय गिहे गया । मायापियरा सुगराई सहसा आगयं
दट्ठूणं परिपुच्छइ – हे वच्छ ! किं तुम्हं आगमणं ? । तया ते
कमलप्पहरे जे महूणं तं सव्वं कहिऊण अवसरे दसणीए पया पुढ
पुत्त तु ते मज्झमय ठिआ न किं पि कत्थंवि अम्हाणं चिय तुमं पुत्त
असि त्ति कहिंसि । पच्छा तस्स सव्वंसमिच्छणवसाय तहिं कहिंसु – हे
पुत्त ! तुह धम्मरज्जं जाई य मायापिऊणं य मज्झं आम्ह न जाणामो ।
जया इमो दुक्खसमरित्ताओ पुव्वं दाहिणदिसाए समवणज्जविरं
धम्मम्मि मज्झच्छवाडे तस्स मूलम्मि सेवगसमणाउअलेरा तुमं
मणम्मि एयगी रूवो तुम पुत्तपीपाई अम्हेहिं रक्खिओ, तओ
आरम्भ सोपरम्मत्पुत्त तुमं पालिओ सि । कम्मवाणरे तुम्ह माया-
पिउरे अम्हे वि न जाणेमो । आयारसमवसाणेहिं तुमं वच्छुल्लओ
मग्गइ । एवं से सुमिण कुमाराण्णाय वयं पय निमाया मओ तम्मि
तस्स वास आयमवारो वारोरो य पुण्ण निहवाओ सव्वीओ समुद्द
पयाओ सरीरे य वसहं सयाओ, पच्छा पि अओ न कहंपि एवं
अवसरम्माइं संजायाइं । अह वि हमि आयसच्छागि भागमिया निमि
हासुरस्स कुमंरो सुरयहए वासं समुप्पाअओ ।

सा सुग्गराइ पियरस्स आयरं तं कहित्ता पुण्णमिव तस्स अप्पयहं
पुच्छइ । सा सुग्गराओ समपिरसे गेहिं नयं सम्मं 5 ?. ~ । तओ

एत सुणित्ता सजायहियया वाया मुच्छिया, पत्तचेयणा नीसास मुंचती रुयती हे मइन्च! वहरीव ममोवरिं किं कुविओसि ?, ज एरिसीए वोत्तु पि अणुइयाए अवत्थाए अह खित्ता सि। पुत्तसगमाओ पुव्व मरण हुत ता वरं, जओ एरिस वुत्तत्त कहिउ समय न लहती। हे पियपुत्त! पुत्तसगमुक्काठियाए मज्झ तुम अज्ज मिलिओ सि। मए अज्ज जाव ज दुक्ख पत्त त कहिउ पि न पारेमि, तहावि पियजणपुरओ सव्व कहिज्जइ। त चिय दुहसमणोसह, अओ अप्पवुत्तत कहेमि। तया नो सुगराओ सच्चवइए वयण सुणमाणो वियारेइ—मए एगदिवसेण कामभोगत्थ लक्खदव्व वइअ, सुह तु न पत्त। इमा इत्थी मम पइ पुत्तव-च्छलभाव दसेइ, पियपुत्त त्ति वएइ, एत्थ किं पि रहस्स होज्जा, पुव्व एईए पत्ता सवणीआ, एव विआरित्ता सो वोलेइ—'अह एत्थ किमट्ठ आगओ सि, त तुम्हे जाणेह, म पइ तुम्हे पुत्त! पुत्त! त्ति कहेह, तओ मए सह तुम्हाण सवधो होउ, वा न होज्जा, तह वि अज्ज आरब्भ तुम जणणिमिव जाणिस्स, तओ निय अप्पकह कहिऊण मे असत्थचित्त पसमेह' तओ सा सच्चवई अप्पणो सखित्तेण वुत्तत कहेइ—"विसाला नयरी, वभदिण्णो माहणवरो, सच्चवई भज्जा, अंबिगादेवीपसायलद्धत्तणेण पुत्तो देवी-दिण्णो। उज्जयतगिरिम्मि जत्तत्थगमण, अरण्णे सच्चवई पिवासिआ, भत्ता जलाणयणत्थ दूर गओ। तया चदसेणनिवेण सच्चवई अवहरिया, पियसगमाय निय इच्चा मज्झरत्तीए निग्गया, सियालए सप्पडमेण पियमरण, रण्णे गच्छती चोरेहिं गहिया, तेहिं वेसाघरम्मि विक्किआ, दुवालसवरिस जाव सील पालती एत्थ थिआ सा इ सच्चवई तुम्ह जणणी"। हे पुत्त! अज्ज तुम भाऊण मह कामभोगाय लक्खदव्वदाणेण एत्थ समागओ सि। कह कम्मेण नडिआ वेसालया इ मुह तुज्झ दसेमि?, पत्तो पुव्व मरती तया वर, ज एरिसाए अवत्थाए न पडती।

सुवण्णईए कहियं वच्छ लोगा माअम्मि मुहं हसिरं अणत्थे से भरणीपीडंमि पडिओ दिव्वपाएस्स मुच्छिओ य। सुवण्णईदेवीए (सुगन्धं) पुणं चन्दणरसं सरीरंमि सिंचेइ, पच्छा एवं वएइ रे ओ हे पिउपुत्त! वत्थुसहवं अयाणंता लोगा एवंपेरिआ एवं अकज्जमिवं पि कम्माइं कुणंति, एवं अजाणगस्स एव विकसियं। जओ-

अमाणं खलु कट्ठं लोगाणं मोहंधो वि सप्पपाणाओ।
लोवारिज्ज लोगा, हियाऽहियं न याणंति ॥

जओ न तुज्झ दोसो पुण्णपावकम्माणं एसो विवागु' त्ति माऊण समाहिओ भणइ, एवं भणिया तस्स सेसं समाणेइ। तओ सो देवीविव्वे लोगमिच्छाओ असारसंसारस्सस्स सरूवं जाणिऊण वएइ-हे मायर! मम विरत्तु ते तुज्झ मायवमणं पाविय मए नरिसं घोरपावकम्मं कय तुज्झोवरं अप्पाणं समप्पिऊण तुमए सह कामभोगाणं अभिलासा मए कया मम सरिसो पाविट्ठो अन्नो को वि लोगंमि न सिया, अहं परिसो अहं माअए मुहं दंसिमि? अहं जीवियं पि वहित्ता माअम्म मए पावमिम अरयणभर्ण करेंतो जलीयं वह दुरियं कम्मनिच्च छड्डस्स विवरे पविसामि। इमाओ निमयसिरिसाओ भूमीए पडिओ अणंतरे निपवरेसु समाओ मच्चु एसो।

सा सुवण्णई विवनिमित्ताओ मरणपरं पुत्तं दट्ठूण अच्चंतसोगाउरा असहणेयुक्खणयमसमा चिंतेइ-हा धिद्धी जीवियं मम हि, पुत्तस्स विवाम पडिऊण मरणं सेयं। मम निमित्तेण सिंचिय रयणाणी संजायाओ य विवी।' सोगसंलग्गीया मए इमो, मयपुत्ताणं पि मम निमित्तं मरणं जायं। जइ वि मयपुत्तेण सह विवाह पडिसेहे परं निव्वरं सिच्चा पुत्तमरणं अप्पणो मए वरिऊण चिंतेइ-हे पन!

सहसा किं कय ?, भत्तार-पुत्तविहीणा अणाहा एगागिणी कह जीविस्स ?। हे पुत्त ! म चइत्ता तुम गओ, अह पि तुमए सह आगच्छिस्सामि, हे पुत्त ! तुज्झ पालगमाया पियराण किं उत्तर दाहिस्स, ते तह य एसा दुट्ठा कामलया वेसा वि एव सकप्पिस्सति– 'एईए सीलरक्खणत्थ एसो सुगराओ हओ, अन्ने वि जे लोगा जाणिस्सति ते वि एव चिंतिस्सति, सव्वे वि म निंदिस्सति', सव्व मे नट्ठ, 'अओ मरणमेव वर' ति विलाव कुणती सव्व रत्तिं कट्ठेण नेसी।

पहाए जाए एग दासिं वोल्लाविऊण सव्ववुत्तत कहेइ। सा वि कामलयाए अग्गओ निवेएइ। तया सा कामलया आसुरुट्ठा तत्थ सिग्घ आगतूण रुहिरखरडियगत्त भूमीए पडिय निप्पाण सुगराय पेक्खइ। तओ सा अईव कुद्धा वएइ – हे दुट्ठे! रडे! तुमए एसो पुत्तमालो वालो किं हओ ?, हा! हा! नाय नाय, नियसीलपालणत्थ निद्दयाए तए एसो हणिओ। अह पि तुम एयस्स वालगस्स चियाए मज्झे जीवतिं पक्खिवस्स। इमस्स मायापियराण किं पच्चुत्तर दाहिस्स ति कहित्ता सच्चवइ हत्थेण हेट्ठमि ओयरणाय पमज्झ कड्ढेइ। तया सा सच्चवई 'सच्चवाइणो कुओ भय' ति निब्भया वएइ–तुम्हे अवियारिय ज त वा किं वएज्जाह ?, एसो मय चिअ नेयच्छुरिय उयरे पक्खित्ता मओ, सच्च तु एय जाणियव्व – एसो देवदिण्णो मम अप्पकेरो पुत्तो जाणियव्वो, नियमाउग अवरि अन्नाणओ कयकुदिट्ठिवियारपावपायच्छित्तगहणत्थ तेण अप्पघ्घचा कया, अह पि एयस्स चियाए नियदेह पक्खित्ता मरिस्सामि। मम कारणे तुमए निप्फलो पयासो न कायव्वो। अहुणा इमस्स देह हेट्ठमि ठवेह, एयस्स य पालगमायापियराण वुत्तत जाणावेह, अणराओ य बाहिर चिय कारवेह।

अह सा कामरूपा देवविम्भमक्खेवरं झिड्डे ठवइ, तस्स य समा-चिराय समायारं कहावेइ। पुत्तसरणसमायारं सोचा सव्वं सोयं वणकम्मे मलणं च कुणंत तत्थ आगया पुत्त अवमि ठविता पुं पिअवरंडि, सुवन्नईए कहियं निवं देवीदिम्मपुत्तस्स व कुणेत कुविय व विदंमि-वं मारिं व जम्मदा न होइ, ण वेसाणरे बासमयं माझम सिक्खा मरणं च पवं पुष्पवइकम्मावे पिय, विवाय बम्मेहि विसि-बासरावि पुत्तस्स वेसाणरागमये ठिभिक्खा संवाता, तत्थ पुष्पवइपुर वसस पपवत्तर्णं। तुमो मि बस्स तीपास सह सुवन्नईए पव्वं सायवा वं वासरसह-वं पुत्ति! जम्हाय तुम्ह य पुत्तो गओ समोसि समाणं तुहं, मरणामि मा चिरं कुणासि, पुत्तं पिव तुमं पि पडिस्साओ। सा मि मरणिकम्मनिवाया भाय पि वयणं न सुणेइ। नवसामवत्थ-आरपुव्वंमिम्मा एत्थ समायव देवरिम्मस्स वत्थुं उप्पवीय हत्थं मबराओ बहिरं निभाया ताव पञ्चकया सुवन्नईं समजणवस्स वणवारो य रायो निभाओ। त कुमुविक्ख विवाभियासस्स मज्झे नयासण्णे मेत्तमणवायाक्खोवेहिं निवास चिये बवरिंसु। तीय मज्झे य दुवीविम्मकुमारं ठवई जम्मि य समायवेहि। तया सा सुवन्नई तीय मज्झामि पविरं नाम वावेइ तया वं मणवस्सवणवमारापपुरिसा वे हत्थेय गिम्मिय्या निरंमंति। वयं सुरिसा बाणि पयारससरणस्सवेण वर्द्धति। बम्मी पि देवीदिम्मस्स देहं समंवसा वादिरं गमो, सा सुवन्नई नि पाढं पुत्तं पयंसिता वम्मधूमिय सायसं कवडीमिय पुरिसरिवे पुट्ठिया विनयमसे पीसा। पुष्पवइकम्मस्स वढवत्तणेन, अनुत्त य कम्मं म सिमइ, आयसस्स य बपरिपुण्णयमत्ता वे बम्मो रि म बहइ। तया कम्मवेण तत्थ बवेठे बाउ बारे समय आगमणं पि जलभासणमिरहिं बवरहिं मरियं बम्मो पि सुवन्नत्थमाणपायालि वट्टिमिय समय। अन्न पि पायाससमयस्स इत्ता तया व्यासिया निव निवमासे गया विया पि पसोता। तया तीय समय

महानइव्व सजाओ । तेण जलपवाहेण सा मच्छवई पहिउ लग्गा, पाम्सकम्मस्स दीहत्तणेण तीए हत्थे एग महाकट्ठ समागय, मरणभएण चसिया सा सहसा त कट्ठ विलग्गिअ तरिउ लग्गा, कमेण नईए ज्झमि गया । तत्थ वहुसो निमज्जणुम्मज्जणजणियवाहाए मुच्छिया आ नईवेगेण वीसजोयणभूमिं जाव दूर नीआ ।

तया तत्थ नईए तडमि के वि आहीरा नियनियपसुगण चरावित्ता जलपूरस्स दसणत्थ तीरे समागया । तेहिं कट्ठ विलग्गिअ तरती मच्छवई दिट्ठा । सजायकरुणेहिं तेहिं बाहिर सा निक्कासिआ, त मुच्छियं सप्पाण दट्ठूण विविहपओगाओ पीयजलनिक्कासणेण अग्गि तावणेण य सा सुद्धिं पाविआ । पत्तचेयणा सा नियपरिओ अणेग-विहुवयारकरपरे चत्तारि पुरिसे पासित्ता सहसा उट्ठिआ सई वोत्तुं असत्ता हिययमि चिंतेइ– 'हे दइव्व ! ममुवरिं अच्चतो निद्दुरो किं सजाओ ?, जओ ह पुत्तचियाए पडिआ वि मदभग्गा अग्गिणा वि न दड्ढा, जलपूरेणावि न सगहीआ, कह अणाहा निराहारा असरणा अह जीविस्स ति, मम भत्ता वि मओ, पुत्तो वि मरण पत्तो, अहुणा क मरण उवलभेमि' । तओ किंचि लद्धसामत्था सा सच्चवई ते आहीरलोगे एव वएइ– हे पुरिससिट्ठा के तुम्हे, किं जलाओ निक्कासिआ ?, पियपुत्तमरणदुहसंतवियाए मम जीविएणं अल ?, दुहसागरे पडिआ जीविउ न इच्छामि त्ति कहित्ता रोविउ लग्गा । ताण एगो वुड्ढो आहीरो त कहेइ– हे पुत्ति ! इओ कोसंतरेण रयणसचया नयरी अत्थि, तत्थ जहत्थनामो पयावालो नाम नरिंदो रज्ज कुणेइ । तीए संनिहिम्मि सारगगामे निवासिणो जाईए आहीरा अम्हे, पसुगण चारणत्थ एत्थ नईतडे समागएहिं अम्हेहिं जलपूरे कट्ठविलग्गा तरती तुम दिट्ठा, बाहिर च निक्कासिआ । हे पुत्ति ! कहं तु नईए पडिआ, का तुम, किं नाम, विणा सकोएण नियवुत्तत कहेहि । तओ सा

कहेइ– हे बंधवो ! तुम्हरमरिणाय जणयाए जणणए मम कीर्त सुपसिया तुम्हाण दुक्खसायेण अहं तह वि मम पमायेण तुम्हे समागरिउं पि सक्केमि इव कहिता सा संवेगेण निक्खमणं कामीसु । तं सुणिता सव्व पुत्तो आहीरो उम्मत्तक्खमो स्मोर– अहं तुमं कम्मपुत्तिमिव पालिस्सं तुमए चिंता न करणिज्जा, मम पुत्तीहिं सह सुहेण वसियव्वं । अम्मा तुमं, अम्हो दुक्खसंजएलेण तए निम्मलं सीलं पालियं अहं पि अम्माणं मत्तं अप्पामि तेण मम पुत्तीस्सा तुमं गया । सा सुवण्णई स्वसमरिउसयवयणं सोच्चा तेण पितुहेण तुम्ह सह गच्छंतीए मे न मणं किंचि वि हम्मइ इय विचारिया तेण सह तस्स घरंमि गया । सो सुवद्धो आहीरो नियमयाम पुत्तीणं व तीए मरम्म कमीसा निवेसणं च एसा सुवण्णई पुत्तिम निवेसम्मीआ । सा वि तं पुरं आहीर तस्स य मम्मं पियरम्मवासेण मण्णमाणा सुहेण चिट्ठइ । पियमुरसमायेव सम्मेरेसि पियाई रंजतो, निहकम्माइं कुणंती सुहेण दिणाइं गमइस्सेइ । सुंदरसमायोगेण पुण्णामिव सुवण्णसुंदरंगुवंगा निम्मिया सववसरीरा सुवण्णं आहीरजणाणं सिणेहरिहा संजाया ।

आहीरगेहंमि ठिया सा सया पच्चूसम्मकालंमि आहीरसमीवम्मि सह दहि-दुद्ध-घयमाइ-विक्कयमत्तं रयणसंचयामयवीय गच्छा दहि-दुद्धाइं सिलिविणा मथणक्खमे गेहं समागच्छिज्जा गुंजइ तीए आहीरकुमारीहिं सह घम्मियवयसायणं कुणिता पच्चा गोरसमुदमर महग्गं साहज्ज गेण्ह, पच्छ तीए निक्खमणं । एवं पइदिणं संगमिय कयं कंती सा सुवण्णई पत्ता पयाय दहिपडं मत्थए ठविय सरिसवयाहिं आहीरकुमारीहिं सह दहि-दुद्ध-घयजाण-विक्कयणं नयरिं पइ निग्गया । तया गामनयरीसं मज्झम्मि आगया तया नयरीओ आगच्छमाणियाए आसरवग्गमाणं वाहण-वयमाण-छुरण-उच्चवण-मणहरसोहियासुं आसं विजोयेउं पयायाणकरीएं सम्मं तओ

ाहीरित्थीओ पासति। त पासित्ता सा सच्चवई एग पासत्थ आहीरि
च्छइ–' हे सहि! अय अहिमुह आगच्छमाणो दिव्वसरीरो तेयसी
भवतो को पुरिसो'?। सा वएइ –' अय रयणसचयानयरीए सामी
णवच्छलो दाणी धम्मिट्ठो पयावालो नाम राया अत्थि', एव
ालाव कुणतीण तासि आहीरीण समीव आस कीलावतो समागओ।
रिंदस्स सिग्घयरागमणेण भयभताओ ताओ आहीरीओ इओ तओ
ासिउ पउत्ताओ, तया तासि परुप्परसघरिसेण कासि सिरेहितो
हिघडा दुद्धघडा य पडिया भग्गा य। तया सच्चवईए मत्थयत्थो
दहिघडो वि पडिओ फुडिओ य। अन्ने आहीरीओ निय-निय-माइ-
पिउ-पियाण भएण रुयमाणीओ चिट्ठति, सा सच्चवई दहिघडे भग्गे वि
हसेइ। तया नरिंदो ताओ रुयतीओ, त सच्चवइ हसति पेक्खित्ता
जायचिम्हओ चिंतेइ–निय निय-दव्वविणासाओ ' थीण रोयण बल '
ति नाएण रोयण उइय, परतु एसा रुयवई इत्थी नियदव्वहाणीए वि
हसेइ, एत्थ किं पि कारण सभवेज्जा, अन्न च वेसेण एसा आहीरी वि
आगिईए रूवेण य उच्चकुलुप्पन्ना इव लक्खिज्जइ इइ वियारतो
पयावालनरिंदो त सच्चवइ पुच्छइ हे–'धम्मबहिणि! किं तुव पियरस्स
माऊए य नाम?, कहिं गामे तुम्ह उप्पत्ती?, कस्स तुमं पुत्तवहू
असि?, तह दव्वहाणीए वि तुम किं हसासि!, लज्ज चिहाय भाउ-
तुल्लस्स मम अग्गओ निवेएज्जाहि। सच्चवई नरिंदस्स अईव
पडियधवसेण तस्स पुरओ नियसव्व अप्पकहं कहिऊण हे नरवर!
बहुइ दुक्खाइ सोढाइ, एत्थ दहिघडविणासरूव-अप्पहाणीए कह
दुक्ख सिया ' कम्मुणा ज जं किज्जइ त त हरिसेण सहियव्व किं
विसाएण' ति कहित्ता सोगभयजुत्ता सजाया। पयावालनरिंदो सोयाराण
पि दुक्खजणग तीए वुत्तत सोच्चा सति सपायणत्थ कहेइ–'बहिणि!
तु पसमारिहा सि, ज तुमाए विविहविवत्तिसहणे गावि पाणते वि सील
पालियं, त किल जगणी चि धण्णा अत्थि, ज एयविह पुत्तिरयण

पसूआ । साईए कयाइ कुविहिकम्मजोगेण तेण धीरसेणनरवइणा सद्धं पडं पत्तं । परराएसिकासिओ रायपुत्त कुमरो सुहं होज्जा ? । हे बहिणि ! तव सीलप्पहावेण सच्चे विग्घा उवसंता अहुणा ममोवरि कम्मवसओ किच्चा मम सह रायपासम्मि समागच्छसु, तत्थ रेवइपुरसम्भावमणेण सुपत्तरम्मा दीण-दुहिया-अणाहाणं च उवयारकम्मेण समयं गमेज्जा ? । एवं सोच्चा सा बाला 'सच्चं इ' अमरिसिउं कजं धम्मरया सिरिविजयं पुत्तस्स गुरुचरणसन्नेण य सम्माणणाधम्मानुचिन्तणरयेण य माउणीमुहासम्माणं च नेउं इच्छामि । तुम्ह धम्मरयत्तणं सवणम्मि इ पुरिसम्मि वि वयणेण अणुसूयणं भरवइणा सह पासुपं समागंतुं इच्छामि तीए देसिआ । पयावालनरिंदो कासि कयाई धम्मिपुत्तस्स धम्मी कासि सव्वासि एवं समप्पियं । कयं च तीए पाणगाहिएण लोगाणं अहियरिसयारं कयाणं तस्स अणुण्ण भाउण मच्चबईए सह नियपासाए समागओ । अंतेउरम्मि वि तीए सम्मपुत्तं कयंसा निम्मविया-दुक्खेहिं दुईए सगेण सच्ची कयत्था, एवं सयण कयावि न अणुचिअयं कओ एस सह धम्मसिक्खिएण अवि अत्थि कओ अंतेउरजुयईओ वि नियमधारणं कयवि सावज अणेगजुवईण । अंतेउरम्मि ठिआ महावई अंतेउरनिवासिणं इत्थीणं तया सीलसम्मयाणुधम्मुवयारेण सव्वो वि अंतेउरीजणो निम्मियधम्मे थिरीभओ । एवं सया निम्मीसरसासणं धम्मीवंती सुहेण कालं गमेइ । एगया तत्थ नयरीए अणेगसाहुणीगणपरिवरिया सुव्वया नाम साहुणीमहत्तरा गामाणुगामं विहरमाणा समागया । सुचवईए निम्मलसहाए सा महत्तरा संठिआ । अंतेउरसहिओ पयावालनरिंदो धम्मसवणत्थं तत्थ आगओ । सा महत्तरी सुव्वया अवसरहं धम्मुवएसं देइ—

लोगस्स सारो धम्मो, धम्मं पि नाणसारयं विति ।
नाणं संजमसारं, संजमसारं च निव्वाणं ॥ ५५ ॥

जम्म-जरा-मरण-रोग-सोगाइ पउमि असारे संसारसायरे सारो सिरिजिणधम्मो चेव जिय, एयस्स अईव

सुसपयाओ सोक्खपरपराओ हवंति, इह लोए वि वछिअत्थसिद्धी, निम्मला बुद्धी, सव्वत्थ सिद्धी य होइ । तम्हामि नाण सारं, जेण किच्चाकिच्च-भक्खाभक्ख-हेयाहेय-हियाहियसरूव नज्जइ । नाणम्मि संजमा सारो, जओ नाणेण विवेग-विणयप्पमुहसुह-गुणा पाउब्भवंति । तेहिं सुसंजमो होइ, तेण अप्पा भवसमुद्द तरिऊण अव्वावाह सासय अक्खयं निव्वाणपय पावेइ

एवं सोच्चा जायसव्वविरइपरिणामा सा सच्चवई रण्णो अणुण्ण गहित्ता पयावालनरिंदकयमहूसवपुव्वय सुव्वयापवत्तिणीए पासंमि दिक्ख गिण्हित्था । तह य नरिंदप्पमुहेहिं जहसत्ति सम्मत्तसहियाणुव्वयाइ गहीयाइ । सा सच्चवई सुव्वयागणिणीए सह विहरमाणी पुव्वबद्ध-सकिलिट्ठकम्मक्खयट्ठ विविहतवाइ कुणती, महत्तरीए पासे सुत्ताइ पढती साहुणीगणवेयावच्चकरणपरा सज्झायज्झाणलीणा निम्मल सजम पालेइ । एव सवेगरगरगिआ सत्तरसविहसजमगुणपालण-क्करया सा सच्चवई साहुणी पज्जते अणसण करित्ता समाहीए कालधम्ममुवागया, देवलोगे य समुवन्ना, कमेण मोक्ख पाविस्सइ ॥

उवएसो—

सच्चवईकह सोच्चा, भववेरग्गकारिणिं ।
सीलधम्मे मइं कुज्जा, दुक्कयस्स विणासगे ॥ ४६ ॥

सीलधम्मम्मि छायालीसइमी सच्चवईकहा समत्ता ॥ ४६ ॥

भावधम्मे इलाईपुत्तस्स कहा सियालीसइमी ॥ ४७ ॥

भावधम्मप्पहावेण, इलाईतणओ पुरा ।
पाविओ केवल नाणं, साहु-दंसण-मेत्तओ ॥ ४७ ॥

अत्थि इह भारहवासे इलावद्धणं नाम नयर । तत्थ सप्पहावाए इलादेवीए मदिर वट्टइ । एगया तत्थ वसतेणं इब्भजुगलेण सा

इत्थंतरे पुत्तस्सेव जोग्गयं पयपसुत्तं विसज्जिआ । सो वि देवो
देवलोगाओ चइऊण तीए गब्भे समुप्पन्नो । महापुरिससूयण्ण दे-
हलसंपायणेण गब्भो वड्ढिओ । अविरलसमए पसूआ देवकुमारसरिसं
दारगं पसवीअ । कुलदेवीए जोग्गयं ति । तस्स
नामं कुलदेवुत्ति कयं । कमेण सो दारगो देहोवचय-
कलाकलावेण य वड्ढमाणो सयलकलापत्तसिद्ध पुण्णजोव्वणं संपत्तो । तस्स
सत्तरससमयम्मि मित्तजुओ कुलदेवुत्तो उज्जाणसुयगओ, तत्थ
चंदणसमासम्मि नच्चंती एगा रूव-लावण्ण-सोहग्ग-कला-कलावनिही
चेडी पुलइया । तीए रूवसिरिविलोयणेण अभिलासचित्तो कम्मदेवीए
संजाओ । तत्थ वि थिइं न लहइ । मित्तेहिं पुच्छियं— वयंस !
किमेयं सयलजणसुहावियं हरिसपवेसविरसं तए समारद्धं ।
पत्थियस्सेव कहिं जाणामि वयं कुलमाहप्पं भणियं, ता किं करेमि?
कहयह मे सच्चंपरमत्थं । तेहिं भणियं— अणुचियमिणं कुलोचिय न
लब्भइ तीए वि मायागच्छं कयं नियकुलपुत्तो वि नारइ निययजणस्स ये
पडणारसणो हवइ । मायापिअरा मंतेमि पुव्वं होहइ तत्थ
सयलजणसंतावकारिया मित्तदेवेण कुमारजणस्स ? मित्तस्सु वयणं
सम्माणो । कुलदेवुत्तेण भणियं वयं पि एवं सव्वं जाणामि किं
तु मम जीवियं एयाए आयत्तं वसम्मि पुत्तसयमहिआइं । मित्तविभिन्नो
मम पुरओ समागमेहिं । कुलदेवुपण कहिया मम-
पुव्वस्सरूवं देहि मम तुरियं । देवी भणियं— जणवयविही एस
'अम्हाणं, जयाइं वा एयाए कम्मं, ता अप्पेहिं सव्वं ममत्तु काले न
लिहसु । तओ वारिज्जंतो वि माय-पिउ-सयण गुरुहिं, वाणिज्जाए
समतजोगायणारं तत्त मज्झेमि पविट्ठो । जम्माणो निम्मलगुणमणा
वक्खिज्जंता । एसो वि देवी च्च विउरामणे लिप्पसमत्थसंथे मिलावये
पत्तो । मित्तादव्वमिमिणं रायं जोगमित्तं पवत्तो । तओ विसे
देवजणओ । समागय देवजणं । निमित्ते पुरा

नागरत्ता य सपत्ता। इलाइपुत्तेण नाणाविहविन्नाणेहिं आवज्जियाणि लोगाण चित्ताणि। नरिंदे य अदिंते न देइ लोगो। राया पुण दारियाए बद्धरागो तस्स वहणत्थं त भणइ– लख पडण करेसु। सो य पाउआओ परिहित्ता असिखेडयहत्थो वसमासस अइकट्ठोवरिं विविहकीलाहिं कीलइ। जइ कह वि चुक्कइ, तया धरणीए पडिओ सयसक्खो होइ। लोएण साहुक्कारो कओ। नरिंदे अदिंते न जणो देइ। राइणा भणिय– 'सम्म न दिट्ठ, पुणो करेसु'। तेण दुइयवार पि कय। एव तइयवार पि कय। पुणो वि रण्णा मारणत्थ अलज्जेण भणिय– 'चउत्थ वार कुणसु, जेण अवरिद्द करेमि'। लोगो नरिंदाओ पिच्छियव्वाओ य विरत्तचित्तो नियत्तो। वससिहरट्ठिओ इलाइपुत्तो चिंतिउ पवत्तो– 'धिरत्थु कामभोगाण, जेण एस राया नईए रगोवजीवियाए निमित्त च मम मरणमभिलसइ। कह च एयाए परितुट्ठी भविस्सइ ?, जस्स महतेणावि अतेउरीवग्गेण तत्ती ण जाया। ता धिरत्थु मे जम्मस्स। ज ण लज्जिय गुरुणो, न चिंतिय लहुयत्तण, न निरूविय जणणि-जणय-दुक्ख, परिचत्ता वधुमित्त-नागरया, नावलोइअ ससारभय सव्वहा निरकुसगइदेण व्व उम्मग्गगामिणा मए। इम सयलजणनिंदणिज्जलखयकुलमणुसरतेण मलिणीकओ कुदधवलो तायवसो। ता सपय कत्थ वच्चामि ?, किं करेमि ?, कस्स कहेमि ?, कह सुज्झिसामि त्ति? एवविहचिंताउरेण तेण समीवत्थे कम्मि वि ईसरघरमि देवगणासरिसरूवाहिं वहूहिं पूइज्जते मुणिणो दट्ठूण चिंतेइ–'जे महियमयणा जिणिंदमग्ग समल्लीणा ते धण्णा कयपुण्णा। अह तु एत्तियकाल वचिओ म्हि, ज न सेविओ जिणधम्मो। इण्हि पि एयाण आणाए समणवम्म करेमि त्ति एय वेरग्गमग्गपडियस्स समारोवियपसत्थभावस्स सुक्कज्झाणाण मज्झे गयस्स विसुज्झमाणलेसस्स समासाइयखवगसेढिणो समुप्पन्न केवल[illegible]। सपत्ता देवया, भणिय च अणाए 'पडिवज्ज दव्वलिंग,

कीय संजमो ' । पडिवज्जे इब्भसिट्ठी देसविरइं पालिओ । पच्छा हिरियभिसिउ, निम्मलिय सीहासणे तम्स निसाओ सुरासुरसरियिरिं संजिओ पुत्तमुणसाओवरी कुरिहिं धम्मं सामरेइ । सम्म निववियरिसदिर कुम्मणिं । बैमक्किमा सामरिया । विचित्तियमणाए परियाए पुच्छिअं- भयवं ! एवं पुन पव्वाए कैमकमाए क्वरिं वे परिसे राओ जाओ । तओ नियमपुव्वं कहिउं आरदो- इमा व सउत्तमे वसंतपुरनगरे अहं विक्कसुत्तो आसि । एसा पुन मे भारिया । निविजयमसमाणि सहसकाले वेराणसंगिय पव्वइआसि । मुनिसमससत्ताय वि अवसर्गं मिहे आवासो ' तआ देवाणुप्पिया ! अहं सर्मा तव धारम अमओवयणसम्मो समोसवसरओ मरिऊण सुराणय संजमओ । एसा पुन आइसयाणकिसा पच्छाओ उववन्नो अमओवपवरिसमंत मरिऊण देवलोगे गया । आउक्खए तओ चुओ समाओ इं इब्भकुले उववाओ । एसा पुणो आइमसओसेण इब्भकुले आया । तओ से पुव्वभवभावओ अपाए क्वरिं मे गुरुआपुरगो जाओ एवं कम्मकिमा मासियं भत्तीए तीए वि कारिसपपुवावे केवळं संजाअं । एवं सुग्गसाए राइमा मयरेवीय च वि केवळ जर्ग । एवं चत्तारिवि केवळिणो जाय सिद्धि उवगओ—

एवं इब्भपुत्तस्स, पारियं चोइयमवि ।
सोच्चा भव्वा ! पसत्तेब्बा, मावधम्मे सुहावहे ' ॥ ४७ ॥
मावधम्मे इब्भपुत्तस्स सीमारअम्हमी कहा समत्ता ॥ ४७ ॥

चोरिक्कविसए दुण्हं विउसाणं कहा अडयालीसइमी —॥ ४८ ॥

कुडुंबपरिपोसत्थं, चोरकम्मोज्जया दुहा ।
परदुक्खं पि किच्चावि दुहसम्मं निसंसर्जं ॥ ४८ ॥

मोयनरिंदस्स अवंतीनयरीए देवसम्मो विण्हुसम्मो अ नाम माहणा दुण्णि भायरा विउसवरा छद्दसणविउणो वेयवेयगपारगया संति। लच्छी-सरस्सईण एगत्थठाणाभावाओ ते विउसा अईव निद्धणा संति। ताण भज्जाओ वि पइभत्तिपरा सुसीलाओ अत्थि। एगया भोयणाभावेण दुहिया ते भज्जाओ निय-नियप्पिय कहेइरे—'चउसट्ठिकलासु तुम्हे चोरियकलं जाणेह न वा, अओ चोरिक्कं काऊण पि कओ धणं आणएह,' एवं सोच्चा धणपत्तीए अन्नुवायं अलहमाणा किंपि चिंतिऊण भोयनरिंदमंदिरे रत्तीए चोरियं काउं गया। रायपासाए पच्छण्णं पवेसिआ। तत्थ सुवण्ण-रयय मणि माणिक्क-पवालरासिं पासित्ता 'एयाण हरणमईव पावं'ति सत्थे कहियं, एवं वियारं किच्चा धन्नागारेसु गच्चा सालीण दुपोट्टलिगं बंधिऊण मत्थएसु ठविऊण जया निग्गया, तया भोयनरिंदो महारिहसयणेसु सुत्तो अत्थि। पल्लंगसमीवम्मि एगो मक्कडो हत्थे असिं घेत्तूण सावहाणो नरिंदं रक्खइ। ताहे पल्लंगुवरिं एगो सप्पो मंदं मंदं संचरमाणो निग्गओ। तस्स छाया नरिंदोवरिं पडिया, तं दट्ठूण पवगमो सप्पबुद्धीए नरिंदं पहरिउं लग्गो। तया ते विउसा तारिसं असंजमसं दट्ठूण सिग्घयरं मक्कडं निग्गहिउं लग्गा। मक्कडो वि असिं घेत्तूण तेहिं सह जोद्धुं पउत्तो। एवं हलबोले जाए जग्गिओ नरिंदो माहणे पुच्छइ—'के तुम्हे?, कत्तो आगमणं?'। ते सव्वं कहिंति—अम्हे चोरिक्कत्थं एत्थ समागया, तुण्णं गच्छंता अम्हे पण कयिं सप्पभमेण असिणा तुमम्मि पहरमाणं पासिऊण रक्खणत्थं अणेण सह जुद्धं किआ तुम्हे रक्खिआ। निवेण पुच्छियं—'किं अवहरियं'। तेहिं वुत्तं सालीण पोट्टलगा भरिया, जओ—"सुवण्णाइदव्वहरणं महापावं" अत्थि, तओ भोयणत्थं सालिधण्णं अवहरियं। तओ नरिंदो चिंतेइ—'मुक्खो मक्कडो अत्थि,

कवेण मणम्मो रसस्स विउ बलवाइ होइ। जइ कारिसमं पइ पंडिआ मम मंदिरे न आगच्छिा, तया इं एएण कवेणा अवस्सं दुहो होतो। अओ एव विसय चलकसारिया घण'। तओ विउसो कहेइ— पुन्नाणं जं हुइ तं समवेइ, एवं कारिसि मणुयं गुणं रणीसमं निम्माणिआ। पच्छा मंदिरेण मणमवाओ अम्मरक्खणं पयं हि। एवं विउसा चोरिकं पुण्णा वि परमन्नु वयति॥ उवएसो—

सोच्चा विउसस्सिट्ठाणं चरियं अप्पयामगे।
मणा हिए पण्हेच्छा संवास माणसे करे'॥ ४८॥

चोरिक्कसिसए पुण्ह विउसाणं अडयालीसइमी
कहा समत्ता॥ ४८॥

रमणीए परामूअसिकंदरस्स कहा
एगूणपण्णासइमी– ॥ ४९ ॥

दुम्मइहरस्सयम्, रमणीए मिओ न वये!।
जगज्जयमसीसो वि, राया सिकंदरो जहा॥ ४९॥

दुसहस्सवासाओ पुव्वं गीसदेसम्मि मकदुनिओ महासूरो सिकंदरो नाम महाराया आसि। बालत्तणओ आरब्भ तस्स जवणाणगो रायनीइनिउणओ सम्मणत्तओ अरिस्टोटलो नाम जवणायरिओ सिक्खादाओ गुरू अहेसि। सो सिकंदरो सया गुरुसेवाए आवयाए बहुमाणेण जीवणे वि परमधम्मसेवाइकम्मओ परंगमवि सिद्धि जणुमंतो। केवलं सस-विहि-सिक्खगदाणिरो गुरुणो पासेण जोओरदत्तिवासं वसी। पीडाससिओ सो राया सम्मरिस्सयाणिविद्धं पावे पुव्वंसो पक्ससेम्मपरिवसिओ गुरुणा सह निम्मणओ विमाओ। तम्मो तुम

जयतो कमेण इराणदेसे समागओ, तत्थ काओ महानयराओ बाहिर सिबिर ठविअ सय उज्जाणमज्झे भव्वपासाए ठिओ। एगया आसारूढो सो गिरिसिहरमालालंकिय-विविहपएससोहं निरिक्खतो भमाओ गच्छमाणो नियरूवानिज्जिअ-देवगण महरिसीण पि चित्तक्खोहकारिणिं एग सुदरिं पासेइ। सा अच्चब्भुयरूवा सुदरी त ससिणेहनयणकडक्खेहिं ताडित्ता कामविसयविसमुच्छिय करेइ। सो वि कामग्गहगासिओ त च्चिय पासेमाणो सवलो वि विमूढमणो अग्गाओ गतु असमत्थो तत्थच्चिय निच्चलो ठिओ। सा बाला विमोहित्ता नियट्ठाणे गया। समीववट्टिणा गुरुणा सव्वा एव तस्स चेट्ठा निरिक्खिआ। सो वि नरिंदो गुरु दट्ठूण जायक्खोहो पुणरवि सावहाणचित्तो संजाओ। एगया नियपवलसेणामज्झे उवविट्ठो सो सिकदरो मति-सेणावइपमुहसुहडवराण अग्गाओ नियपरक्कमवत्त कहेइ, तम्मिय काले तस्स गुरू तत्थ समागतूण सहासमक्ख त अवहेलेइ – 'ज विजइक्करसियाण पुरिसाण इत्थी रूवावलोगण पि भयकर, जाओ दसणमेत्ताओ वीरिय हणेइरे, हलाहलमिव कज्ज कुणाति। वीरपुरिसाण नरिंदाण च नरगदुवारसमा सा सत्थेसु गणिआ, तासिं सुदेर पि विसमविसाओ वि महाभयजणग' एवं अवहिलित्ता निआवासे गओ।

सो महानरिंदो बालत्तणाओ गुरुस्स उवगार सुमरतो सहासमक्ख एव निंदिओ गरिहिओ वि मच्चणेण अहोदिट्ठिं काउण सव्व सहेइ। किंतु मणमि अच्चतदूमिओ विविहविगप्पे कुणतो कियतकाल तत्थेव ठाऊण सह विसज्जित्ता नियपासाए आगओ। तत्थ वि खण दिट्ठसुदरीए सुदरयं, खण अप्पणो निव्वलय, खण गुरुणो दढिम वियारंतो एव निण्णय करेइ–'कया वि तीए रमणीए मुह न पासेमि [illegible] २। तह वि अणाइकालमोहब्भासेण

सुंदरीए य सव्वस्सपेण निम्मलस्स तस्स चित्ते सच्चिय रमणी आगच्छइ। तया सो तं चिय रमणीरयणं मग्गंतो मित्तरिसिवित्तस्स सह निम्मलसरवरे आरोहित्ता तीए सुंदरीए घरंमि समुवगओ। सा वि सिणेहं पासित्ता अम्मत्थपरिसाविया तं सक्कारेइ सम्माणेइ य। तया से धम्मरिसिमुणिवरओ हा! 'अहं किं करेमि?', निरवज्जमित्ते अणगारमणपिवासाए निमग्गो इं पर्प रमणीए पणउत्तं, मह सम्म नहू, कम्मा मि किं मे वइस्सति?। अत्थमि पयारं एवं विआरिय अप्पाणेणं पयइ। तया सा सुंदरी इंगियागारेण तस्स मणोभावं जाणित्ता कहेइ- 'किं पच्छा गच्छेह? तत्थ आगमणे तुमं मे निवारेह? एवं मम कहेह, इं तु निरवज्ज-धम्म-कम्म-संपन्न महरिसीणं पि चित्तं कहेउं समत्था। मम कम्माओ से परागे को?, कम्मण तस्स गमण निपासेमि। अहं पीसमोहिणी इत्थपरिसुण्णं अत्थि, मम चरणेसु महापुरिसा वि निवडंति तया से तुम्हाणं निवरणे का?। सिरिंधरस्स गुरुस्स उवरिं अणिपाला सम्मं आयरो सम्माणो य बहुमओ तह वि तीए रूवस्सओ सो गुरुस्स मित्तविसिट्ठ इंदुव्व सम्मं कहेइ। तस्स मुहाओ गुरुस्स मारिपिसावयमाणं सोच्चा कोवेण तीए पत्ता पिउस्सरा सेवाया। सा तं चइ वएइ- 'हे कुमार! तुम गुरुणा धम्मत्थीणं सुंदरीस्स सव्वीए साहसस्स य बलस्स वं एव तेण अम्हाणं पारणं करेमि जं पच्छे तुम्हाण गुरुं वा इसेण सव्वीए सम्मएसेण य मम अणुकम्पसंदिं न कहं, तया जहे मे जीविसणं"। मम अवमाणउरओ तस्स वयस्स भयस्स अणुसरणेस य मा गच्छा'?।

सिरिंधरो वएइ- सो मम गुरू सव्वरोमाणिमुसारमी एवं बाहू, स एव अणहप्पमियपरओ धम्मरायविक्कमीणंमहो कम्मं गमइ। इ मासि इच्चइं सुंदरी कहिउं अहमाण। तया सा रमणी वएइ- 'सो मि किं अणूको न सिया?, तस्स हिययं कि किं

सिसयरस्सीओ न सायति ?, तया वि तस्स मयणपाव हियय होज्जा
मे ति अहं तस्स हियय मंगण स्सेण नयणकडक्खेहिं मज्जाविय
तोस्साय अधरम्म करिस्स'ति कहित्ता नियपञ्चक्खरणपरा जाया ।
पेच्छरो वि तीए साहसकम्म दट्ठु दुक्खसो नियट्ठाणे समागओ ।
एयदिणंमि पच्चूसकाले तस्स गुरू धम्ममत्थत्थचिंतणिक्कपरो
अइ, तया सा सुंदरी अधन्नुयवेसधारिणी तस्स उज्जाणे ममागण
महुरसरेण गाएइ, तीए गाणसवणं पसुपक्खिणो वि सवणमंत्त मूढा
जाया। तस्स गुरू वि सत्यत्थाइ चिंतमाणो तीए महुरज्झुणीए
अक्खित्तो ममाणो तग्गीयसवणेण आकड्ढियचित्तो झाणमि पामूढो
सजाओ, तस्स य गत्ताइ सिढिलीभूयाइ, चित्त पि सक्कुद्ध जाय ।
मणसा चिंतेइ– का एसा गाएइ त्ति निक्खणत्थ वायायणे ठाऊण
बाहिर पासेइ, तया रुप्पाडियमत्थय नियपजावलयमाणवीहफेनिं
गयगामिणिं मद मद सचरमाणि अच्छरगणाण पि रूवेण पराभवति
दिव्वसरेण गायति रमणिज्जरूव रमणि पासेइ, पासित्ता जराजज्जरि-
अदेहो वि जायतिव्वकामाहिलासो मूढमणो सो उज्जाणमज्झं गच्छइ,
तत्थ गतूण तीए रूवसोह दट्ठूण मयणानलदड्ढो सो सुंदरीखंधे हत्थ
ठवेइ, सा वि त पासित्ता चित्तव्वोहेण दिट्ठिमि पासेइ । तया सो
कहेइ–' अह तुम कामेमि, मए मह कामभोगाइं भुजसु ' । सा वि
रमणी ईसिं विहसिअ लज्ज धरती वएइ– ' जइ मम पइण्ण पूरसु,
तया अह अहोनिसं तुम सेविस्सामि ' । तीए रूवविमोहिओ सो
पुच्छइ– का तुम्ह पइण्णा ? । सा कहेइ– ' जइ तुम्हे तुरगीभूअ
चिट्ठेह, घोडगीभूयतुम्हाणमुवरिं उववेसित्ताण हत्थे कस धरित्ता
वाहेमि, तया जावज्जीव तुम्ह आणाए वट्टिस्स । सो एव सोच्चा
तिव्वरागपासबद्धो सो तुरंगीभूओ । जया सा तुरगीभूअ त
आरोहित्ता वाहेइ, तया तीए सण्णापेरिओ सो सिकदरो तत्थागंतूण
तयवत्थ गुरु पासेइ । सा वि सुंदरी सिकदर दट्ठूण कहेइ– ' दिट्ठ

मज्झ माहप्पं, मम पुरओ सत्तिमंता वि पुरिसा विणासंति। सिवरिउ गुरुसिस्सो सा सिखंडरो वि पुव्वुत्तं गुरुमग्गं- के इमीए नरगसुवारसमग्गो इमाई सुप्पविसा दुण्हामसुयपसे कम गओ सि! उवाएसेइ। तया गुरु नायपरमगो सिखंडरं कहेइ-'हे वच्छ! तु मोहग्गो करिमं मं इइवूणं दूसेसि पर्ण तु तुममि मए सिक्खे मणं सिवमरिवं सिवा, सिवमंमि सुसद्धत्तणेण चरिय होज्जा तया पुर्ण च वावसेज्जा। किं न विमरेसु तुं जइ पमा रमणी मारिउं गुरु वीरं गंभीरं तया नायमहाणमत्तं पि पडिसि कवलं कालं समत्था तया सुव्वणुसुव्वयस्स तुव्व किं न करेस्सइ?'। समत्ता पमा सुंदरी सिक्खीभूए वन्दे मए महासमत्तेण केरिसं कहं पि उवएसेइ। एवं सुंदरीए वयणाओ मज्झे तुम्ह वि मुक्खस्स वि करिसा सो गुरुं विणासे गंतूण पुव्वं पिव हासमसग्गे जाओ। तया से सिखंडरो ता वि सुंदरी विचारिंसि- एसो किम बीरा गभीरो वयणं महापुरिसो करिय पयाणं पुरओ वन्दे वयणं साहंता विव॥ उवएसो—

गुरुणो माहप्प-सिखंडरनिदंसणं।
सासणा मे परदाराओ मणेण्ण दूरओ सया' ॥ ४९ ॥
रमणीए परामुयसिखंडरस्स एगूणपन्नासइमी
कहा समत्ता ॥ ४९ ॥

बुद्धिप्पहावोवरिं हालियस्स कहा पण्णासइमी ॥ ५० ॥

नीए वि छलकम्मेहिं, धीमंतो भावए इत्थे।
पसिप्पणावि बुद्धीए, रंजिओ मूमिसामणो ॥ ५०

को वि नरिंदो नियसविणोयत्थ नयराओ बाहिर विविहायणराइ मामतो बहुदूरं जाय गओ। तत्थ एगम्मि खेत्ते किसिकम्म कुणन हालिय पेक्खेइ, त दट्ठूण पुच्छेइ— 'पइदिण कियंतदव्व अज्जेमि ?, सो कहेइ— 'एग रूवगं लहेमि । तया नरिंदो कहेइ— 'तेण दव्वेण क निव्वहेमि'। तेग वुत्त— तस्स रूवगस्स चउरो भागे करेमि, पढम एग भाग अह भक्खेमि, बीअ भाग उद्धारगे देमि, तइअ अम रिणमोक्खत्थ वावरेमि, चउत्थ भाग कूवमि पक्खिवामि'। एय सोच्चा तब्भावत्थ अजाणमाणो पुणो वि नरिंदो 'किं एयस्स रहस्स' ति पुच्छेइ। सो हालिओ वएइ— 'पढमेण भागेण अह अप्पाणं नियभज्जं च पोसेमि। बीयभागेण पुत्ताण भरण कुणेमि, जओ ते वि पुत्ता वुड्ढत्तणमि अम्हे पालिस्सति, तओ वुत्त- उद्धारगे देमि त्ति। तइअभाग मायपियराणमत्थ वएमि, जओ अह बालत्तणे तेहिं पालिओ, तओ उत्त रिणमोक्खत्थं वावरेमि। चउत्थ भाग परलोगसुहाय दाणाय देमि, तेणुत्त- कूयसि खिवेमि त्ति, जओ त दव्व परलोगमि सुहत्थ होस्सइ'। एय तस्स अणुभवजुअ इहलोगअप- तहियकारिणिं परलोगसुहावहं वाय सुणिऊण नरिंदो अईव तूसीअ। पुणो वि सो वएइ—'हे करिसग ! तुम्हारिसेहिं मइमतएरिसेहिं चिय मम रज्ज विराएइ'। अओ तुम कहेमि—'जाव मयहुत्त मम मुह दिट्ठ न सिया, ताव तुमए एसा वट्टा कासइ न कहियव्व'त्ति कहिऊण नरिंदो नियावासे गओ।

एगया सहाए वरसीहासणमठिओ नरवरिंदो नियपहाणपुरि- साणमग्गओ हालिअस्स गूढवक्कस्स रहस्स पुच्छेइ—'ज एग भाग भुजइ, 'बीअ उद्धारके देइ, तइअ रिणमोक्खाय अप्पेइ, चउत्थं कूवमि निक्खेवेइ' तस्स को भावत्थो ?। एय सुणित्ता सव्वे पहाणा पच्चुत्तर दाउ असमत्था परुप्पर पेक्खेइरे। तया नरिंदेण कहिय—'पण्णरसदिण- ब्भंतरओ तुम्हेहिं एयस्स उत्तर दायव्व. अण्णह तुम्हे

मुज्झ दंसिस्सं'ति कहिऊण सा विसज्जिआ । तओ पहायम्मि सो गओ वियक्खणो पहाणो अप्पमत्तयाओ नरिंद-किरीडस्स मिलणस्सं गया तस्स परिसमासस्स पडमि पओ । तं किरीडं तस्स बब्बरस्स पासस्स पुच्छइ । बुद्धिमंतो हासिआ तं कहेइ-'हे महाराय ! सव्वं नरिंदस्स मुहं जाव न पासेज्जा ताव इमस्स बब्बरस्स पासम्मि कया वि मए न कहियव्वं एवं नरिंद-बब्बर-पास-परिक्खाओ मि, तओ हं कहियं कहं करेमि ?। पहाओ वि तस्स बब्बरमुहि दंसिणमग्गेण गया हासिअस्स पुरओ नरिंद-पत्थिणीए-संभिस्समुहत्थमुद्दासणं कहेइ । तया नरिंदाणिट्ठपेक्खमुद्दासणं दट्ठूण तेण हासिएण तस्स बब्बरस्स पासंसं सम्माणियं । पच्छा दिणसंते सहामज्झम्मि पुच्छए नरिंदेण से किम पच्छो पुच्छिओ तया सेसपाएसु मज्झेण ठिएसु नरिंदस्स पुरओ तेण संखित्तं पच्चुत्तरं दिण्णं । तं सोच्चा नरनाहो कहेइ-तुमए अवस्सं हासिआओ मए वाणियं सिया । नरिंदो हासियं कोहसमिया सम्मसेणं पुच्छइ—'कहं बब्बरसंगो जाओ ?' तेण तुहं मए बब्बरसंगं न जाओ जओ पुव्वं मए सव्वगुणं सिरिमंतास मुहं पासिया तस्स बब्बरस्स पासं कहियं । नरिंदो कहेइ- कया कया न मम मुहं दिट्ठं ?। तया सो नरिंदमुहदिट्ठिमुहत्तस्स दंसिअ कहिअं पच्छासु मुहत्तमुहस्स तुम्हाणं मुहं दिट्ठं ति तओ नरं पच्चुत्तरकलासम्पए पच्चाए तुट्ठो नरिंदो तं हासयं तस्स वि दिण्णं एवं एस हासिओ बुद्धिप्पहावेण रज्जपसाहिओ जाओ ॥

उवएसो—

हासिअस्स कयं एयं, पराहीण य सोक्खयं ।
सुणिया 'भणिय ! तुम्हे पसपेइ बद्धाउहं' ॥ ५० ॥
बुद्धिपहावोवरिं हासिअस्स पञ्चासइमी कहा समत्ता ॥ ५० ॥

भोगंतराए मम्मणसेट्ठिणो कहा एगपण्णासइमी ॥ ५१ ॥

'पुव्वदाणपत्तभोगा वि, भोगंतरायकम्मुणा ।
भुंजिज्जंति न लोएहिं', जह मम्मणसेट्ठिओ ॥ ५१ ॥

एगंमि नयरे एगो वणिओ आसि सो भज्जारहिओ अत्थि । एगया तत्थ नयरे को वि धणड्ढो नियणाइवग्गाण सुरहिगंधसजुयलड्डुआण पहावण अकासी । तेणावि वणिएण लड्डुओ एगो लद्धो । तेण अज्ज कल्ल वा खाइस्स त्ति वियारित्ता कत्थ वि भायणमज्झे वि ठविओ । अन्नदिणंमि एगो पंचमहव्वयधारी मासोववासी बहुलद्धिसंपण्णो समणवरो तस्स गेहंमि भिक्खणट्ठ समागओ । तं महामुणिं दट्ठूण पाए वंदित्ता सो वएइ- ' धण्णो अहं जओ मम घरंमि महारिसी समागओ ' एवं कहित्ता अभन्नाभावेण तं चिय साउरस मोयगं विसुद्धभावणाए समप्पेइ । सो समणो सुद्धमाहारं दट्ठूण गिण्हेइ, धम्मलाहं च दाऊण तस्स घराओ निग्गओ । तयणंतरं चेव कावि पाडिवेस्सिया तस्स समीवंमि आगंतूण कहेइ- ' किं तुमए सो मोयगो खाइओ न वा '। सो कहेइ- ' मए सो भिक्खत्थमागयस्स मुणिवरस्स दिण्णो '। तया सा कहेइ-अरे मुक्ख ! सो लड्डुओ अभुत्तपुव्वो सुरहिगंधसजुत्तो सुरसो अवस्स चक्खणिज्जो आसि । किं तुमए न खाइओ ? । तया सो भायणगयमोयगचुण्णं आसायंतो मोयगासायरसलुद्धो तं भक्खिउं इच्छंतो विस्सरिअदाणधम्मफलो लोहवो धावमाणो तस्स मुणिवरस्स पिट्ठओ गओ, तं समणवरं पाविऊण कहेइ- ' हे मुणिवर ! मए अप्पियं मोयगं पच्चप्पेहि । तया मुणी कहेइ- ' मुणिपत्ते पडियमन्नं कयावि न कप्पइ पच्चप्पिउं ' त्ति एवं तं पडिसेहेइ । सो मोयगरसमूढो न मन्नेइ, तया

से सुमित्तरो पसो पत्थिमो आहारो समणवग्गेसु, तं च न पासिज्जइ एवं विचारित्ता त सव्वहुत्तं सुमित्तस्स दस्सए वि सुमित्तो। एवं विमरं सं इस्सूग से तम्मि सुगो विरासे पच्चागओ। से समणवरे पयसि पंतूण निराहारे समभावो सब्वासव्वामसी संसीणवासओ। से पमित्तो सुमित्तरस्स अवरायकम्मस्स वसमोसेय रायकम्मो मणुं कमिस्स मम्मसेट्ठी संजाओ। एवं सुमपालेण पचमुक्त्ये वि मोगंतरायकम्मणा सिद्धन्धवं विमा वत्थं किम्मि काउं न पारेइ। एवं भंतरायकम्मुणा अवमोमत वि न मुंजिसंति॥ उपएसो—

> मोगंतरायकम्मस्स, विपागं असमअस।
> पासित्ता भंतरायाओ, मवियम्मं सुदूरओ॥ ५१॥
> मोगंतराए मम्मणसेट्ठिस्स एगपन्नासइमी
> कहा समत्ता॥ ५१॥

— —

नायउज्जणोवरिं जिणदत्तस्स कहा
दुपंचासइमी– ॥ ५२ ॥

> 'भावनिष्पन्नदव्वस्स, परिणामो सुहो' भओ।
> धम्मिओ धीवरो नामो, जिणदत्तस्स एवणा॥ ५२॥

एगया मोयनरिंदा रायमोणयामयं पत्तं मेभिभिसमरानं पुराओ सम्मसुमं सुपहुइ कमो पुहवीमे आर्यभिग्गमरायो सहाओ बहुसंसरपरं कायं विहरइ। ओसुमिमा वि सम्मं सिरिसिणा वेसारसुवणपरिणं अप्पेइर। तम्मि दिसे समागए महीमओ पराम-मत्ति-पुरोहिय-सेणावइ-सेट्ठिप्पमुहमवरवासपुरिसे

वि सायमुहुत्तममयासि खायभूमीए विविहवरपुप्फाइवत्थुइ खिवता नरवइ वयति– 'जइ नायज्जियपचजचरयणाइ एत्थ पक्खिज्जति, तया इमीए भूमीए निम्मविओ पासाओ वासमहस्स जाव अखडिओ हविस्सइ'। नरिंदो कहेइ– 'मज्झ कोसागारे बहूइ रयणाइ सति, ताणि गिण्हह'। नेमित्तिआ वयति– 'करभारपीलिय पयाहितो लद्ध दव्व कह नायनिप्पण्ण सुद्ध सिया ?, अओ एत्थ महानयरमि जे सुद्दिणो वावारिणो सति, ताहितो मग्गावेह'। नरिंदो सहाविअ-सव्ववावारिवग्गेसु दिट्ठि देइ, किंतु सव्वे वावारिणो निय दव्व केरिस, त तु ते च्चिय जाणति, अओ ते सव्वे हिट्ठमुहा चिट्ठति न किपि वयति। तया नरवई बोल्लेइ– 'मज्झ नयरे कि नायमग्गदव्व-ज्जणसीलो को वि वणिओ नत्थि ?। एव सोच्चा एगो पुरिसो नरिंद कहेइ–महाराय! 'अप्पा निय पाव, जणणी य पुत्तस्स पियर जाणेइ' एव एत्थ सव्वे वि वणिअवरा अणीइप्पिया चिअ नज्जति, परतु जह 'सएसु जायए सूरो सहस्सेसु य पडिओ, वत्ता दसमहस्सेसु, तह कोडीसु वि नायमपण्णविहवो कया कत्थ वि लब्भइ' अओ इमामि नयरे जिणदत्तो नाम सेट्ठिवरो नायमग्गेण एव ववहरेइ। एव सोच्चा भोयनरिंदो त सेट्ठिवर बाहुणपेसणेण बोल्लावेइ। सो सेट्ठी रायदव्वं असुद्धमेव चिंतित्ता पाएहिं चिय नरिंदसद्दाए आगच्छेइ, निव च पणमिऊण उवविट्ठो। नरिंदो पुच्छेइ–'तुम्हाण समीवे नायसपण्णदव्व किमत्थि'?। जिणदत्तो हत्ति भणेइ। तया नरिंदो खायमुहुत्तट्ठ पचविहरयणाइ मग्गेइ। जिणदत्तो कहेइ–नायदव्वं पावकज्जे अह न देमि। एव सोच्चा कुद्धो नरिंदो वएइ–' जइ न दाहिसि ता बलाओ वि गिण्हिस्सामि'। सेट्ठी कहेइ–' मम घरसव्वस्स तुम्हकेर, जहेच्छ तुम्हे गिण्हेह'। तया जोइसिआ कहिंति– ' हे नरवर ! एव बलाओ गहणेण अणीई सिया, एरिस दव्व न कप्पइ'। तया नरवई भणइ– 'पुण्ण कि पमाण ?'। जिणदत्तो वएइ महाराय

परिरक्खण पुव्वाइ तया रायपरिरक्खणाभिवाहिय मइंदिसरिस व नगरे दीवारं सामिन्द्र कारय मंतिणा य कहिय च मरिओ दीवारो पमिसपुरिस हत्थम्मा सह्यि च दीवारो पाविहूण अम्मिसयभो। तस्स केरिसो परिणामा होरसइ ब कस्स आसिस्स। सो मंती भीमदीवाभि मज्जूसमज्झे थामि गओ। तम्म समुद्दलवणंम्मि मज्झपाणीपरि चासित्ता विचारइ– समणा अहमपम्मो पाविहुयसा अर्थ चित्त को निरत्थयं निरवराहे मज्झे इमेर त्ति चिंतित्ता मेमुंइस्स दीवारं मज्झवदसरस धीवरस्स देइ। अण्णया गच्छंता मंती कम्म वि तरस्स हिट्ठ ठिओ पेच्छिसमयं आगमणं वीर समुम्मि दट्ठूण तस्स पुरओ पच्छन्नं पासमंतियं दीवारं ठविय गओ चरियं पेच्छंतो तस्स पच्छमाण ठिओ। तम्मंतरे सो तवस्सी झाणमुक्का समाप्य सूरत्थियाई रित्थं तं दीवारं दट्ठूण चमक्किओ जाओ। सा चिंतरइ– अपस्सगण पत्तं चम्मं अवस्स ईसरेण दिण्णं। मम आगम्माभो नमइय पाविसे कवा वि कामभोगस्स मुत्ता तज्जा मज्झाओ दीवाराओ ईसरेण दिन्न कामसुहभोगाय पेसिओ ह पच्छ मा अणुग्गहस्स संसमीव कप्पुहिंसपिन्तो झाणमुझे कागम्मि रत्ता तवमज्झे संजाओ। तयारिमो कम्माणरयस्स परिणामो।

लो धीवरो सेद्विसमीवं दीवारं महिता चिंतइ– एवं कम्म रविसमं विण्णवत्तणेण ए दीवारं जुंदे मुणेइ। सेट्ठिसमीवं रस्सायमाणस्स वस्स सुहो विचारो संजाओ। चिंतरेइ-जेण वि वम्पिमुंम कम्मसुं मम्म हिमारा भिव्वा, पक्स्स परिमासत्त पच्छाइ सम्मा भणिस्सइ। कासायवसमज्झविहिस्स एवं निमय वि कुउंचसियओ न होहिइ। कम्मावि कासायवसमज्झ धीवेंति तया पच्छमं मज्झमं रक्खणाय पुच्छण्णं तस्स वाभिमुहस्स किं न देमि ? त्ति चिंतारित्ता सव्वो मज्झ सरामि परिमारा तवस्सि समागओ। तस्स य वाणिसस्स दट्ठूमो परेण समराय पच्चाइ किमिवण्ण तवस्सि गओ। तस्स

कुडुंबवग्गो वि धण्णेहिं सहियं मिस्सं आगयं धीवरं पासित्ता पुच्छेइ– 'कुओ एयाइं अदिट्ठपुव्वाइं सुद्धधण्णाइं लद्धाइं' ति ? कहित्ता सो कुडुंबवग्गो कमेण धण्णकणे खाइउं पउत्तो। सुद्धदव्वाहारत्तणेण सव्वस्स सुहपरिणामो जाओ। तस्स भज्जा वि पुच्छइ– 'कुओ एयं लद्धं ?' । सो धीवरो कहेइ– केणावि सम्मिएण मम एगो दीणारो अप्पिओ। तत्थ एगेण रुप्पेण धण्णाइं आणीयाइं। अवसिट्ठा पण्णरस रुप्पगाइं संति। ताइं दट्ठूण धण्णकणभक्खणेण जायसुद्धभावा भज्जापुत्ताइणो कहिंति– एएहिं रुप्पगेहिं दुमास जाव कुडुंबनिव्वाहो होही। तओ एयं महापावकारणं निरयगइजीववहमच्छवहनिंदणिज्ज-जीवियं चइऊण निद्दोसकम्मणा वित्ती सिया तो अईव सोहणं। एवं सोच्चा सो धीवरो पावमइ वित्तिं चइत्ता निद्दोसवावारेण ववहरिउं लग्गो। एवं नायनिप्पण्णदव्वप्पहावेण एसो धीवरो सपरिवारो सुही जाओ। सत्ती वि नायदव्वेण धीवरस्स लाहं, अणीइदव्वाओ तवस्सिणो हाणिं दट्ठूण भोयनरिंदस्स अग्गओ सव्वं कहेइ। राया वि नायनिप्पण्णदव्वस्स पहावं नच्चा णायदव्वज्जणे पउणो जाओ। एवं सुहकंखिणा जणेण नायदव्वज्जणम्मि मइ सया पयट्टियव्व ति ॥

उवएसो–

नायं अन्नायदव्वस्स, फलं नच्चा सुहासुहं ।
'नायज्जणे पयट्टेज्जा जणा कल्लाणकंखिरा' ॥ ५२ ॥

नायज्जणोवरिं जिणदत्तस्स दुपन्नासइमी कहा समत्ता ॥ ५२ ॥

भावभत्तीए पुलिंदस्स कहा तिवण्णासइमी– ॥ ५३ ॥

दव्वभत्तिभराओ वि, भावभत्ती वरा मया ।
सिवभत्तिपरो विप्पो, पुलिंदो य नियसणं ॥ ५३ ॥

इह भरहे गउरीगिरी नाम महंतवित्थारो सेलो अत्थि। तस्स निहिम्मि उज्जाणमज्झे सनिहियपाडिहेरो सिवो नाम सुरो आसि।

तंमि पव्वयरे महओ पुलिंदा निवसंति । तत्थ एगो पुलिंदो सिवे देवे निच्चभत्तिसंजुओ पइदिवसं सिव देवं पूएइ आगच्छइ । सो वणप्फलाहारओ सच्चिवभत्तोणं कुसुमाई घेत्तूण सुद्धजलेणं सिव एवं भावेणा पूएइ । स देवो तस्स निव्वल भत्तीए संतुट्ठ समाय सह तं कुसलवत्तं सर्व परिपुच्छइ ।

सिवमग्गामवासी एगो विप्पो तत्थ आगंतूण तं सिव देवं पइदिवसं निव्वं आगच्छइ तत्थ निम्मलं ओसरेइ, निम्मल सलिलेण ण्हाणए भिन्नप्पसंपयप्पभिइगाढ भिण्णा सुगंधपुप्फेहिं पूयइ । तइ नाणाविहे आयरणेण महओ आगच्छंतो सिवमुणमे संकासं मुणेइ, नाणाविहपत्तेय तत्थ गाढ सव्वं मिलेवेतो पुलिंदेण सह संसारं कुणेइ । तओ सो चिंतइ– 'मम सिसिप्पओ निवणविवेगेहिं वच्चिओ अणुसवमाणं अत्थि ण्हामि एसो देवो एमओ पावय । अहो !' तस्स सिवदेवस्स अरण्णुओ विवेगो । किं घोरह, पव्विओ तं एव गुणवंत कुणइ कुवि । तं संमवा मि अणुसुणरि केयई परिचयम पवरपुप्फाइ इच्छइ, किं एत्थ घोयव्वं ? इच्चाई चिंतिऊण तम्मि पुलिंदे गए समाणे सो माहणो आगम्म पच्चूस सोमाइंमि सिवं भणेइ– 'हे देव ! किं एसो नाओ ? जं इह पुलिंदं तुमं सुपसाओ असि, किं मम भत्तिविसेसाओ एयस्स पुलिंदस्स पूआ अहिया ! किं गंधुसवाएण अतिसेयइ ण्हामि ! तव मेहत्त निवसिओ ?' । तु नाणं अरण्णे महमस तव पुलिंदरहिं देवं कुणेसि । अमजाणं भावाण एव ! आवयणं मं हसि, सिवेण्हं च सवच कुसलवत्तं सव्वं पुच्छसि' एवं सो वणाकंमं गाढमं एवसेओ जाओ । तओ 'अं पभीय दुक्खो वीओ सुणी होइ' ।

तओ सिवो एवं भणेइ– 'अमायपरमेसा अयं तं वा तं वा वयइ, तओ एसो पोढिमंता । तया सिवो देवा पमाए सतलीणं सव्वं वहिउं अइ ठिओ । अप्पणा आलिमं तं देवं पहूण अंजं य पयर

वएइ अ केण अहम्मिणा पाविट्ठेण मम देवस्स अच्छिविणासो हा हा !! कओ ? । तस्स हत्था गलतु, रोगायकेहिं अपसत्था हवतु इच्चाइ बहु पलविता सुवाणिक्कदेसे तुण्हिओ ठिओ ।

एत्थतरे पुलिंदो सरधणुहेहिं वावडकरग्गो जलपुण्णवयणकलसो तेनषण काउ समागओ । सो सिव देव काणच्छि पेच्छिऊण चिंतेइ हा हा !! कट्ठ कट्ठ देवस्स नयण इम नट्ठ । का देवे मह भत्ती ? को अणुरागो ?, को व बहुमाणो ?, हा हा ज देवो मम एगनयणो, मह दोण्णि नयणाइ, एय अजुत्त, तओ सो साहसोल्लसिओ सरेण नियनयण उक्खणेऊण देवनयणे ठवेइ । तओ सो देवो महुरगिराए त माहण जपेइ– 'ह माहणवर ! पेच्छसु पुलिंदस्सावि इमस्स बहुमाणभत्तिं अणुराग नयणप्पयाणपयडी, करत अतरग भाव च । बहुमाणकणयकसवट्टमि नियनयणसमप्पणेण सुपरिक्खियकल्लाणपरपरा दिण्णा होइ । जेण विइण्णा दिट्ठी तेण सव्व सोहग्गमहग्घय जीविय विइण्ण । तो एसो पुलिंदो वि हु विसेसविन्नाणवियलचित्तो वि ज दिढसत्तो रत्तो सुराण पि पसायजोग्गो सजाओ । मणुयाण निच्चडियकज्जसार सब्भाव जाणित्ता सव्वायरेण देवा वि सुपसन्ना समास दिंति । तो हे माहण ! एसो पुलिंदो सुरप्पसायस्स, अजोग्गो त्ति मा भण, तुमए वि भिट्टिदाणाओ ज एयस्स निम्मलसब्भावो जाणिओ । एव सिवदेवस्स वयण सोच्चा असहणो वि सो माहणो सिवदेवस्स वयणसुहाए सित्तो ईसाए रहिओ पसन्नचित्तो सिवदेव विन्नवेइ – ' हे देव ! तुम उद्दिसिऊण ज मए अविइअपरमत्थेण अन्नाणदोसाओ जपिय, त इण्हि तुच्छहिययस्स मज्झ खमियव्व ' एव वोत्तूण तस्स पाए पुणो पुणो नमइ । तओ सिवदेवेण तस्स पुलिंदस्स अप्पणो य दिव्वाए सत्तीए जहावत्थ नयण विहिय । एव नयणसुदर सुय- नाण धम्मपदे वियरताण विहिणा देय ॥

नायं विप्प-पुलिंदाणं मोक्खा उवायबोहगं ।
तहा ' अणेण उवाएण भावभत्ती सुनिम्मला ' ॥ ५१ ॥
भावभत्तीए पुलिंदस्स तिपण्णासइमी कहा समत्ता ॥ ५२ ॥



दव्वपूआए दुग्गयनारीए कहा चउपण्णासइमी- ॥ ५४ ॥

भावो वि दव्वपूआए सम्मासेवणपाययो ।
दिट्ठंतो दुग्गया नारी, जिणपूअणमाणसा ॥ ५४ ॥

एगया भयवंतो महावीरो गामाणुगामं विहरमाणो कायंदीए नयरीए समागओ । तत्थ उज्जाणे देवा समवसरणं कुणिंसु । समोसरणे उवविसित्ता चउमुहो सिरिमहावीरो सुर-नर-तिरिक्ख-परिसाए देसणं कुणइ । कम्मनिज्जरकारिणं भयवंतं सिरिवीरजिणं जगगुरुं सिरिवीरपहुस्स आगमणं सोच्चा सव्वो वि लोगो उज्जाणं आगच्छइ-- सो भो लोगा ! लोगालोगपयासगे केवल नाणदिवायरे सिरिवीरे भयवंते नयरीए उज्जाणे समवसरिए पच्चूसे जिणवंदणत्थं सामिगिहि वंदिउं वच्चिस्सइ, तओ तुम्हे वि भो सिग्घयरो वंदिउं एसेह त्ति । इमं उग्घोसणं नयरनिवासिणी आइच्चवयणदुलहा दरिद्दत्तणेण पाणीणं दुग्गयनारी वेरी सोच्चा चिंतेइ । दुग्गयाए किंचि दव्वं न वट्टइ तेणेव सव्वे सुहिया अम्हा । इह भवे वि किंचि दाणाइसुकयं न कयं, तेण परलोगे वि मज्झ दुहं चिय भविस्सइ ' त्ति । किंचि य सा कुसुमेहिं वि पूअं काउं भावं निम्मवइ जाव हरिसिया । तओ सा वि सिरिमहावीरं नमंसिउं सोच्चा सरणमुवगया दुग्गयत्तणस्स कम्मं निहणिस्सामि । पहुं एवं वण्णावणेण एवं भावं कयं कयं ? न जाणे

गन्धपत-विरसाण मोयणं मे भविस्सइ' त्ति चिन्तिन्ती निन्दइमणीयथट्ठिगीरिणो पामाग गहूण भट्टभार गिणिहत्ता गोरवइ समागया। तत्थ इ थयाग्गाइ परगाहिऊण चितइ – निरिमता जगा सपुप्फेहि झिणयर पूयति. 'मिरीण मत्थ मिण्णइ' मम तु नाइ गेंय, अओ अह मुगालबेमहि मिदुणारीं सुम्महुसुमेहि म्बथग्गु पूएम' तओ नईतीरे ठियाइ तुम्हगुप्फाइ उच्चिणिता मयचले संथडण तीरम्भ थट्टि अगाओ निगया। राया वि पच्चूस मयराम्ढो हय-गय-पाइक्का-णोगेहिं मण्डिओ मणिमह्दीए सिरिवीरवदणत्थं निग्गओ, तह य नगरलोगा सपरिवारा मालकार-विभूसिया निग्गया। जियारिनरिंदा पट्टमारमारिय धीरवंदणुक्कण्ठिय मणिय मणिय गच्छंति न दट्ठूण पमण्णमणो जाओ, तए नियमेणायई आरुढो – 'मा मम थेरिं का पि संदूज्जा'। अह सा दुग्गयनारिआ वद्धमाणसुम्मायाए वद्धमाणजिणीसर झायती समय-मरणदुवारमुवागया समाणा नयणसुहजण चउरुय चम्म दिमन सिरिमहावीर पेक्खेइ। सुरासुरनरिंदेहिं सेविज्जमाणं वीरपहु दट्ठूण रोमचंचियदेहा हरिससुपाविअनेत्ता झाएइ –

धण्णाऽहं कयपुण्णा हं, सुहगाऽहं च सव्वहा।
अज्ज फल च सपत्त, जम्मणो जीवियस्स य ॥
विस्सविस्सेसरो देवो, जं वीरो पासिओ मए।
वंदिस्स अच्चइस्सं त, धम्म सोच्छामि तम्मुहा ॥

इच्चाइ वद्धमुही झायती खलियपाया भूमीए पडिया, झीणाउसा अखिसुत्तसुहज्झाणा मरण पाविअ सोहम्मे देवो जाओ। जियारिनरिंदो भूमीए पडिय थेरिं दट्ठूण सुच्छिय मन्नमाणो जलेण त सिंचावित्था। निप्फदत्तणेण वियन्न नच्चा अमिणा सक्कार करावेसी। तओ समोसरणे पविसित्ता तिपयाहिण किच्चा नायउत्त महावीरं वंदेइ,

पच्छा मज्झ य साहुणो। तप्पभिइं तेसिपासम्मि अच्छसि। एत्थ चिरदिवसंमि एया पुच्छिस्सा। हे पहु! एसा मुद्धा मरिऊण कत्थ उप्पन्ना?। महाभंते आह – एसा पुण्णमाणी मरणं पाविता समं गया होत्ता। सोहम्मकप्पे पुण्णस्स जएण सम अभिमे ए समागम्मा तुम्ह पुरओ ठिआ संपइ वि विरायमाणे वस हे भारहा। पुणो वंदिऊण पुट्ठं – कप्पम्मि अप्पासेविअयस्स क एस्स केवलने क्या?। पहु आह – जिणपूआअणुमोअणाए एस नारी दिव्वं देविड्ढिं पत्ता। एवं सोऊणा भव्वजणा जिणपूआकरणे उज्जमा जाओ!' पुव्वाणुपुव्वीए वि महापहु ति वयइ। मयणं वि आह – भगवं पि सुरत्तविसप्पमुहमाणा अम्हाणं पच्छओ वेर जम्मा पुण्णमुक्कविपुण्णामुमाणाओ इमीए देवीए मुहमाणविक्कम मच्चविरुद्ध मुणेआ-भय नरीओणा पुमसुक्खंय समागमणा अणुमोअणा तओ चविऊ कणयपुरम्मि कणयप्पभा रण्णो देवी, अणस्समासम्स तस्स पउमोदय प्पाया मुक्कीमाय गब्भिअमाण इह वि पुरए, इह अवमाहेण निक्खमणस्स सिरिदेविअस्स कणयमुद्दपुरी एवं भावस्सइ – पालिअ पि पुण्णाणं पउमस्स ओमइ दिक्खिऊण एवं सामण्णा अप्पकम्मा आराहणं पाविस्सइ तओ तओ चविऊ पत्तगंधं गच्छिस्सइ, सिरिदेपार पालिऊ पव्वज्जा सव्वं गब्भिआविर तहा चउत्था पञ्चमाणमपीय अणुकं जम्मे पाविता पावकम्मेमि नेरइयं उप्पण्ण अप्पमत्तपरपेइए केवलणाणं पाविआ मोक्ख मोक्खसुहं पाविस्सइ। इय सिरिवीरजिणवरस्स वयणं साउ – अहो अम्हाणं माणुसं पि पोलोसिया कओ वीरपहुणो पासम्मि पावपरि पव्वाविऊणे ओमिऊणिपिणा। तओ पहुं नया सिरि सिरि सव्वं सम्मे गया। सिरिसम्मदसणवीरो वि अण्णत्थ विहरिआ।

नायं दुग्गयनारीए, वीरच्चाभावणोज्जलं ।
सोच्चा ' जिणच्चणे भव्वा ! उज्जमेह सुभत्तिओ ' ॥ ५४ ॥
दव्वपूआए दुग्गयनारीए चउपण्णासइमी कहा समत्ता
॥५४ ॥



साहुजणसंसग्गे नंदनाविअस्स कहा पणपण्णासइमी– ॥ ५५ ॥

सुसाहुजणसंसग्गो, कास नोन्नइकारगो ? ।
चोज्जं दुट्ठे वि तारेइ, नंदो एत्थ निदंसणं ॥ ५५ ॥

पुरा धम्मरुई नाम अणगारो गंगानईए नावमारूढो, नंदो नाम नाविओ भाडयं मग्गेइ । मुणी कहेइ– ' मुणीण नत्थि धणं ' । नंदो वएइ– ' मुण्डा ! जइ धणं नत्थि ता किं नावमारूढो ' ? । मुणी कहेइ– ' तुम धम्मो होही ' । नंदो साहेइ– ' अत्थेण मम कज्जं, न उ धम्मेण । तओ नंदेण विविहजायणाहिं उवसग्गिओ उवसमसागरो वि अणगारो तेउलेसाए तं दहेइ । सो मरिऊण कम्मि गामे सहाए घरकोइलो जाओ । धम्मरुई मुणी तं पावं आलोइयपडिक्कंतो पच्छातावजुओ विहरमाणो कमेण तम्मि गामे समागओ, जत्थ सो मुणी घरकोइलो । सो मुणी भिक्खं घेत्तूण तत्थ सहाए आगओ । तया सो गिरोलिओ पुव्वभववेरत्थदोसेण उवविट्ठस्स तस्स अणगारस्स उवरिं कयवरं खेवेइ । सो मुणी बीयकोणगे गओ, तत्थ वि गतूण एव सो कयवरं खेवइ, एवं सो पुणो पुणो कुणेइ, तया कुद्धेण तेण सो दड्ढो समाणो मयगतीराए हंसो जाओ । मुणी वि विहरंतो माहमासे कया तत्थ समागओ । नइं उत्तरित्ता इरियावहियं

धम्मकम्मेसु तस्स वि दासत्तं मा देमा मोक्खमग्ग तत्ततस्स करउ। सा अवे वि विणिया सा भयगओ ते पडउ। इमो महंतप संजयसम्माए मिणा आओ। घोरतवचरणकम्मनिज्जरणाए जो मुणी विहरमाणा तत्थ चेव समागओ। सा भिक्खं वि तं पाविया ते पायए मुणी वि न भिक्खं देतेम्माए एए। एवं अवसरसमरम्मि अयमनिद्दुमियकम्मसमा बासारत्तम्मि मासपसुत्ता आओ, कमेण बहुमाण कालेहिं सह व्वणा कीडेइ। सा मुणी धम्मस्स अवस्स बरसिरकम्मे परमे मग्गे आयओ कमम विहरिता बासारत्तम्मि बाहिरम्माने समागओ। विसम्मि नवर गव्वुणा तंप बहुस्स सिद्ध। तं मुणिवर पस्सम पुस्समणधम्मसाला योग्गपा वमणमंसा कमेविं सव ते सहस्स मंगेय उवसमाइ। मिच्छत्तं मम्म परिच्चइ सि मुणी तवंसं अणुगच्छेइ। मुणी आवि किं एसा भवजीवोत्ति विचारिता ते अदेइ। सो बहुओ दुक्खम्मकेसनिम्मरण मुक्खामयपरिवत्तंम बासारत्तम्मि विवो आओ। सा धम्मसई व धम्मं सप्पुरिसा के मोक्खधम्मं अणुसारमीणाणं कम्मसंघस्स कारणं न हुवि एवं चिंतमाणो सुवण्णवरसा दुक्खगरिहनिरयाण' उवपायकम्मस पाममणुभाव विसेइ। जओ उत्तं—

> मज्झम्मि वयहीणं परिणामवसा उवक्कमो भणिओ।
> पायमविरम्मयाणं तवसा उ निक्कमयाणं पि ॥

जाया सा मरिसो पायसम्मम्मि कीमि मुणिम्मि सिद्धे मार्दत्तणं जत्तो। जम्हा निवमरणेसु एस्स आरसमत्तो भणेइ अणं—

> संगाए नयिओ मेहा १, समाए परक्कमओ २।
> हंसो ममंगवीसाए ३ मीहो अंबयरम्माए ४ ॥ १ ॥
> बालारसीए वइओ ५, राया ६ एत्थ य सेसुओ।

सुसाहुजणसंसमो नेमसूरिवरस्स पज्जपण्णासग्गयी
कहा समत्ता ॥ ५५ ॥



पुण्णपाए सिरिगोडीपासजिणीसरस्स पसाए विक्कमस्स दोण्णि-
सेसि-सं-नेवेसवच्छरे आसाढपक्खजरिमे आयरियसि-
जयकत्थूरसूरिविरइयाए पाइअविण्णाणकहाए पढमो मागो समत्तो
॥ सिरी अत्थु सिवं होज्जा ॥

पसत्थि

इम सिरितवागच्छाहिव–सिरिकयंबप्पमुहाणेमतित्थोद्धारग
सासणप्पभावग-आबालबंभयारि सूरीसरसेहर आयरिय
विजयनेमिसूरीसर–पट्टालंकार–समयण्णु–संतमुत्ति-
आयरिअविजयविण्णाणसूरीसर-पट्टधर सिद्धंतमहो
दहि—पाइअभासाविसारयायरिय– विजय-
कत्थूरसूरिविरइयाए पाइअविण्णाणकहाए
पढमो भागो समत्तो ।





श्रीनमि-विज्ञान-ग्रन्थमालाना

नवा प्रकाशनो

१ श्रीअभिधानचिंतामणि कोषः — १ रु

मूलो'र्थाभिध गुर्जरभाषानुवादसहित । कर्ता

श्रीचतुर्विजयमुनिस्वशिष्यः । — कि. २५ न पै

३ श्रीजिनस्तोत्र संग्रह । — कि. १ रु.

४ श्रीनवस्मरण महादेव स्तोत्र । — कि. ७५ न पै.

५ श्रीपार्श्वजिनाष्ट कथा — कि. २ रु.

हवे पछीना प्रकाशनो

६ श्रीअभिधान चिंतामणि कोष
(सटीक मूलमात्र)

७ छन्दो रत्नमाला सटीकः

८ श्रीमद्हेमचन्द्राचार्य कृत ग्रन्थावली

९. श्रीवस्तुपालचरित्र